सूत्र ८.

अंग ८.

बाल ब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज कृत

हिन्दी भाषानुवाद सहित.

अंतगडदशांग सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता-दक्षिण हैदराबाद निवासी.

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौंहरी

अमूल्य.

प्रत १०००

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय सीकंदराबाद (दक्षिण.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी, जौहरी.

जन्म सं० १९२०. स्वर्गस्थ सं० १९७४.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

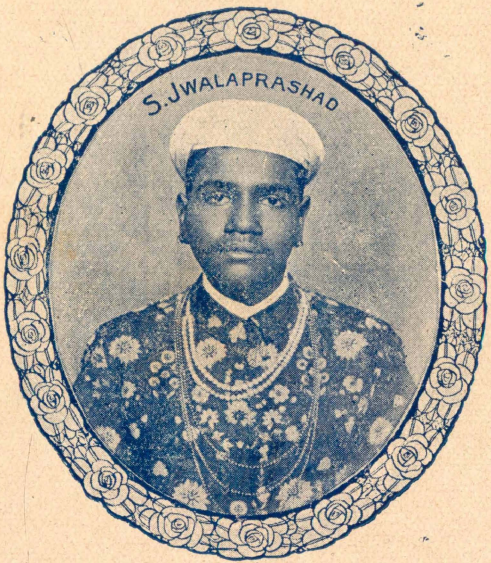

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौहरी.

जन्म सं० १९५०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्तकृत सूत्र की प्रस्तावना.

श्रीमाहावीर देवस्य, सद्गुरुरये नमस्कृत्य । अन्तकृतस्य सूत्रस्य, वार्तिकंकुरुते मया॥ १॥

श्रीमन्महावीर स्वामी जी को और सद्गुरु कों नमस्कार करके अन्तकृत दशांग शास्त्र के अर्थ का सुख से अवबोध होने के लिये हिन्दी अनुवाद करता हूं. सप्तमांग उपासक दशांग में श्रावकों की करणी फल का कथन किया, इस अष्टमांग मे साधु की उत्कृष्ट करणी के उत्कृष्ट फल का कथन किया जाता है. इस का नाम अन्तकृतदशांग है, जिन २ जीवोंने उत्कृष्ट तप संयमाचरण कर संसार का तथा कर्मों का अन्त कर के संसार के अन्त में रहा मोक्ष सुख की प्राप्ति की ऐसे.

महद्विकहासतीनां गौतम पद्मावतीपुरोगाणाम् ।
अधिकृतीसवान्त सुकृताः स्मरतोवैरन्तकृद्दशाः कृतिनः ॥ १ ॥

गौतमादि महर्षि और पद्मावती आदि महा सती, यों ९० संत सती पवित्रात्मा के चरित्र का कथन इस सूत्र में किया गया है. इस के ८ वर्ग और ९० अध्ययन हैं. इस का मुख्यता में उतारा तो श्रावक हरीलाल जी की पास से खेतसी जीवराज की तरफ से छपी हुइ प्रत से किया है और गौणता में मेरे पास की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दो मतों की सहायता ली है. बीच में अतिमुक्त मुनि का कथन भगवतीजी सूत्र में का अर्थ का उतारा कर पूर्ण किया है. और गजसुकुमालजी का अधिकार ज्ञाताजी के प्रथम अध्ययन के अनुसार सुधारा किया है. छद्मस्तता से दृष्टी दोष व. कुरूप सुधारे में बहुतसी अशुद्धीयों रहगइ है उसे सुधार कर पठन करने की कृपा कीजीये.

अन्तकृत सूत्र की-अनुक्रमणिका.

१ प्रथम वर्ग १० अध्ययन ... २
द्वारका नगरी का कृष्णजी की ऋद्धिका ४
गौतमकुमार के जन्मादि का ... ६
दीक्षा मोक्ष प्राप्ति समुच्चय ... ७
२ द्वितीय वर्ग ८ अध्ययन समुच्चय ... १०
३ तीसरा वर्ग १३ अध्ययन ... ११
छभ्रात साधुओं का ... १२
सातवा सारवकुमार का अध्ययन ... १४
आठवा गजसुकुमालजी का अध्ययन... १५
सुमुखकुमारादि के पांचो अध्ययन ... ५०
४ चौथा वर्ग १० अध्ययन ... ५२
५ पांचवा वर्ग १० अध्ययन ५४
कृष्णजी की ८ पटराणियों के ८ अ०
द्वारका दहन, कृष्णजी तीर्थंकर गोत्र ५५
मूलदत्तामूलश्री के दो अध्ययन ... ६८
६ षष्टम वर्ग-१६ अध्ययन ... ६९
मकाइ और विक्रम गाथापतिका ७०
तीसरा अर्जुनमाली का ... ७१
चौथे से चउदवे अध्ययन संक्षेप में ... ९१
पन्दरवा अध्ययन अतिमुक्त कुमार ... ९२
सोलवा अध्ययन अलखराज का ... १०४

७ वर्ग १३ अध्ययन श्रेणिकराजा की
१३ राणी के ... १०५
८ वर्ग-१० अध्ययन ...
१ कालीरानीने रत्नावली तप ... १०७
२ सुकाली रानी का कनकावली तप ... ११६
३ महाकाली रानी लघुसिंह क्रीडा तप ... ११८
४ कृष्णाराणी वृद्धसिंहा क्रीडा तप ... १२०
५ सुकृष्णारानी भिक्षु की प्रतिमा ... १२१
६ महाकृष्णारानी लघुसर्वोतम भद्र तप ... १२४
७ वीरकृष्णा रानी महासर्वोतभद्र तप ... १२७
८ रामकृष्णारानी भद्रोत्तर प्रतिमा ... १३०
९ प्रियसेनकृष्णारानी मुक्तावली तप ... १३२
१० महासेन कृष्णारानी आयंबिलवृर्धमान १३५

☞ परम पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज की सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिन्दी भाषानुवाद किया, उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतो कों सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सब को अमूल्य लाभ दिया है.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गिय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिशु-अमोल ऋषि

उपकारी-महात्मा

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे.

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुओ हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बदल उक्त मुनिवरों का भी बड़ा उपकार है.

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवीवर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी. पं. श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी. प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी. गुणज्ञ-सतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा-लाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

आवश्यकीय सूचना

झोबाला (काठियावाड) निवासी मणीलाल शीवलाल जो शास्त्रोद्धार कार्यालय का मेनेजर था और जो शास्त्रोद्धार जैसे महा उपकारी और धार्मीक कार्य के हिसाब को संतोष जनक और विश्वाशनीय ढंग से नहीं समझा सकने के सबब से हमको पूर्णा अविश्वाश हो गया और आपखुद घबरा कर बिना इजाजत एक दम चलागया इस लिये जो प्रेस अखबार और धार्मीक कार्य के लिये मणीलाल को देना चाहाथा वो उसकी अप्रमाणिकता और घोटाला देखकर उस को नहीं देते हुवे आग्रा निवासी जैन पथप्रदर्शक मासिक के प्रसिद्ध कर्ता बबू पदम सिंघ जैनको धार्मिक कार्य निमित्त दिया गया है सर्व सज्जन उस अखबार से फायदा उठावें

ज्वाला प्रसाद

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अष्टम्-अंतगड दशाङ्ग-सूत्रम् ॥

॥ प्रथम-वर्ग ॥

सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाएनामं णयरीहोत्था, पुण्णभद्दचेइए, वण्णसंडे ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मेथेरे समोसरीए, परिसाणिगया जाव पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबुणामं अणगारे जाव

अर्थ

उसे काल उस समय में चम्पा नामक नगरी थी, तहां ईशान कौन में पूर्णभद्र चैत्य बगीचा था ॥ १ ॥ उस काल उस समय में आर्य सौधर्मा स्वामीजी पधारे, परिषदा आइ, यावत् धर्मकथा श्रवण कर पीछी गइ ॥ २ ॥ उस काल उस समय में आर्य सौधर्म स्वामी के शिष्य आर्य जम्बू नामक अनगार यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पज्जुवासंति, एवं वयासी-जइणं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं आदिकरेणं जाव संपेताणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ अट्ठमस्सणं भंते अंगस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबु ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठवग्गा पण्णत्ता॥ २॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठवग्गा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कतिय अज्झयणा पण्णत्ता ? एव खलु जंबु समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं

अर्थ

पर्युपासना-सेवा करते हुवे यों बोले-यदि अहो भगवान्! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी धर्मकी आदी के करता यावत् मुक्ति पधारे उनोंने सातवा अंग उपाशक दशा का उक्त अर्थ कहा वह मैंने श्रवण किया, अब आगे आठवा अंग अंतकृत दशांग का श्रमण यावत् मुक्ति को प्राप्त हुवे उनोंने क्या अर्थ कहा ? यों निश्चय हे जम्बू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने आठवा अंग अंतकृत दशा के आठवर्ग कहे हैं ॥ ३ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने आठवे अंग अंतगड दशा के आठ वर्ग कहे हैं, तो अहो भगवन् ! प्रथम वर्ग के कितने अध्ययन कहे हैं ? यों निश्चय, हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने आठवा अंग अंतगड दशा,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा- गोयमे, समुद्दे, सागर, गंभीर चेव, होइत्थितेय ॥ अचले, कपिले, खलु अखोभ, पसेणइ विण्हूए ॥ १ ॥ ४ ॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतिनामं नयरीहोत्था, दुवालसंजोयणायामा, नवजोयणंविच्छिन्ना, धणवत्तिमत्तिणिमत्ता, चामिकर पागारणिमिया, णाणामणि पं-

अर्थ

के दश अध्ययन कहे उन के नाम-१ गौतमकुमार का, २ समुद्रकुमार का, ३ सागरकुमार का, ४ गंभीरकुमार का, ५ थिमितकुमार का, ६ अचलकुमार का, ७ कपिलकुमार का, ८ अक्षोभकुमार का, ९ प्रसेन कुमार का और १० विष्णू कुमार का ॥ ४ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने अंतकृत दशांग के प्रथम वर्ग के दश अध्यन कहे हैं, उस में का प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारका नामक नगरी थी. वह बारे योजन की लम्बी और नव योजन की चौडी थी, उस नगरी के धनेन्द्र देवने बनाइ थी. इसके फिरता चारों तरफ सुवर्णका गढ-कोट था, वह प्रकार (कोट) अनेक प्रकारके मणिरत्नों के पांच वर्णमय कंगूरे करमंडित था, वह नगरी अलकापुरी (देवता की नगरी) जैसी थी, उस में रहने-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भवणा कविसीसगमंडिया, सुरम्मा, अलकापुरिसंकासा, पमुदिय पक्कीलिया, पच्चक्ख-देवलोगभूया, पासादिया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ ५ ॥ तीसेणं बारवातिय णयरिए बहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसिभाए एत्थणं रेवते नामं पव्वत्ते होत्था वण्णओ ॥ ६ ॥ तत्थणं रेवते पव्वत्ते णंदणवणे नामं उज्जाणेहोत्था वण्णओ ॥ ७ ॥ सुरपिए नामं जक्खस्स जक्खायतणे होत्था; पोराणे सेण एगेणं वणसंडेणं, आसोगवरपायवे, पुढविसिला पट्टए ॥८॥ तत्थणं बारवती एणयरीए कण्हे णामं वासुदेवेराया परिवसइ,

अर्थ

वाले लोक सदैव प्रमुदित—हर्षवन्त थे, वह नगरी एक क्रीडा करने के स्थान जैसी मनोरम्य थी, प्रत्यक्ष—साक्षात् देवलोक जैसी थी, चित्त को प्रसन्न करनेवाली, देखने योग्य, अभीरूप प्रतिरूप थी ॥ ५ ॥ उस द्वारका नगरी के बाहिर उत्तर पूर्व दिशा के मध्य ईशान कौन में यहां रेवती नाम का पर्वत था, वह भी वर्णन करने योग्य था, ॥ ६ ॥ उस रेवती पर्वत के पास नन्दन बन नाम का उद्यान था, वह भी वर्णन करने योग्य था ॥ ७ ॥ तहां सुरप्रिय नाम के यक्ष का यक्षायतन (देवालय) था, वह बहुत पुराना था, एक बनखण्ड—बगीचे कर वेष्टित था, उस के मध्य आशोक वृक्ष था वह सुशोभित था, उस के नीचे पृथ्वी सिलापट्ट था ॥ ८ ॥ तहां द्वारका नगरी में कृष्ण नाम के वासुदेव राजा राज्य करते थे, वे महा राजा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

महता रायवण्णतो ॥ ९ ॥ तेणं तत्थसमुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हंदसाराणं, बल-देवपामोक्खाणं पंचण्हमहावीराणं, पज्जुणपामोक्खाणं अहुट्ठाणंकुमारकोडीणं, सांबपामोक्खाणं, सट्ठिए दुदंत साहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं छप्पणाएबलवग्ग साहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हराय सहस्सेणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्णंदेवीसहस्सिणं, अनंगसेणं पामोक्खाणं अणेगाणंगणया साहस्सीणं. अण्णासिंच बहुणं राईसर जुव सत्थवाहप्पभित्तिए बारवत्तिए णयरीए अद्धभरहस्सयसमंतस्स आहेवच्चं जाव विहरइ ॥१०॥

अर्थ

ओं के उत्तम गुण युक्त वर्णन करने योग्य थे ॥ ९ ॥ उन के वहां—१ समुद्र विजय, २ अक्षोभ, ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवन्त, ६ अचल, ७ धरन, ८ पूरन, ९ अभीचन्द्र और १० वासुदेव यह दशों ही दसार, सर्व पुरुषों में साररूप थे. बलदेव प्रमुख पांच महावीर थे, प्रद्युम्न प्रमुख अउट क्रोड (३॥ क्रोड) कुमार थे, सांब प्रमुख साठ हजार दुर्दन्त थे, महासेन प्रमुख छप्पन्न हजार बलवन्त पुरुष थे, वीरसेन प्रमुख इक्कीस हजार वीरों थे, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार मुकुट बन्ध [देशाधिपति] राजाओं थे, रुक्मनी प्रमुख सोलह हजार रानीयों थी. अनंगसेना प्रमुख अनेक हजार वेश्याओं थी, इन सिवाय और भी बहुत से सामान्य राजाओं, ईश्वरों, युवराजाओं, सार्थवाहियों, यावत् प्रभृतिक और द्वारका नगरी आधा भरतक्षेत्र

सूत्र

तत्थणं बारवतिए णयरीए अंधगवण्हिणामं राया परिवसइ, महत्ताहिमवंत ॥ ११ ॥ तस्सणं अंधगवण्हिस्सरण्णो धारिणीणामं देवीहोत्था वण्णओ ॥ १२ ॥ तएणं सा धारिणीदेवी अण्णयाकयाइं तंसि तारिसयंसि सयणिज्जसि एवं जहा महबलोए सुमिणं दसणं, जम्म, बालत्तणं, कलाओय, जोव्वणं, पाणीगहणं, कणा, पासादभोगय, णवरं गोतम कुमारे णामे, अट्ठण्हरायावर कणगाणं एगादिवसेणं पाणीगिण्हावेति, अट्ठट्ठउ-दाओ ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आदिकर जाव विहरत्ति

अर्थ

का अधिपतिपना करते हुवे यावत् विचरते थे ॥ १० ॥ तहां द्वारका नगरी में अन्धकविष्णु नाम के राजा रहते थे वे महा हिमवन्त पर्वत समान वर्णन योग्य थे ॥ ११ ॥ उन अन्धकविष्णु राजा के धारणी नाम की राणी थी वह भी वर्णन करने योग्य थी ॥ १२ ॥ वह धारणी राणी अन्यदा किसी वक्त पुण्य-वन्त के शयन करने योग्य शैय्या में सूती हुइ सिंह का स्वप्न देखा. यों आगे का सब कथन भगवती सूत्र में महा बल कुमार का कहा है वैसा ही सब कहना, स्वप्न का, स्वप्नपाठक को पूछने का, जन्म का, जन्मोत्सव का, बाल्यावस्था का, कलाशिक्षण का, यौवन अवस्था प्राप्त होने का, पानी ग्रहण का, कन्या की संख्या का, भोग भोगवने का सब कथन महाबल कुमार जैसे कहदेना. जिस में इतना विशेष—इन का गौतम कुमार नाम दिया, आठ कन्या प्रधान राजाओं की साथ एक दिन पानी ग्रहण कराया, आठ २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

॥१४॥ चउविहादेवा आगता कण्हाविणिग्गते,॥१५॥ ततेणं तस्स गोतमस्स कुमारस्स जहामेहे तहा णिगच्चे, धम्मं सोच्चा, णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं अंतिए, एवं जहा मेहे जाव अणगारेजाए, इरियासमिते जाव इणमेव णिग्गंथे पावयणे पुरतोकाओ विहरंति ॥ १६ ॥ ततेणं से गोतमे अणगारे अन्नया कयाई अरहा अरिट्ठ नेमीस्स तहा रूवाणं थेराणं अंतिए सामाइमादियाइं, इक्कारस्स अंगाइ अहिज्जइ २ त्ता, बहुचउत्थ जाव भावेमाणे विहरंति ॥ १७ ॥ ततेणं अरहा

अर्थ

दात दायजे में दी ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ धर्म की आदि के करता यावत् मोक्ष के अभिलाषी पूर्वानुपूर्व चलते यावत् द्वारका नगरी के बाहिर नन्दन वन उद्यान में तप संयम से आत्मा भावते हुवे विचरने लगे॥ १४ ॥ चारों प्रकार के देवता, देवीओं और कृष्णवासुदेव आदि दर्शनार्थ आये ॥ १५ ॥ जब गौतम कुमार भी ज्ञाता सूत्र में कहे हुवे मेघकुमार के जैसे आये धर्मकथा सुनी, वैराग्य प्राप्त हुवा, माता पिता से चरचा की, दीक्षा औत्सव यावत् दीक्षा धारन कर अनगार हुवे. ईर्यासमिती यावत् निर्ग्रन्थ के प्रवचन को आगे करके विचरने लगे ॥ १६ ॥ तब गौतम अनगार अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के शिष्य तथारूप स्थविर भगवंत के पास सामायिकादि इग्यारे अंग पढ, पढकर बहुत उपवास बेले आदि तप करते अपनी आत्मा को भावते विचरने लगे ॥ १७ ॥ तब अरिहंत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अरिट्ठनेमी अन्नयाकयाइ बारवती नगरी तो नंदणवणातो पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवय विहारं विहरति ॥ १८ ॥ ततेणं से गोतमे अणगारे अन्नयकयाइ जेणेव अरह अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, अरहा अरिट्ठनेमी तिक्खूत्तो आयाहिणं पयाहिणं वदति तमंसति एवं वयासी-इच्छामिणं भंते ! तुब्भेही अब्भणुणायसमाणे मासियं भिक्खू पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं जहा खंदए, तहा बारस्स भिक्खू पडियाओ फासेति ॥ गुणरयणंपि तबोकम्मं तहेव फासेति णिरवसेसं एवं जहा खंदओ तहा चेतेति, तहा आपुच्छति, तहा थेरोहिं कडाहिएहिं सद्धिं सितुजे दुरुहति

अर्थ

अरिष्ट नेमीनाथ अन्यदा किसी वक्त द्वारका नगरी के नन्दनवन उद्यान से निकलकर बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ १८ ॥ तब गौतम अनगार अन्यदा किसी वक्त जहां अर्हन्त अरिष्टनेमी नाथ थे तहां आये आकर अर्हन्त अरिष्टनेमी नाथजी को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावत् फिराकर वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कारकर यों कहने लगे अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होतो, मैं चाहातहूं कि एक महीने की भिक्षुकी प्रतिमा अंगीकार कर विचरूं ?, यों जिस प्रकार भगवती सूत्र में खंधजी के अधिकार में कहा है उस ही प्रकार बारेही भिक्षुकी प्रतिमा की स्पर्शना की और गुनरत्न संवत्सर तपकी भी तैसे ही स्पर्शना की सर्व कथन जैसे खंदकजी तेके तपका कहा है तैसा ही निर्विशेष कहना कहा

सूत्र

मासियाए सलेहणाए बारस्स वरिस्साइं परियाओ जाव सिद्धे ॥ १९ ॥ एवं खलु ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगउदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ २० ॥ १ ॥ १ ॥ * एवं जहा गोतमो तहासेसा-अंधयविण्हिपिता, धारिणीमाता, समुद्दे, सागरे, गंभीरे, थिमित्ते, अयले, कपिले, अक्खोभे, पसेणइ, विण्हए, एगामो, ॥ इति पढमो वग्गो दसज्झयणं सम्मत्तं ॥ पढमो वग्गो सम्मत्तं ॥ १ ॥ + + +

अर्थ

तैसे ही भगवंत को पूछकर कडाइये (संथारे में सहायक) स्थविरों के साथ शत्रुजय पर्वतपर चढकर एक महिने की सलेषनाकर बारह वर्ष संयम पाल यावत् सिद्ध हुवे ॥ १९ ॥ यों निश्चय हेजंबू ! श्रमण भगवंतने अष्टमांग अंतकृत दशांग के प्रथम वर्ग के प्रथम अध्याय का यह अर्थ कहा ॥ २० ॥ इति प्रथमोध्याय ॥ १ ॥ १ यों जिस प्रकार गौतकुमार का अधिकार कहा उस ही प्रकार शेष नवहीं कुमरों के नव अध्याय कहना, नव ही के अन्धक विष्णुजी पिता, धारणी राणी माता और समुद्रकुमार, २ सागर, ३ गंभीर ४ स्थिति मित, ५ अचल ६ कपिल, ७ अक्षोभ ८ प्रशेन जीत, और ९ विष्णु यह नाम. इन सबका एकसाही गमा जानना, सब बारा वर्ष संयम पाल शत्रुजय पर्वपर एक मासकी सलेषना से सिद्ध हुवे ॥ इति प्रथम वर्ग के दश ही अध्याय समाप्त ॥ प्रथम वर्ग समाप्त ॥ १ ॥ + +

॥ द्वितीय-वर्ग ॥

सूत्र

जति दोच्चस्सवग्गस्स उक्खेवओ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतीनयरिए, विण्हिपित्ता, धारिणीमाता, ॥ अक्खोभ,सागर, खलु, समुद्द, । हिमवंते,अचलनामेय॥ धरणेय पूरणेय। अभिचंदे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ जहा पढमवग्गे तहा सव्वे अज्झयणा,गुणरयणं तवो कम्मं,सोलस्सवासाइ परियाओ, सेतुजे मासीयाए संलेहणाए सिद्धा ॥ अट्ठज्झयणा सम्मत्तं ॥ २ ॥ ८ ॥ इतिबिउवग्गो + +

अर्थ

यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में द्वारका नामकी नगरी थी, अन्धक विष्णुजी पिता, धारणी माता, जिनके पुत्रोंके नाम-१ अक्षोभ, २ सागर, ३ समुद्र विजय, ४ हिमवंत, ५ अचल, ६ धरण, ७ पूरण, और ८ अभिचंद. यह अठोंही पुत्र इनका सर्व कथन जैसा प्रथम वर्ग में गौतम कुमार का कहा तैसाही कहदेना, इनोंने भी गुणरत्न संवत्सर तपकिया, सोलह वर्ष साधु की पर्याय का पालन किया, शत्रुजय पर्वतपर एक महीने की सलेषना करके सिद्धगति को प्राप्त हुवे ॥ इति दूसरे वर्ग के आठ अध्याय समाप्त ॥ २ ॥ ८ ॥ इति दूसरा वर्ग समाप्तम् ॥ २ ॥ × × ×

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ तृतीय-वर्ग ॥

सूत्र

जति तच्चस्स उक्खेवओ ॥ एवं खलु जंबू ! अट्ठमस्स अंगरस्स तच्चस्स वग्गस्स तेरे अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा- अणीयसेण, अणंतसेणय; अजियसेण, अणिहयरिउ ॥ देवसेण, सतुसेण, सारणे, गए, सुमुहे, दुमुहे ॥ कुवए, दारुए, अणाहिट्ठे ॥ १ ॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ २ ॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णामं

अर्थ

यदि तीसरा वर्ग का उक्षेप ॥ यों निश्चय हे जम्बू ! आठवे अंग अंतकृत दशा के तीसरे वर्ग के तेरे अध्यायन कहे है, उनके नाम-१ अणियसेन कुमार का,२ अनन्तसेण कुमार का,३ अजितसेण कुमार का,४ अनिहतरिपु,कुमार५देवसेन,कुमार६शत्रुसेण, कुमार७ सारण कुमार ८गजसुकुमाल, ९सुमुख,का१०दुमुख, का ११कुवेर,१२दारुक, और१३अनादिठीसेन कुमार का॥१॥ यदि अहो भगवान! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोनें अंत कृत दशांग के तीसरे वर्ग के तेरे अध्यायन कहे तो अहो भगवान उस में से प्रथम अध्यायन का क्या अर्थ कहा है ? ॥ २ ॥ यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में भद्दिल पुरनाम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

नयरे होत्था वण्णओ ॥ ३ ॥ तस्सणं भद्दिलपुर णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए सिरिवणे णामं उज्जाणे होत्था वण्णओ ॥ ४ ॥ जिसत्तुणामं रायाहोता ॥ ५ ॥ तत्थणं भद्दिलपुरे नयरे नागनामं गाहावइ परिवसइ अड्ढा जाव अपरिभूए ॥ ६ ॥ तस्सणं नागस्स गाहवइस्स सुलसानामं भारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा ॥ ७ ॥ तस्सणं नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तते अनियसेण नामे कुमार होत्था? सुकुमाल जाव सुरूव,पंचधाति परिक्खित्ते तंजहा-खीरधाइ

अर्थ

का नगर वर्णन करने योग्य था ॥ ३ ॥ उस भद्दिलपुर नगर के बाहिर ईशान कौन में श्रीवन नाम का उद्यान था वरणन याग्य ॥ ४ ॥ वहां जित शत्रुनाम का राजा रान करता था ॥ ५ ॥ उस भद्दिल पुरनगर में नाग नामक गाथापति रहता है, वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवितथा ॥ ६ ॥ उस नाग नामा गाथापति, के सुलसा नाम की भारिया थी, वह शरीर की सकुमाल और सुरूपवतीथी ॥ १ ॥ उस नाग गाथापति का पुत्र सुलसा का आत्मज अनिकसेन नाम का कुमार था वह सुकुमाल और सुरूप था, पांच धायकर के परिवरा हुवा, उन के नाम१क्षीर (दुधपिलाने वाली) धायमाता,२स्नान कराने वाली,३ सिनगार कराने वाली ४ गोदी में खिलाने वाली और बाहिर क्रीडा कराने वाली, इन पंचों धाइयों के परिवार से परिवरा हुवा उवावाइ सूत्र में कहा द्रढ प्रतिज्ञ कुमार के जैसा यावत् जैसे पर्वत की कंदरा में मालतीका बृक्ष चम्पाका बृक्ष

सूत्र

जहादढपइण्णे, जाव गिरिकंदर मल्लीणेव चंपगवरपायवे सुहं सुहेणं परिवड्ढते ॥ ८ ॥ तेणं तस्स अणियसेणकुमारे सातिरेगा अट्ठवासजात्तं जाणित्ता अम्मापियरो कलायारियाओ जाव भोग समत्थे जाते यावि होत्था ॥ ९ ॥ ततेणं से अणियसेणकुमारे उमुक्कबालभावं जाणित्ता अम्मापियरो सरीसयाणं जाव बत्तीसाए इब्भवरकणगाणं एगदिवसेणं पाणीगिण्हावेति ॥ १० ॥ ततेणं से णागगाहावइ अणियसेणकुमारस्स इमे एयारूवं पिइदाणंदलयति-बत्तिसंहिरण्णकोडीओ जहा महाबलस्स जाव उप्पियपासाय फुट्टमाणे विहरंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समयएणं अरहा

अर्थ

सुख सुख में बृद्धि पाता है त्यों कुमर भी सुख सुख से बृद्धि पाता है ॥ ८ ॥ तब वह अनिकसेन कुमार कुछ अधिक आठ वर्षका हुवा भोग भोगवने समर्थ बना ॥ ९ ॥ तब अनिकसेन कुमार के माता पिता अनिकसेन कुमार को यौवन वय प्राप्त हुवा जान अनिकसेन कुमार के जैसी वयवाली रूपवाली ईभपति शेठ (गजांत लक्ष्मी धारक)की आठकन्या एकही दिन पानीग्रहण कराया॥१०॥ तब वह नाग गाथापति अनिकसेन कुमारको इस प्रकार प्रीतिदान देने लगा—बत्तीस क्रोड हिरण्य इत्यादि जैसे महाबल कुमार के दायचे का अधिकार भगवती सूत्र में कहा है उसही प्रकार यहां भी बत्तीस प्रकार के एक सो आठणवे बोल का दायचा दिया, यावत् प्रसादों में मृदंग के सिर फूटते हुवे पंचेन्द्रिय के सुख भोगवते विचरते हैं ॥ ११ ॥ उस काल उस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अरिट्ठनेमी जाव समोसढे सिरिवण उज्जाणे अहा जाव विहरंति ॥ १२ ॥ परिसाणिग्गया ॥ १३ ॥ ततेणं तस्स अणियसेण कुमारस्स जहा गोयमे तहा णवरं सामाइइयमाइयाइं चउदस्स पुव्वाइं अहिज्जइ॥तस्स वीसवासाइं परियाइं सेसं तहेव सेतुंजेपव्वाए मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे ॥ १४ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ १५ ॥ एवं जहा अणियसेणं, एवं सेसावि अणंतसेण, अजियसेण, अणि-

अर्थ

समय में आरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ यावत् श्रीवन उद्यान में समवसरे, यथा उचित्त अवग्रह ग्रहण कर विचरने लगे ॥ १२ ॥ परिषदा आई ॥ १३ ॥ तब वह अनिकसेन कुमार भी जिस प्रकार गौतम कुमार आया था उस ही प्रकार दर्शनार्थ आया, धर्म श्रवण किया, दीक्षा धारण की, इतना विशेष इनोंने चौदह पूर्व का ज्ञान ग्रहण किया, बीस वर्ष संयम पाला, और शेष अधिकार तैसे ही यावत् शत्रुंजय पर्वत पर संथारा करके सिद्ध बुद्ध मुक्त हुवे सर्व दुःख का अन्त किया ॥ १४ ॥ यों निश्चय है. हे जम्बू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी मुक्ति पधारे उनोंने तीसरे वर्ग के प्रथम अध्ययन का इस प्रकार का अर्थ कहा ॥१५॥ इति प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥ १ ॥ जिस प्रकार अनिकसेन कुमार का अधिकार कहा, इस ही प्रकार शेष अनंतसेन, अजितसेन, अहितारिपु, देवसेन और शत्रुसेन इन पांचों का अधिकार कहना, सब के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

हियरिउ, देवसेणे, सतुसेण. छे अज्झयणा एगगमो ॥ बत्तिसंतो दत्तो ॥वीसं वासाइ परियायतो, चउद्दस्स पुव्वाइं सत्तुज्जेसिद्धा ॥ छट्ठ मज्झयणा सम्मत्ता ॥ ३ ॥ ६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारावतिए णयरिए जहा पढमं, णवरं वसुदेव धारिणीदेवी, सीहसुमिणे, सारणे कुमारे, पणासंतादातो, चउदस्सपुव्वा, वीसवासा परियायतो॥ सेसं जहा गोतमस्स, जाव सेतुज्जेसिद्धे ॥ सत्तमज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ७ ॥ *

जत्ति उक्खेवो अट्ठमस्स-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारावतिए

अर्थ

नाग गाथापति पिता, सुलसा माता, बत्तीस २ स्त्रीयों, बत्तीस २ दानका दायचा, बीस वर्षकी दिक्षा यावत् शत्रुजय पर सिद्ध बुद्ध हो मुक्ति गये ॥ इति तीसरे वर्ग का छठा अध्याय संपूर्णम् ॥ ३ ॥ ६ ॥ उस काल उस समय में द्वारका नाम की नगरी थी, और सब अधिकार प्रथम अध्ययन जैसा ही जानना, इतना विशेष—वासुदेव राजा पिता, धारणी देवी माता, सिंह का स्वप्न देखा, सारण नामक कुमार हुवा पांच से कन्य के साथ एक दिन पानी ग्रहण कराया, पांच सो २ दात दी, शेष सब अधिकार गौतम कुमार जैसा जानना. यावत् शत्रुजय पर्वत पर एक महिने के संथारे से सिद्ध बुद्ध मुक्त हुवे ॥ इति सातवा अध्ययन संपूर्णम् ॥ ३ ॥ ७ ॥ यदि आठवा अध्ययन का उक्षेप. यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समयमें द्वारका नाम की नगरी थी, इस का वर्णन जैसा प्रथम अध्ययन में कहा वैसा यहां भी जानना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णयरिए, जहा पढमो जाव अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहतो अरिट्ठनेमीस्स अंतेवासी छप्पिअणगारा भायरा सहोदराहोत्था, सरिस्सया-सरित्तया, सरिव्वया, नीलुप्पल गवलगुलीय अयसिकुसुमप्पगासा, सिरिवछंकित्तवत्था, कुसुम कुंडला भद्दलया, नलकुमरंसमाणा ॥ २ ॥ ततेणं छ अणगारा जंचेव दिवसं मुण्डभवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइया, तंचेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वंदिता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामीणं भंते ! तुब्भेहि अभणुणायासमाणा जाव जीवाए छट्ठ छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं संजमेणं तवसा

अर्थ

यावत् अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथजी पधारे वहां तक कहदेना ॥ १ ॥ उस काल उस समय में अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथजी के शिष्य समीप्य रहनेवाले छ अनगार साधु सगे भ्रात, एक ही उदर से उत्पन्न हुवे, दिखने में एक से, शरीर की त्वचा, [चमडी] का रंग एकसा, सरीखी वय के धारक (देखाते हैं) नीलो त्पल कमल मेंढकाशृंग गुली का रंग अलसी के फूल जैसा प्रकाशवान् शरीर के धारक, श्रीवच्छ स्वस्तिक अंकित हृदय के धारक, फूल के पुट पांखडी के जैसा सुकोमल अंग के धारक, नल कुबेर-धनदत्त देव समान देखाते थे ॥ २ ॥ वे छेही अनगार जिस दिन मुण्डित हुवे थे, उस दिन अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार की, वंदना नमस्कार करके यों कहने लगे, अहो भगवन् ! हम चहाते हैं, जो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अप्पाणं भाव माणाविहिरए ? अहा सुहंदेवाणुप्पिया ! मापडिबंधंकरेह ॥ ३ ॥ तत्तेणं ते छअणगारा अरहा अरिट्ठनेमीणं अब्भणुणाया समाणा जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरति ॥ ४ ॥ तत्तेणं ते छअणगारा अण्णयाकयाइ छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसी सज्झायं करेति, जहा गोतमसामी जाव इच्छामिणं भंते ! छट्ठक्खमणस्स पारणाए तुब्भेहिं अब्भणुणाय समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवति नगरीए

अर्थ

आपकी आज्ञा हो तो जावजीव पर्यन्त छठ २ (बेले २) निरन्तर तप कर्म कर संयम तप कर अपनी आत्मा को भावते विचरे ? भगवन्तने कहा—जैसे सुख होवे वैसे करो प्रतिबन्ध (विलम्ब) मत करे ॥३॥ तब छेही अनगार साधु अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथजी की आज्ञा से जावजीव पर्यन्त बेले २ तप कर्म कर आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ तब वे छेही अनगार अन्यदा किसी वक्त छठखमन (बेले) का पारना आया, उसदिन के प्रथम पहर में स्वाध्याय की, दूसरे पहरमें ध्यान किया, तीसरे पहरमें मुहपति पात्रादि की प्रतिलेखना की, जिस प्रकार गौतम स्वामीजी श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी की आज्ञा ग्रहणकर गौचरी जानेका कथनचला है उसही प्रकार वे छही अनगार भी अरिहंत अरिष्टनेमीनाथ भगवंत की आज्ञा ग्रहण करते बोले कि अहो भगवान ! दो साधुका एकसंघाडा, ऐसे छ साधुके तीनसंघाडेकर अलगर

सूत्र

जाव अडितते ? अहासुहं ॥ ५ ॥ ततेणं छअणगारा अरहा अरिट्ठणेमीणा अब्भणुणायासमाणा अरहं अरिट्ठनेमी वंदंति नमंसंति, अरहा अरिट्ठणेमिस्स अंतियातो सहसंबवणातो पडिणिक्खमइ २ त्ता तिहिं संघाडिएहिं अतुरिए जाव अडंति ॥६॥ तत्थणं एगं संघाडए बारवात्तिए नयरीए उच्च नीय मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाते अडमाणे वसुदेवस्सरन्ना देवतीए देवीएगिहं अणुपविट्ठे ॥ ७ ॥ तत्तेणं सादेवत्तिए देवीए तेअणगारे एजमाणे पासंति पासईत्ता हट्ठ जाव हियया, आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सत्तट्ठपदा अणुगच्छइ २ त्ता तिक्खूत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति २ त्ता

अर्थ

कर भिक्षार्थ द्वार का नगरी में फिरें? तब भगवन्तने कहा यथासुख ॥ ५ ॥ तब छहीं अनगार अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथजी की आज्ञा प्राप्त होते अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार किया अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पासमे सह श्रवन उद्यान से निकले निकलकर, तीन संघाडे बनाकर चपलता रहित समाधी सहित द्वारका नगरी में भिक्षार्थ फिरनलगे ॥ ६ ॥ तब उन तीन संघाडे में एक संघाडा द्वारका नगरी के ऊचक्षत्रियादि नीच भिक्षुकवृत्तीवाले मध्यम वाणिकादि के कुलों-घरों में परिभ्रमण करते वासुदेव राजाकी देवकी राणीके घर में प्रवेश किया ॥ ७ ॥ तब देवकी रानीने उन साधु को अपने इधर आते हुवे देख देखकर हृष्ट तुष्ट हृदय आनंदितहो आसन से खडी हुई, सात आठपांव उन के सन्मुखगई,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

वंदति नमंसइ२त्ता जेणेव भत्तगघरए तेणेव उवागच्छइ२त्ता सीहकेसरणं मोदगाणं थालंभरेइ २त्ता तेअणगारे पडिलाभेति २त्ता वंदति नमंसति २त्ता पविसज्जेति ॥८॥ तदाणं तरचणं दोचे संघडए बारवत्तिए नगरीए उच्च जाव पडिविसंजेत्ति॥९॥ तदाणं तरंचणं तच्चेसंघाडे बारवतिनगरीए उच्चनीय जाव पडिलाभेत्ति २ त्ता एवं वयासी- किण्हं देवाणुप्पिया!किण्हवासुदेवस्स इमीसे बारवतीए नयरीए बारस्स जोयण आयामे

अर्थ

जाकर तीन वक्त घुटने जमीन को लगाकर हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार की, वंदना नमस्कार करके जहां भोजन गृहथा तहां आई, आकर सिंहकेसरी मोदक (लड्डू) थाल, भरी, थाल भरकर उन अनगार को प्रतिलाभे—वेहराये, फिर वंदन नमस्कार कर पहोंचाये ॥ ८ ॥ उन के गये बाद थोडी ही देर के अन्तर से इन में का दूसरा दो साधु का संघाडा द्वारका नगरी में फिरता हुवा, वह भी वासुदेवजी की देवकी रानी के घर में आय, उन को आते देख देवकी बिसमयपाई कि यह साधु वेही हैं की अन्य? उन को भी पूर्वोक्त प्रकार वंदना नमस्कार कर सिंहकेशरी मोदक प्रतिलाभ कर पहोंचाये ॥ ९ ॥ उन के गयेबाद उन्ही में का तीसरा दो साधु का संघाडा भी द्वारका नगरी में भीक्षार्थ परिभ्रमण करता वासुदेवजी की रानी देवकी के घर में आया, उन को देख देवकी आश्चार्य पाई. यह दोनों साधु

सूत्र

जावपच्चक्खंदेव लोकभूताए समणाणिग्गंथाणं उच्चनीयं जाव अडमाणा भत्तपाणं नोल-
भत्ति, तओणं ताइचेवकुलाइं भत्तपाणा भुजो २ अणुपविसंति? ॥१०॥ततेणं ते अणगारा
देवइदेवीए एवं वायासी-नो खलु देवाणुप्पिया! कण्हवासुदेवस्स इमीसे बारवतिए णयरीए जाव
देवलोगभूतोए समणाणं णिग्गंथाणं उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणे नो लब्भइ । नो चेव
णंताइं चेवकुलाइं दोच्चंदि तच्चंपि भत्तपाणीए अणुपविसंति॥ ११॥ एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं
भद्दिलपुर नयरे णागस्स गाहावइस्सपुत्ता सुलसाएभारियाएअत्तया, छभायरो सहो-

अर्थ

तीसरी वक्त मेरे यहां पधारे इस का क्या कारन. तद्यपी दानान्तर निवृति के लिये उन को पूर्वोक्त प्रकार वैसेही वंदना नमस्कारकर कर थालभर केशरियों मोदक प्रतिलाभे प्रतिलाभकर हाथजोडकर यों कहने लगी क्या अहो देवानुप्रिया! कृष्णवासुदेव की द्वारका नगरी बारा योजन लम्बी नवयोजन चौडी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी इस में श्रमण निर्ग्रन्थ को ऊंच नीच मध्यम कुलों में परिभ्रमण करते आहार पानी की प्राप्ती नहीं होती है क्यों कि जिस के लिये साधु को उस ही [प्रथम प्रवेश किये] घर में बारम्वार प्रवेश करना पडे ? ॥१०॥ तब वे अनगार देवकी देवीका उक्त कथन श्रवणकर मतलब समझे और कहने लगे कि हे देवाणुप्पिया ! कृष्णवासुदेव की द्वारका नगरी बारा योजन की लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी इस में श्रमण निर्ग्रन्थ को परिभ्रमण करते आहार पानी नहीं मिले,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दरा सरिस्सया जाव नलकूबर समाणा, अरहओ अरिट्ठनेमीस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्मं संसारभउविग्गा भीयाजम्मणमरणाणं मुंडे जाव पव्वइत्ता ॥१२॥ ततेणं अम्हं जं चेवदिवसं पव्वइए तंचेवदिसं अरहा अरिट्ठनेमी वंदामो णमंसामो इमएतारूवं अभिग्गहं उगिण्हामो-इच्छामोणं भंते ! तुब्भेहि अब्भणुणाया समाणा जाव अहासुहं॥१३॥ततेणं अम्हे अरहंत अब्भणुणायसमाणे जाव जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरामो ॥ तं अज्ज छट्ठ खमण पारणयंसी पढमाएपोरिसीए सज्झायं जाव अडमाणे तवगिहं

अर्थ

ऐसा नहीं है. और हमने प्रथम प्रवेश किये हुवे घर में दो तीन वक्त आहार पानी के लिये प्रवेश भी किया नहीं है ॥ ११ ॥ परंतु यों निश्चय है. हे देवानुप्रिय ! हम भद्दिलपुर नगर के रहवासी नाग नामक गाथापति के पुत्र, सुलसा भारिया के आत्मज छे भाइ एक उदर के. उत्पन्न हुवे यावत् नल कुबेर समान अरिहंत अरिष्ट नेमीजी के पास धर्म श्रवण कर अवधार कर संसार से उद्वेग पाये जन्ममृत्यु के डर से डरकर मुण्डित हुवे यावत् दीक्षा ली ॥ १२ ॥ तब हमने जिस दिन दीक्षा धारन की उस ही दिन अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथजी को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार अभिग्रह धारन किया—हे भगवन् ! हम चाहाते हैं. जो आपकी आज्ञा हो तो जावजीव पर्यन्त बेले २ तप निरन्तर करना, तब भगवंतने कहा यथासुख करो ॥ १३ ॥ तब से हम भगवन्त की आज्ञा प्राप्त कर बेले २ पारना करते हुवे विचरते

सूत्र

अणुप्पविट्ठा ॥ १४ ॥ तं णो खलु देवाणुप्पिया ! तं चेवणं अम्हे अम्हेणं अण्णे, देवाति देवीए एवं वदंति वदंत्तित्ता जामेवादिसं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया ॥१५॥ ततेणं तीसे देवइए देवीए अयमेव रूवं अज्झत्थिए जाव समुप्पणे-एवं खलु अहं पोलासपुरेणयरे अतिमुत्तिणं कुमारसमणेणं बालतणे वागरिया, तुम्हे देवाणुप्पि ! अट्ठ पुत्ते पयाइस्सासि सरिस्सए जाव णलकुवर समाणे नोचेवणं तं भारहेवासे अणाओवि अमयाओ सारिस्सए पुत्ते पयाइस्सति, तंणंमिच्छा ॥ इमण पच्चक्खमेव दिस्सति

अर्थ

लगे, आज छठ खमनवेला का पारने में प्रथम प्रहर में स्वध्यायकर यावत् भगवन्तकी आज्ञासे हमारे छे साधु के तीन संघाड कर द्वारका नगरी में अलग २ फिरते हुवे, अलग २ तीनों संघाडे तेरे घर में आगये ॥ १४ ॥ इसलिये निश्चय में हे देवानुप्रिया ! पहिले आये वे हम नहीं, हमतो दूसरे हैं. यों देवकी देवी से कहकर जिस दिशा से आये थे उस ही दिशा पीछेगये ॥ १५ ॥ तब उस देवकी देवीको इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुआ-यों निश्चय मुझे पोलासपुर नगर में अतिमुक्त कुमार साधुने बचपन वन में कहा था कि हे देवकी तू आठ पुत्र प्रसवेगी वे आठोंही एक सरीखे यावत् नलकुबर समान होंगे, तैसे भरत क्षेत्र में अन्य कोइ भी माता पुत्र को प्रसवने वाली नहीं होगी, ऐसा जो अतिमुक्त कुमार श्रमणने कहा था वह वचन मिथ्या हुआ, क्यों कि यह प्रत्यक्ष मुझे देखाते हैं भरत क्षेत्र में अन्य माता भी निश्चय एक सरी

सूत्र

भारहेव से अणओत्रि अमयाओत्रि खलु सरिस्सए जाव पुत्ते पयाताओ ॥ १६ ॥ तं गच्छामिणं अरहं . अरट्ठनेमी वंदामि नमंसामी इमंचणं एतारूव वागरणं पुच्छिसामित्तिकट्टु, एवं संप्पेहेति२त्ता कोडुवीय पुरिमे सद्दावेइ२त्ता एवं वयासी-लहुकरण जणपवरं जाव उवट्ठवेइति ॥ जहाण देवाणंदा जाव पज्जुवासति ॥ ११ ॥ तएणं अरहा अरिट्ठनेमि देवइं देवी एवं वयासी-सेणूणं तवदेवइदेवी! इमेय छअणगारे पासित्ता अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पत्ते-एवं खलु अहं पोलासपुरेनगरे अतिमुत्तेणं

अर्थ

से या मेरे कृष्ण केही जैसे पुत्र जनने वाली है ॥१६॥ इसलिये इस संशय की निवृति करने अब जावूं में अर्हन्त अरिष्टनेमीनाथ को वंदना नमस्कारकर यह इसप्रकारका प्रश्न पूछूंगी एसा विचार किया ऐसा विचारकर कुटम्बिक पुरुष को बोयाला, बोलाकर यो कहनेलगी शीघ्रगति वालारथ प्रधान लावो ॥ उस पुरुष ने शीघ्रगति वाला रथ तैयार कर लाकर खडा किया, जिस में देवकीदेवी आरूड होकर जिस प्रकार भगवती में कही हुइ देवनंदा ब्रह्मणी भगवंत के दर्शन करने आईथी, उसही प्रकार देवकी देवी भी श्री नेमनाथ भगवान के दर्शन करने आई यावत् सेवा भक्ति करनेलगी ॥ १७ ॥ तब अरिष्टनेमीनाथ भगवान् देवकी देवी से यों कहने लगे यों निश्चय हे देवकी देवी ! इन छ साधुओं को देखकर तुझे इस प्रकार अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा, यों निश्चय मुझे पोलासपुर नगर में अति मुक्ति कुमार श्रमणने कहा

सूत्र

तंचेव जाव णिग्गच्छित्ता, जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागया, सेणूणं देवइ अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ १८ ॥ एवं खलु देवइंदेवि ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरेणगरे नागेनामं गाहावई परिवसइ अड्ढे ॥ १९ ॥ तस्सणं नागस्स गाहवइस्स सूलसानामा भारियाहोत्था ॥ २० ॥ तएणं सुलसा गहावइ बालत्तणे चेव निमित्तएणं वागरित्ता, एसणं दारिया णिरया भविस्सति ॥ २१ ॥ तत्तेणं सासुलसा बालप्पभित्ति चेव हरणिगमेसिदेवे भत्तियाविहोत्था, हरिणे गमेसिस्स पडिमं करेति २ कल्लाकालिंण्हाय जाव पायच्छित्ता, उल्लपड साडया महरिहं पुप्फच्चणं

अर्थ

था वैसा ही सब कहा, इस सन्देह की निवृति करने यहां आइ है, हे देवकी यह अर्थ समर्थ है सच्चा है क्या? देव की बोली-हां भगवन् ! सच्चा है ॥१८॥ यों निश्चय हे देवकीदेवी !-उस काल उस समय में भद्दिलपुर नगर में नागनामेगाथा पति रहताथा वह ऋद्धिवंत यावत् अपरा भवितथा ॥१९॥ उस नाग गाथापति की सुलसानामे भरियाथी ॥ २० ॥ तब उस सुलसा गृहपतनी को बाल्यावस्थामेंही नेमितिकने कहाथा कि-तेरे बच्चे मरेहुओहोंगे ॥२१॥ तब वह सुलसा बच्चपनसेही पुत्रार्थ हिरण गमेषी देवकी भक्ति करनेवाली बनी हिरण गमेषी देव की प्रतिमा बनाइ, प्रतिमा बनाकर सदैव वक्तो वक्त स्नानकर शुद्धहो आले वस्त्र से महामुल्यवाले पुष्पों से उस प्रतिमा की अर्चना पूजना करती, कर के घुटने जमीन को लगाकर प्रनाम को नमस्कार करती,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

करेइ २ त्ता जाणु पायपडिया पणामं करेइ २ त्ता ततोपच्छा आहारेतिवा निहारेतिवा वरत्नइव ॥ २२ ॥ तत्तेणंतीसे सुलसाएगाहावइणी भत्तिवहुमाणा सुस्सुसाए हरिणगमेसीदेवे आराहिएयावि होत्था ॥ २३ ॥ ततेणं से हरिणगमेसिदेवे सुलसाए गाहावईणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसागाहावइणी तुम्हंचणं दोन्निवि समामेव सगब्भयाकरेइ ॥ २४ ॥ ततेणं तुब्भिदोन्नि समामेव गब्भि गिण्ह २ त्ता, समामेव गब्भं परिवहह, समामेव दारए पयायह ॥ २५ ॥ ततेणं सासुलसा गाहावइणी वेणहायमावणं दारते पयाति ॥२६॥ ततेणं से हरिणगमेसीदेवा सुलसाए गाहावइणीए

अर्थ

कर के तब फिर आहार निहार इत्यादिकार्य करतीथी ॥ २२ ॥ तब वह सुलसा गृहपतीनी भक्तिभाव से बहुतमान्य से सुश्रुषायुक्त हरिणगमेषी देव को आराधनेवाली हुई ॥ २३ ॥ तब वह हरिण गमेषी देव सुलसा गृहपातिनी की अनुकम्पा के लिये हे देवकी! तु और सुलसा दोनों साथ ही गर्भ धारन करने लगी [ऐसा जाना] ॥ २४ ॥ तब तुम दोनों साथ ही गर्भ ग्रहण कीया, ग्रहण कर साथ ही गर्भ की प्रतिपालना करती हुई, साथ ही बालकों को जन्म देने लगी ॥ २५ ॥ उक्त वह सुलसा गृह पत्नी, मृत्युक (मरे हुवे) बच्चे को जन्म देने लगी ॥ २६ ॥ तब हरिण गमेषी देव सुलसा गृहपातिनी की अनुकम्पा के लिये तेरे बालक को कर संपुट (दोनों हाथों के बीच) में ग्रहण कर तेरे पास स्थापन करे और उसही

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अणुंकंपणट्टयाए, विहियमात्रणेहारए करयलसंपुड गिण्हइ २ त्ता तव अंतियं साहरित्ति, तवे अंतिए साहरित्ता ॥ २७ ॥ तं समयं चणं तुम्हंपि नवण्हं मासाणं सुकुमालं दारए पसवसि जेवियणं देवाणूप्पियाणं, तव पुत्ता तेविय तव अंतियातो करयल पुडेगिण्हइ २ त्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरति तंचेवणं देवातिए से तव पुत्ता, णो चेवणं सुलसाए गाहावइणी पुत्ता! ॥ २८ ॥ ततेणं सा देवइंदेवी अरहओ अरिट्ठनेमिए अंतिए एमठ्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियया, अरहो अरिट्ठनेमि वदंति णमंसांति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, ते छप्पिय अणगारा वंदंति णमंसंति, आगयपण्हता, पफूल्लयल्लोयणा,

अर्थ

वक्त नवमहीनें प्रतिपूर्ण हुवे तू सुकुमाल बच्चोंका जन्म देती तब तेरे बच्चे कों संहारनकर करसंपुट में ग्रहण कर सुलसा के पास स्थापन करें ॥ २७ ॥ हे देवकी! इसलिये निश्चय से वे छ अनगार तेरे पुत्र हैं परंतु सुलसा के पुत्र नहीं है ॥ २८ ॥ तब वह देवकी देवी अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पास उक्त अर्थ श्रवण करके अवधार कर हृष्ट तुष्ट हुइ यावत् हृदय में विक्सायमान हुई अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके जहां वे छही अनगार थे तहां आइ, उन छही अनगारको भी वंदना नमस्कार किया, उसवक्त देवकीका उन छही साधुओं पर पुत्र स्नेह उमटनेसे स्तनों में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कंचुयपरिक्खित्तीया, दरित्तबलिय बाहा, धाराहय कदंबपुप्फगंपिव समुस्सियरोमकूवा, ते छप्पि अणगारा अणिमिसए दिट्ठिए, पिहमाणी२ सुचिरं निरक्खंति२ वदंति२ त्ता नमंसइ२त्ता, जेणेव अरहा अरिठनेमी तेणेव उवागच्छइ२त्ता अरहं अरिनेमिं तिक्खूत्तो आयाहीणं पायाहीणं करेइ२ त्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाण दुरुहइ२त्ता जेणेव बारवतिए णयरीए तेणेव उवागए, बारावतिणयरीए अणुपविसंति२त्ता जेणेव सएगिहे जेणेव बहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव सएवासघरते जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवा-

अर्थ

दूध भरागया, नेत्रों प्रफुल्लित विकसायमान हुवे कंचुकी(चोली) तंग हुइ, बाहके बलिये (चूडीयों) भी तंग हुवे, मेघ की धारा से सिंचन किया कदम्ब वृक्ष के फूल के समान विकासित हुइ, रोमांकुर खडे हुवे, उन छही अनगार को अनिमिष (मेषोनमेष) दृष्टी से देखती हुइ २ वंदना नमस्कार कर जहां अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ थे तहां आइ, आकर अरिहंत अरिष्ठ नेमीनाथ को तीन वक्त घुटने जमीन को लगा हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिरकर वंदना नमस्कार करके उसही धार्मिक रथपर स्वार होकर जहां द्वारका नगरी है तहां आइ, द्वारका में आकर जहां बाहिर की उपस्थानशाला तहां आइ. आकर उपस्थानशाला में धार्मिक रथ से नीचे उतरी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गच्छइ २ त्ता सयं सयणिजंसि निसियाति ॥ २९ ॥ ततेणं तीसे देवतीए देवीए अयं अज्झत्थिए ४ समुप्पणे-एवं खलु अहं सरीस्सए जाव णलकुवरसमाणा सत्त पुत्ते पयाती नो चेवणं मए एगस्सवि बालत्तणए सुमुब्भूते, एसावियणं कण्हेवासुदेवो छण्हं २ मासाणं मम अतियं पाय वंदत्त हव्वमागच्छइ ॥ २० ॥ ते धणाओणं ताओ अम्मयाओ ४ जासिमाणे णियगकुत्थिसंभूयाइं थणदूधलुगाई माहुरसमुला वयाइं मम्मणयज्जं विपयाति, थणमूलकक्खदेसभागं अंतिसरमाणाति, मुद्धयाति पुणोय कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हेति २ त्ता, उछंगनिवेसयाइं, दितिसमूलावचे

अर्थ

उतरकर जहां स्वयं का घर जहां स्वयं की शैय्या तहां आई, आकर शैय्या में बैठी ॥ २९ ॥ तब उस देवकी देवी को इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा. यों निश्चय मैंने एक सरीखे यावत् नल-कुमार समान सात पुत्र प्रसवे परंतु निश्चय मैंने एक भी बालक को छोटपने में प्राप्त नहीं किया, यह एक कृष्ण वासुदेव भी छ २ महीने में मेरे पास पांव वंदना करने को शीघ्र आता है ॥ ३० ॥ इसलिये धन्य है. उस माता को वही कृतपुणी सुलक्षणी है, जो इस प्रकार अपनी कूक्षी से उत्पन्न हुवे बालक को स्तन पान कराती है—दूध पिलाती है, मधुर मिष्ट वचन बोलाती है. तोतली बोली से बोलाती है, बांहकाक्षी के देशविभाग में स्तन से दबाती है, पुनः कोमल कर तल हस्त में ग्रहण करती है, हाथ पकड के गोद में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महुरेपुणेपुणे मंजुलप्पभणिन्ते ॥ ३१ ॥ अहणं अधणा अपुणा अकतपुणा एतोएक तरमवि नपत्ता ओहय जाव झियायत्ति ॥ ३२ ॥ इमंचणं कण्हेवासुदेव ण्हाति जाव विभूसिते देवइदेवीए पायवंदए हव्वमागच्छाति ॥ ३३ ॥ ततेणं से कण्हवासुदेवे देवती देवीं पासति उहत्ता जाव पाइत्ता देवतीदेवीए पायगहणं करेइ २ त्ता देवतिदेविं एवं वयासी। अण्णयाणं अम्मो! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव भवह, किंस्सं अम्मो! अज्ज तुब्भे उहता जाव झियायह? ॥ ३४ ॥ ततेणं स. देवतिदेवी कण्हं वासुदेवं एयं वयासी-एवं खलु अहंपुत्ता! सरिस्सए जाव समणे सत्तपुत्ते पयायां, नो चेवणं मए एगस्सवि बालतणे अणूभूते, तुम्हपियणं पुत्ता!

अर्थ

बैठाती है, शरल शब्द से बोलाती है, वारम्वार मिष्ट वचन कर बोलाती है ॥ ३१ ॥ मैं अधन्य हूं, अपुण्य हूं, अकृत्यपुण्य हूं क्योंकि सात बालाकोंमेंसे एक भी बालकको बचपनमें प्राप्त नहीं करसकी, इस प्रकार आर्तध्यान ध्यातीहुई विचरने लगी ॥ ३२ ॥ इधर उस वक्त कृष्ण वासुदेवने स्नान किया यावत् विभूषित हुवे. देवकी देवी के पांय वंदन करने शीघ्र आये ॥ ३३ ॥ तब उन कृष्ण वासुदेवने देवकी देवी को चिन्ताग्रस्त देखी. आकर देवकी के पांव ग्रहण किये, पांव ग्रहण कर देवकी देवी से इस प्रकार कहने लगे—अहो अम्मा! मैं अन्यदा तेरे पास आता था तब तो तू मुझे देखकर प्रसन्न होती थी यावत् किस कारन से? अहो अम्मा! आज तुम चिन्ताग्रस्त बनी है ॥ ३४ ॥ तब वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव से यों कहने लगी—यों निश्चय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

लेणछण्हं २ मासाणं ममअंतिय पायवंदए हव्वमागच्छसि ॥ तंधण्णओणंतन्तो! अम्मयाणो जाव झियामि ॥ ३५ ॥ तंसे कण्हवासुदेवे देवतिदेवी एवं वयासी-माणं तुम्हे अम्मो ! उहए जाव झीयायह ; अहणं तहावतिस्स जहाणं ममसहोदरए कणियस्स भाउए भविस्सातित्ति कट्टु, देवतिदेवी ताहिं इट्ठाहिं वगुहिं समासासेत्ति २ त्ता, तत्तो पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ जहा अभउ णवरं हरिणगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हात्ति जाव अंजलिकट्टु एवं वयासी-इच्छामिणं देवा-

अर्थ

है पुत्र ! मैंने एक सरीखे-या तेरे जैसे यावत् सात पुत्र प्रसवे परंतु निश्चय मैंने एक भी बालक का अनुभव लिया नहीं, हे पुत्र ! तू भी छे २ महीने में मेरे पास पांव वंदन करने आता है, इसलिये धन्य है उस माता को जो अपने कूक्षी से उत्पन्न हुवे पुत्र को स्तन का दूध पिलाती है यावत् इसलिये मैं चिन्ता-ग्रस्त बनी हूं ॥ ३५ ॥ तब वे कृष्ण वासुदेव देवकीदेवी से इस प्रकार कहने लगे-अहो अम्मा ! तुम चिन्ता मत करो यावत् आर्तध्यान मत ध्यावो. मैं तेरेलिये जिस प्रकार मेरा सहोदर कनिष्ट (छोटा) भाई होगा वैसाही करूंगा, ऐसा कहकर देवकी देवीको उस इष्टकारी प्रियकारी शब्दकर संतोषी, संतोषकर वहांसे निकले, निकलकर जहां पौषधशाला, थी वहां आये, आकर जिस प्रकार ज्ञाता सूत्रमें कहे प्रमाने अभय कुमारने देवता का आराधन कियाथा उस प्रकार इनने भी हरिणगमेषी देवको अष्टम भक्त(तेला)का तपकर याद करते हुवे रहे.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णुप्पिया ! सहोदर कणीयसंभाउयं विहिणं ॥ ३६ ॥ ततेणं हरिणगमेसीदेवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी- होहित्तीणं देवाणुप्पिया ! तवदेवलोएचुए सहोदरे कणियसभाउ; सेणं उमुक बालभावे जोवणगमणुपत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिते मुंडे जाव पव्वइस्सति; कण्हवासुदेवं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी, जामेवदिसं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया ॥ ३७ ॥ तत्तेणं से कण्हवासुदेवे पोसहसालातो पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव देवतिदेविं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, देवतिदेवीए पायग्गहणं करेइ २ त्ता एवं वयासी- होहितिणं अमो ! ममसहोदरे कणीयसेभाउत्तिकट्टु, देवतीदेवीए इट्ठाहि जाव

अर्थ

देवता आया तब कृष्ण बोले-अहो देवानुप्रिया ! मैं चहाताहुं मेरे छोटा भाई ॥ ३६ ॥ तब हरिण गमेषीदेव कृष्ण वासुदेव से यों बोला-हे देवानुप्रिया ! तुमारे देवलोक से चवकर सहोदर छोटा भाइ होवेगा परन्तु वह बाल भाव से मुक्त होकर योवन अवस्था प्राप्त होते अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवान के पास मुण्डित होवेगा यावत् दीक्षालेवेगा, कृष्ण वासुदेव को दो वक्त तीन वक्त यों कहकर, जिस दिशा से आया था उसदिशा पीछा गया ॥ ३७ ॥ तब कृष्ण वासुदेव पौषध शाला से निकले, निकलकर जहां देवकी देवीथी तहा आये आकर देवकी देवीके पांव ग्रहण किये, पांव ग्रहणकर यों बोला हे माता मेरा सहोद छोटा भाइ होवेगा,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

असासेति २ त्ता जामेवदिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ ३८ ॥ ततेणं तस्स देवतिदेवी अणया कयाइं तंसितारिसयंसि जाव सीहसुमिणं पासित्ताणं पडिबुद्धा, जाव हट्ठ तुट्ठ जाव हियया, तंगब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ॥ ३९ ॥ ततेणं से देवतीदेवी नवण्हंमासाणं जाव सुमणकुसुमरत्त, बंधुजीवतलखारस सरिसे, परिजात तरुण दिवाकरसमप्पभि, मव्वनयणकतं सुकुमालं जाव सुरूवं गयतालुयसमाणं दारयपयया ॥ ४० ॥ जमणं जहा मेहकुमारे, जाव जम्हणं अम्हंइमेदारत्ते गयतालूयसमाणे

अर्थ

ऐसाकर देवकी देवी को इष्टकारी प्रियकारी वचनकर संतोषी, संतोषकर जिस दिशा से आये थे उसदिशा पीछे गये ॥ ३८ ॥ तब वह देवकी को अन्यदा किसी वक्त पुन्यवन्त के शयन करने योग्य शैया में सूते हुवे सिंहका स्वप्न देखा, देखकर जागृत हुई यावत् हर्ष संतोष पाई हृदय विकसायमान हुवा, उस गर्भ को सुखे २ पालती हुई विचरने लगी ॥ ३९ ॥ तब वह देवकी देवी-नवमहीने यावत् प्रतिपूर्ण हुवे सुमन के फूल समान रक्त, बंधुजीव (वर्षाद में उत्पन्न होता है) वैसा रक्त, लाख के रस जैसा रक्त, परेवे (कबूतर) की आंखों जैसा रक्त, उदयपाते सूर्य जैसा प्रभावाला, सर्वकी आंखों को प्रियकारी, सुकुमार कोमलाङ्गी यावत् सुरूप हास्ति के तालु जैसा बालक को जन्मादिया ॥४०॥ जन्मोत्सव वगैर जैसा ज्ञाता सूत्र में मेघकुमार का कहा तैसा कहना यावत् हमारा यह बालक गज के तालुवे जैसा रक्त और सुकुमाल है इसलिये हमारे इस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तंहोउणं अम्हंएयस्स दारयस्स नामाधेज्जं गयसुकुमाले २ ॥४१॥ तत्तणं तस्स दारयस्स अम्मापियरो नामकयं गयसुकुमालोत्ति, सेसं जहामेहे, जाव अलंभोग समत्थे जातेयाविहोत्था ॥ ४२ ॥ तएणं बारवतिए णयरीए सोमिलनामे महाणपरिवसइ अड्डे, रिउवेयेय जाव सुपरिनिट्ठिएयावि होत्था ॥४३॥ तस्सणं सोमिलस्स महाणस्स सोमसिरिनाम माहणीहोत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा ॥ ४४ ॥ तस्सणं सोमिलस्स धूया सोमसिरिएमाहणीए अत्तया सोमानामं दारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा, रूवेणं जाव लवणेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरायाविहोत्था ॥ ४५॥ तत्तणं सा सोमादारिया

अर्थ

बालक का नाम 'गजसुकुमाल' होवे॥४१॥ तब उस बालक के माता पिताने बालकका नाम स्थापन किया, 'गजसुकुमाल' ऐसा, शेष कथन जैसा मेघकुमार का कहा तैसा जानना यावत् संपूर्ण भोग भोगवने समर्थ हुवा ॥ ४२ ॥ तब द्वारका नगरी में सोमिल नाम का ब्राह्मण रहता था, वह ऋद्धिवन्त रिजुवेद आदि चारों वेद वगैरह ब्राह्मण के शास्त्र में निपुण था ॥ ४३ ॥ उस सोमिल ब्राह्मण के सोम श्री नाम की ब्राह्मणी स्त्री थी वह भी सुकुमाल और रूपावति थी ॥ ४४ ॥ उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री सोमश्री ब्राह्मणणी की आत्मज 'सोमा' नाम की पुत्री थी, वह भी सुकुमाल यावत् सुरूपवती थी, रूपकर यौवन कर लावण्यता कर उत्कृष्ट २ शोभायमान थी ॥ ४५ ॥ तब वह सोमा लडकी अन्यदा किसी वक्त स्नान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अन्नया कयाइ ण्हाया जाव विभूसिया वहुहिं क्खुज्जाहिं जाव परिखित्ता सयातो गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता रायमग्गंसि कणगमइ डूसएणं किलमाणी २ चिट्ठति ॥ ४६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसड्ढे परिस्सा निग्गया ॥ ४७ ॥ ततेणं से कण्हवासुदेवं इमिसे कहा-एलद्दट्ठसमाणे ण्हाए जाव विभूसिते, गयसुकमालेणं कुमारेणं सार्द्धि हत्थि खंधवरगते; सकोरंट मल्लदामणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं, सेयवर चामराइ उधूव्वमाणेहि, वारवतिए

अर्थ

कर वस्त्र भूषण से भूषित हो बहुत खोजे यावत् परिवार से परिवारी हुई स्वयं के घर से निकली, निकलकर जहां राज्यपन्थ था तहां आई, आकर राज्यपन्थ में सुवर्ण की गेंद कर क्रीडा कररही थी ॥ ४६ ॥ उस काल उस समयमें अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथजी सहश्रम्बवागमें पधारे थें, उनको परिषदा वंदन करने गइ ॥ ४७ ॥ तब कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बधाइ मिलने से हृष्ट तुष्ट हुवे, स्नान क्रिया यावत् विभूषित होकर गजसुकुमाल कुमार के साथ हाथी पर बैठे कोरंट वृक्ष की माला का छत्र धराते हुवे श्वेत चमर दुलते हुवे द्वारका नगरी के मध्य २ में होकर आरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ के पांव वंदन करने जाते हुवे सोमा लडकी को देखी, देखकर सोमा लडकी के रूप यौवन लावण्यता में यावत् आश्चर्य प्राप्त हुवे ॥ ४७ ॥ तब कृष्ण वासुदेव कोटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगे-जाओ तुम हे देवानुप्रिया!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णयरीए मज्झंमज्झेणं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स पायवंदए निगच्छइमाणो सोमादारियं पासइ २ त्ता सोमाए दारियाए रूवेणय जोव्वणेणय लवणेणय जाव विम्हए ॥४८॥ तएणं कण्ह वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावति २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिय ! सोमिल महाणजायइत्ता, सोमादारियं गेण्ह २ कण्हंतेउरंसि पक्खिवह॥ ततेण एसा गजसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्संति, ते कोडुंबिय जाव पक्खिवत्ति ॥ ४९ ॥ तएणं से कण्ह वासुदेवे वारवतिए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सयसंबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासंति ॥ ५० ॥ तत्तेणं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स तिसेय धम्म कहा ॥ ५१ ॥ कण्हे पडिगते

अर्थ

सोमिल ब्राह्मण से सोमालडकीकी याच नाकरो, सोमालडकी ग्रहणकर कुंवारे अन्तेपुर में स्थापन करो, तब फिर यह गजसुकुमाल कुमारके भारियापने होगी॥४८॥उस कुटम्बिक पुरसने उसही प्रकारसे सोमालडकी को कुंवारे अन्तेपुर में स्थापन की ॥ ४९ ॥ तब कृष्णवासुदेव द्वारका नगरी के मध्य मध्य में से निकलकर जहां सहश्रम्ब उध्यान जहां अरिष्टनेमी भगवान थे तहां आये यावत् सेवा भक्ति करने लगे ॥ ५० ॥ तब अर्हन्त अरिष्टनेमी नाथने कृष्ण वासुदेव को गजसुकुमाल को और उस महापरिषद को धर्म कथा सुनाई ॥ ५१ ॥ कृष्ण वासुदेव धर्म कथा श्रवण कर पीछे गये ॥ ५२ ॥ तब गजसुकुमाल कुमार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

॥ ५२ ॥ ततेणं से गयसुकुमाले अरह अरिट्ठनेमी अंतियं धम्मं सोच्चा, जाव एवं वयासी-जंनवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छंति, जहा मेहो, महिलेयावज्जं,जाव वाढियकुले ॥५३॥ ततेणं कण्ह वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठ समाण। जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता गयसुकुमाले आलिंगति उछंगेनिवेसइ २ त्ता एवं वयासी तुम्हसिणं ममसहोदरे कणियस्सभाया तुम्हाणं देवाणुप्पिया ! इयाणी अरहतो भुण्डे जाव पव्वयाहि ॥ ५४ ॥ तहेणं तं गयसुकमालं कण्हवासुदेव अम्मा-पियरो जहे णो संचाइ बहुहिं विसयाणु लोमाहिय विसयपडिकुलाहिय अघवणाहिय

अर्थ

अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवंत के पास धर्म श्रवनकर हर्ष तुष्टित हुवे वैराग्य उत्पन्न हुवा यावत् यों कहने लगे इतना विशेष अहो देवानुप्रिया ! मैं मेरे मात पिताको पूछकर आप के पास दीक्षा लेवूंगा, मेघकुमारकी तरह मात पिता को पूछ प्रश्नोत्तर हुवे (इन के स्त्रीयों नहीं जानना,) यावत् कुल वृद्धि कर दीक्षालेना ऐसा कहा ॥५३॥तब कृष्ण वासुदेव इस प्रकार समाचार सुनकर जहां [illegible]कुमालथा तहां आये,आकर गजसुकुमाल को आलिंगन दिया उठाकर गोद में बैठा ये, बैठाकर यों कहने लगे-तु मेरे एक ही सहोदर छोटा भाइ है, इसलिये अभी अर्हन्त अरिष्टनेमी भगवंत के पास दीक्षाधारन करना है॥५४॥तब उस गजसुकुमाल कुमारको कृष्णवासुदेव व उसके माता पिता बहुत विषयानुकुल वचनसे व विषय प्रतिकूल संयम के [illegible] वचन

सूत्र

जाव ताहे अकाम काइंचेव ॥ ५५ ॥ तहणं कण्हवासुदेव एवं वयासी-अहणं तुमे बारवतियणयरीए महता २ रायाभिसएणं अभिसिंचिसामी ॥ ५६ ॥ तएणंसे गजसुकुमालं अम्मापियरो एवं वयासी-इच्छामो तावजाया ! एगदिवसमवि रायसिरिं पासित्तए ॥ ५७ ॥ तएणं सेगयसुकमाले कण्हवासुदेवेणं अम्मापियरेणं मसुवमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ५८॥ तएणं से कण्हवा सुदेव कोडुंबिय पुरुष सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-खिप्पामेवभो देवाणुप्पिया ! गयसुकमालस्स महत्थं जाव रायाभिसेहं उवट्ठवेह ॥ ५९ ॥ तएणं से कोडुंबिय पुरिसे जाव उवट्ठवेइ ॥ ६० ॥ तएणं से गयसुकुमाल

अर्थ

सुनाकर समझाकर लोभाने समर्थ नहीं हुवे यावत् तब गजसुकुमाल को निष्कामी जाना ॥ ५५ ॥ तब कृष्ण वासुदेव ऐसा बोले-मैं तेरे को द्वारका नगरी के राज्य का महा राज्याभिषेक करदेना चहाताहूं ॥५६॥ तब गजसुकमाल के माता पिता यों बोले—हे पुत्र ! हम तुझे एक दिन भी राज्य लक्ष्मी भोगवता देखना चहाते हैं ॥ ५७ ॥ तब गजसुकुमाल कृष्ण वासुदेव का और अपने माता पिता का मन रखने के लिये मौनस्थ रहे ॥ ५८ ॥ तब कृष्ण वासुदेवने कोटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगे— यों निश्चय. हे देवानुप्रिय ! शीघ्रता से गजसुकुमाल कुमर का महा अर्थवाला राज्याभिषेक करो ॥ ५९ ॥ कोटुम्बिक पुरुषने तैसा ही किया ॥ ६ ॥ गजसुकुमाल राजा हुवे महा हिमवंत पर्वत समान यावत् विचरने

१. हस्त लिखित प्रत में सम्बन्ध मिलता न आने से. यहां ज्ञाता सूत्रानुसार सूत्रार्था में कुछ फेरफार किया है.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

रायाजाए महया जाव विहरंति ॥ ६१ ॥ तएणं से गयसुकुमालंरायं अम्मापियरो एवं वयासी-भणजाया ! किं दलयामो? किं पयच्छामो? किं वातेहियइच्छिए? समत्थे? ॥ ६२ ॥ तएणं से गयसुकुमालस्स णिक्खमण जहा महाबलस्स णिक्खमणा तहा जाव समंति ॥ ६३ ॥ तएणं से गयसुकुमाल जाव अणगारेजाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ६४ ॥ तएणं से गयसुकुमाले अणगारे जंचेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पव्वरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ २त्ता अरहं अरिट्ठनेमिस्स तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदति नमंसति एवं वयासी इच्छामिणं

अर्थ

लगे ॥ ६१ ॥ तब गजसुकुमाल राजा को उन के माता पिता हाथ जोडकर यों कहने लगे-कहो पुत्र ! क्या देवें ? क्या तुम चहाते हो ? क्या तुमारी इच्छा है ? तुम क्या करने समर्थ हो ? ॥ ६२ ॥ तब गजसुकुमालने तीन लाख द्रव्य श्री भंडार से ग्रहण करने का कहा यावत् दिक्षा उत्सव का कथन जैसे भगवती सूत्र में महाबल कुमर का कहा तैसा सब यहां जानना यावत् दीक्षा धारन की ॥ ६३ ॥ तब वह गजसुकुमाल अनगार हुवे यावत् ईर्यासमितीवंत गुप्त ब्रह्मचारी बने ॥ ६४ ॥ तब गजसुकुमाल अनगारने जिस दिन दीक्षा धारन की उस ही दिन मध्यान कालमें जहां अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ थे तहां आये, आकर अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाय समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराईयाइं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहिरित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबन्धं ॥ ६५ ॥ तत्तेणं से गयकुसुमाले अणगारे अरिट्ठनेमी अब्भणूणाते समाणे अरहा अरिट्ठणेमी वंदाति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता अरहातो अरिट्ठनेमी अंतियातो सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ२त्ता जेणेव महाकालेसुसाणे तेणेव उवागच्छइ२त्ता थंडिलं पडिलेहंति उच्चारपासवणभूमिपडिलेहंति, इसि पब्भारगतेणं काएणं जाव दोवि पाएसाहट्टु एगराइय महापडिमं उवसंपजित्ताणं विहेरति॥६६॥ इमचणं सोमिलमाहणे सामिधयस्स

अर्थ

अहो भगवन् ! जो आपकी आज्ञा हो तो मैं चहाता हूं एक रात्रि की बारवी भिक्षुकी महाप्रतिमा अंगीकार कर विचरूं ? भगवंतने कहा—जैसे सुख होवे तैसे करो, प्रतिबन्ध मतकरो ॥ ६५ ॥ तब गजसुकुमाल आनगार अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान की आज्ञा प्राप्त होते, अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पास से सहश्र वन उद्यान से निकले, निकलकर जहां महाकाल समशान था तहां आये, आकर जमीन की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर, बडीनीत, लघुनीत की जगह की प्रतिलेखनाकी, फिर कुछ नमे हुवे शरीर से यावत् दोनों पांव एक स्थान (जिन मुद्रासे) समस्थापन कर एक रात्रि की भिक्षुकी (बारवी) प्रतिमा अंगीकार कर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अट्ठाए बारवतिनगरीओ बहिया पुव्वनिगच्छंति समिहातोय दब्भेय कुसुमेय पत्ते मोडच गिण्हइ २ त्ता तत्तोपडिनियत्ति २ त्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदुरसामंतेणं वितिवयमाणं २ संज्झाकालसमयंसि पविरल मणुसंसि गयसुकुमालं अणगारं पासति २ त्ता तं वेरंसुमरत्ति २ असुरुत्ते ४ एवं वयासी-एसणं भोगयसुकुमाले-कुमारे, अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिए, जेणं ममधूयं सोमासिरीए भारियाए अत्तया सोमादारिया अदिट्ठदोसो पत्तकं आलवत्तियं कालावत्तिणं विप्पजहित्ता मुण्डे जाव पव्वइए, तं सेयं खलु ममं गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरंणिज्जातेणं

अर्थ

विचरनेलगे॥८८॥ इसवक्त सोमिल ब्राह्मण उसके यज्ञ करने की सामग्री लिये द्वारका नगरी के बाहिर दीक्षा हुवे पहिले ही निकला था, वह काष्ट द्रोब पत्र वगैरह ग्रहणकिये, ग्रहणकर वहां से पीछा निकला, निकलकर महाकाल स्मशाण के पास होकर जाता हुवा संध्याकाल की वक्तमें थोडे—विरले मनुष्यों के गमना गमनकी वक्त गजसुकुमाल अनगार को देखे, देखकर पूर्व वैरका स्मरन हुवा, स्मरनकर आसुरक्त—कोपायमान हुवा मन मे यों कहने लगा—भो! यह गजसुकुमाल कुमर अप्रार्थिकका प्रार्थनेवाला यावत् लज्जा रहित, जिसने मेरी पुत्री सोमश्री की आत्मज सोमा का विना दोष देखे यौवन अवस्था को प्राप्त हुइ को विषय सुख भोगवने की वक्त उसे छोडकर मुण्डित हुवा यावत् दीक्षा ली. इस लिये श्रेय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

करित्तत्ते. एवं संपेहेति २ त्ता दिसा पडिलेणं करेत्ति २ त्ता सरममट्टियं गिण-
हइ २ त्ता जेणेव गयसुकुमालअणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गयसुकुमालस्स
अणगारस्स मत्थए मट्टियापालिं बंधइ २ त्ता जालियातो वियगातो फुलिय किसुय
समाणा खयरिंगीरे कभलेणं गिण्हइ २ त्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए
पक्खिवित्ति २ त्ता भीये तत्थ तसिये ततो खिप्पामेव अवकमंत्ति २ त्ता जामेवदिसं पाउ-
ब्भूते तामेवदिसं पडिगते ॥ ६७ ॥ तत्तेणं से गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि
वेदणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा ॥ ६८ ॥ तत्तेणं तस्स गयसुकुमाल

अर्थ

है मुझे मैं गजसुकुमाल कुमार से (मेरी पुत्रि का) वैर लवूं, ऐसा विचारा, ऐसा विचार कर चारोंदिशा में अवलोकन कर सरस पानी से भींनी हुइ तलाव के पाल की मट्टी ग्रहण की, ग्रहणकर जहां गजसुकुमाल अनगार था तहां आया, तहां आकर गजसुकुमाल अनगार के मस्तकपर मट्टी की पाल बन्धी, पाल बान्धकर अग्नि से प्रज्वलित अंगारे केसूंड(पलास)के फूल समान रक्तवर्ण खरके अंगारे ठीकरमें ग्रहण किये, ग्रहण कर के गजसुकुमाल अनगार के मस्तकपर स्थापन किये,स्थापन कर डरा,भय भीत हुवा, त्रास पाया, तहां से तत्काल निकलकर जिस दिशा से आया था उसदिशा पीछा (घर) गया ॥ ६७ ॥ तब गजसुकुमाल अनगारके शरीरमें महावेदना प्रगट हुई,वह वेदना अति उज्वल यावत् सहन करनी अतिकाठिनथी

सूत्र

अणगारे सोमिलस्स माहणस्स समणस्स आप्पदुसमाणे तं उज्जलं जाव अहियासेति ॥ ६९ ॥ ततेणं से गयसुकुमाले अणगारे तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेणं तदावरणिज्जा कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरण करणेणं अपुव्वकरणं असुप्पविट्ठस्स अणंते असुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, ततो पच्छासिद्धे जाव पहिणे ॥ ७० ॥ तत्थणं अहासणितेहिं देवेहिं सयं आराहिंत्ता तिकट्टु, दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे, दसद्धवण्ण कुसुमे निवडिए चेलुक्खेवेकत्ते दिव्वेगाएगंधव्वतिनायकएयावि होत्था ॥७१॥ ततेणं से कण्हवासुदेवे कलं पाउब्भूए

अर्थ

॥ ६८ ॥ तब गजसुकुमाल अनगार सोमिल ब्राह्मन के ऊपर मन से भी किंचित द्वेष रहित रहे हुवे उस अतिउज्वल वेदना को सहन करने लगे ॥ ६९ ॥ तब गजसुकुमाल अनगार उस उज्वल वेदना को सहन करते हुवे शुभ परिणामकर प्रसस्त अध्यवसाय कर केवल ज्ञान के आभरण (पडल) भूत कर्मों क्षयकिये, कर्म रूपरज दूरकी, अपूर्व करन में प्रवेश किया अनन्त प्रधान यावत् केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुवा, तब फिर सिद्ध हुवे यावत् सर्व दुःख रहित हुवे ॥ ७० ॥ तब तहां नजीक में रहे हुवे देवोंने गजसुकुपाल अनगार को सम्यक प्रकार मार्ग का आराधन कर संसार से पार हुवे जान दिव्य गंधोदक की बृष्टी की पांच वर्ण के फूलोंकी बृष्टीकी,वस्त्रोंकी बृष्टि की,दिव्य गंधर्व गीत गानका नाद करने लगे॥७१॥तब वे कृष

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव जलंते ण्हाए जाव बिभूसित्ते हत्थिखंधवरगाए, सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं, सेतवर चामरोहिं उधुव्वमाणाहिं २, महत्ताभडचडगपहकरवंद परिक्खित्तेणं वारवातिणगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारत्थमाणाए ॥ ७२ ॥ ततेणं से कण्हवासुदेवे वारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिगच्छमाणा एगं पुरिसंपासति जुण्णं जरा जज्जरियदेहं जाव कलिय महया महालयाओ इट्टगरासिओ एगमेगं इट्टगं गहाए बहिया रथपहातो अंतोगिहं अणुप्पविसेमाणं पासइ २ त्ता ॥ ७३ ॥ तएणं से किण्ह वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंप्पेणट्टाते हत्थिखंधवर-

अर्थ

वासुदेव प्रातःकालहुवे यावत् जाज्वल्यमान सूर्यप्रगट हुवे, स्नानक्रिया यावत् विभूषित हुवे, हस्ति के स्कन्धपर आरूढहो कोरंट वृक्षकी मालाका छत्र धराते हुवे, श्वेत चमरवींजाते हुवे महा चेटकों सुभटों पायदलों के वृन्द से परिवरे हुवे द्वारका नगरी के मध्य मध्य में हो अरिष्टनेमीनाथ के पास जाने को मार्ग क्रमण करने लगे ॥ ७२ ॥ तब कृष्ण वासुदेव द्वारका नगरी के मध्य मध्य में हो निकलते हुवे एक पुरुष को देखा, वह पुरुष शरीर कर जीर्ण हुवा, वयकर वृद्ध हुवा, जरजरित देहवाला वह एक महा जबर बडे विस्तार वाला इंटके ढग में से एकेक ईट उठकर, बाहिर राज्यपंथ से लेकर अन्दर अपने घर में रखना था, इस प्रकार उसे देखा, देखकर ॥ ७३ ॥ तब कृष्ण वासुदेव उस की अनुकम्पा-दया के लिये हस्ति के स्कन्ध

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गतेचेव एगंइंट्टि गिण्हइ २ त्ता बहिया रत्थपहाओ अंतोगिहं अणुप्पाविस्सति ॥७४॥ तएणं से कण्ह वासुदेवेणं एगाइंट्टि गाहितेया समाणाते अणेगाहिपुरिसेहिं तंहिं रासि बहियारथा होता पहातो अंतोघरंसि अणुप्पविसिते ॥ ७५ ॥ तत्तेणं से कण्ह वासुदेवे वारवतिणयरीए मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ २ जाव वंदिती नमंसति, वंदिता नमंसिता गयसुकुमाल अणगारं अप्पासमाणे अरहं अरिट्ठनेमी वंदिता नमंसिता एवं वयासी-कहणं भंते ! ममसहोदरे कणीया साभाय गयसुकुमालेअणगारे, जेणं अहंवदामि नमंसामि ?

अर्थ

पर रहे हुवे ही, एक इंट ग्रहण की, ग्रहण कर बाहिर राज्यपंथ से लेकर उसके घर में स्थापन की ॥७४॥ तब उन कृष्ण वासुदेवने एकइंट ग्रहण कियेबाद उनके पीछे अनेक गणपुरुष रहे हुवे थे उनोंने एकेक ईंट ग्रहणकर बाहिर राज्यपंथमे उठाकर अन्दरके घरमें स्थापनकी॥ ७५॥तब कृष्णवासुदेव द्वारका नगरी के मध्य में होकर जहां अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ थे तहां आये, आकर यावत् वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर गजसुकुमाल अनगार को नहीं देखते हुवे, अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—अहो भगवन् ! मेरा सहोदर छोटा भाइ गजसुकमाल अनगार, कहां है, ? जिन को मैं वंदना

सूत्र

॥ ७६ ॥ तत्तेणं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी-साहितेणं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठो ॥७७॥ तएणं से कण्हवासुदेवे अरहा अरिट्ठनेमि एवं वयासी-कहण्हं भंते ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहित्त अप्पणा अट्ठो? ॥७८॥ तत्तेणं से अरहा अरट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी-एह खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममकलपुव्वावरण्ह कालसमयंसि वंदंति नमसंति वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-इच्छामि जाव उवसंपाज्जित्ताणं विहरंति । ततणं ते गयसुकुमालं अणगारे एगपुरिसे पासति २ त्ता जाव सिद्धे, ॥ ७९ ॥ त एव खलु कण्हा ! गयसुकुमालणं

अर्थ

नमस्कार करूं ॥ ७६ ॥ तब अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से यों बोले—हे कृष्ण ! गजसुकुमाल अनगारने अपना अर्थ-कार्य पूर्ण किया ॥ ७७ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ से यों बोले—अहो भगवन् ! किस प्रकार गजसुकुमाल अनगारने अपना अर्थ पूर्ण किया ? ॥ ७८ ॥ तब अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से एसा बोले-यों निश्चय, हे कृष्ण ! गजसुकुमाल अनगार कल दो पहर के वक्त मझे वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले—अहो भगवन् ! मैं चहाता हूं यावत् एक दिन की भिक्षुक की प्रतिमा अङ्गीकार कर विचरना यावत् विचरने लगे. तब उन गजसुकुमाल अनगार को एक पुरुषने देखा देखकर यावत् साहाय दिया जिस से वे सिद्ध बुद्ध पारांगत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठो ॥ ८० ॥ तत्तेणं से कण्हवासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमी एवं वयासी-से केण भंते ! पुरिसे अपात्थिय पात्थिया जाव परिवज्जते, जेणं ममं सहोदरे काणियस्सभाए गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवतातोव-वरोवेति ? ॥ ८१ ॥ तएणं से अरहा अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवेण एवं वयासी-कण्हा ! तुम तस्स पुरिसस्स पदोसए मावज्जाहि एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जेहिं ॥ ८२ ॥ कहेणं भंते ! से पुरिस गयसुकुमालस्स साहिज्जेदिणे ? ॥ ८३ ॥ तत्तेण अरहा अरिट्ठनामि कण्हवासुदेवं एवं वयासी-सेणूणं

अर्थ

हुवे. ॥ ७९ ॥ हे कृष्ण ! इस कारन मे निश्चय, गजसुकुमाल अनगारने अपना अर्थ पूर्ण किया ॥ ८० ॥ तब कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ से यों कहने लगे—अहो भगवन् ! वह पुरुष अप्रार्थिक का प्रार्थिक [मृत्यु का इच्छक] यावत् लज्जा रहित जिसने मेरा सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल अनगार को अकाल में जीवित रहित किये—मारे वह कौन है ? ॥ ८१ ॥ तब अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से यों कहने लगे—हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष पर द्वेष भाव मत करो परंतु हे कृष्ण! यह पुरुषने तो गजसुकुमाल अनगार को साहायदेने वाला है ऐसा जानो॥८२॥ कृष्ण बोले—अहो भगवान्! किस प्रकार उस पुरुषने गजसुकुमाल अणगारको साहायदिया ? ॥८३॥ तब अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कण्हा ! तुमं मम पाएवंदणं हव्वमागच्छमाणे वारवतिए णयरिए एगपुरिस तं पासति जाव अणुपवितिति, जहणं कण्हा ! तुम्ह तस्स पुरिसस्स साहज्जेदिणे, एवामेव कण्हा! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसहस्स संचियं कम्मं उदीरमाणेणं बहुकम्म णिज्जरत्थं साहिज्जं दिण्णे ॥ ८४ ॥ तत्तेणं से कण्हवासुदेवे अरहं अरिठ-नेमिं एवं वयासी-सेणं भंते ! पुरिसे मएकहं जाणित्ते ? ॥ ८५ ॥ तत्तेणं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-जणं कण्हे! तुमं वारवतिणयरीए अणुप्पवेसमाणे पासित्ता ट्ठितेचेव ट्ठितिभेदेणं कालं करिस्संति, तेणं तुमं जाणिसामी एसणं पुरिसे॥ ८६ ॥

अर्थ

वासुदेव से ऐसा बोले—यों निश्चय हे कृष्ण ! तुम मेरे पांव वंदन करने शीघ्र आते हुवे द्वारका नगरी में एक पुरुष को देखा, यावत् अनुकम्पा कर तुमने उस पुरुष को साहायदिया (ईंटों उठाकर घर मे धराकर उन के फेरे मिटाये) इस ही प्रकार हे कृष्ण ! उस पुरुषने गजसुकुमाल अनगार को अनेक सहश्रों भव में संचित किये हुवे कर्म की उदीरणा करके बहुत कर्मों की निर्जराकी भव भ्रमण मिटाया, यह साहायदिया ॥ ८४ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ से ऐसा बोले-अहो भगवान ! उस पुरुष को मैं किस प्रकारपेछानू?॥८५॥तब अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ, कृष्ण वासुदेव से ऐसा बोले—हे कृष्ण ! जब तुम द्वारका नगरी में प्रवेश करोगे तब तुमको देखकर धस्काकर जमीनपर गिरपडेगा, स्थितिका भेद होने से कालपूर्ण

सूत्र

ततेणं कण्हवासुदेवे अरहा अरिट्ठनेमी वंदंतित्ता नमंसंति जेणेव अभिसेय हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ हत्थिरयणं दुरूहइ २ त्ता जेणेव बारवतिनयरी जेणेव सएगिहे तेणेव पाहरेत्थगमणाए ॥ ८७ ॥ तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स कलं जाव जलंते अयमेवरूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्थे—समुप्पने एवं खलु कण्ह वासुदेवे अरहा अरिट्ठणेमी पाए वंदए निग्गाए, तं णियमेयं अरहतो विणीयमेयं, अरहंतो सुयमेयं, अरहंतो सिद्धमेयं, अरहंतो भविस्सामि ते कण्हवासुदेवस्स तं ननिज्जातिणं कण्हवासुदेवे ममं केणइ कुनारेणं नारिसति त्तिकट्टु, भीता तत्था तसिया, सयातो

अर्थ

करेगा—मरजावेगा, उसी पुरुष को तुम जानना ॥ ८६ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर जहां अभिशेष हस्ति रत्न था तहां आये, आकर हस्ति रत्न पर आरूढ हुवे, आरूढ होकर जहां द्वारका नगरी जहां स्वयं का घर वहां आने के पंथ में गमन करने लगे ॥ ८७ ॥ तब उस सोमिल ब्राह्मण को प्रातःकाल होने यावत् जाज्वल्यमान सूर्योदय होते इस प्रकार अध्यवसाय यावत् समुत्पन्न हुवा—यों निश्चय कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पांव वंदने को गए हैं तो निश्चय अरिहंत जानते हैं, अरिहंत सुनते हैं, अरिहंत के यह बात सिद्ध है, अरिहंत भविष्यज्ञ हैं, वे कृष्ण वासुदेव को कहेंगे तो, न जानू कृष्ण वासुदेव मुझे किस कुमृत्यु कर मारेंगे, ऐसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गिहातो पडिणिक्खमइ २ त्ता कण्हवासुदेवे बारवतिए णयरिए अणुपविसमाणस्स पुरतोसपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागते ॥ ८८ ॥ तत्तेणं से सोमिले माहणे कण्हवासुदेवं सहस्सापहंसिम पासित्ता भित्ते ४ ठत्तएचेव ठिति भेदेणं कालं करेति धरणितलंसि सव्वंगाही धसति संनिवडिते ॥ ८९ ॥ तत्तेणं से कण्हवासुदेवे सोमिलमाहणस्स पासइ २ त्ता एवं वयासी-एसणं भोदेवाणुप्पिया ! सोमिलेमाहाणे अपत्थिय, पत्थिया आव परिवज्जिए, जेणेव मम सहोदर काणियभाया गयसुकुमाले अणगारे अकालेचेव जीवियाओ विवरोवेति, तिकट्टु सोमिलमाहणं पाणेहिं कड्ढावेति, से भूमीपाणएणं

अर्थ

विचार कर, भयभ्रान्त हुवा, त्रास पाया, अपने घर से निकला, निकलकर कृष्ण वासुदेव द्वारका नगरी में प्रवेश करते थे उनके सन्मुख सपक्ष खुल्ला आगया॥८८॥ तब सोमिल कृष्णवासुदेव को रास्ते में देखे, देखकर भयभ्रान्त हुवा, धेमाकर धस्कपडा ।स्थिति भेद हो काल किया सर्वांग से धरनी पर गिरपडा॥ ८९ ॥ तब कृष्ण वासुदेव सोमिल ब्राह्मण को देख ऐसा बोले—यही है. अहो देवानुप्रिय ! सोमिल ब्राह्मण अप्रार्थिक का प्रार्थिक यावत् लज्ज रहित, इसने ही मेरा सहोदर छोटा भाई गजसुकुमाल अनगार को अकाल में जीवित रहित किया ? ऐसा कहकर सोमिल ब्राह्मण के शरीर को चंडालों के पास घिसवाकर फेंकवा-

सूत्र

अभूक्खावेति २, जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयंगेहे अणुपविट्ठे ॥ १० ॥ एवं खलु जंबु ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अंतगड दसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णते ॥ अट्ठमं ज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ८ ॥ नवमस्स उवओ--एवं खलु जंबु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवतीय नयरीए जहा पढमसए जाव विहरति ॥ १ ॥ तत्थणं वारवतिए णयरिए बलदेवे नामं राया होत्था वण्णओ ॥ २ ॥ तस्सणं बलदेवस्सरन्नो धारणीनामं देवी होत्था वण्णओ ॥ ३ ॥ तएणं साधारणी सिह सुमिणे जहा गोयमे, णवरं सुमुहकुमारे, पण्णासं

अर्थ

दिया. उस भूमी को पानी का सींचन कराया, जहां अपना घर था तहां आये, आकर प्रवेश किया, रहने लगे ॥१०॥ यों निश्चय है जम्बु श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी मोक्ष पधारे उनोंने अंतकृत दशांग का तीसरे वर्ग के आठवे अध्याय का यह अर्थ कहा. इति तीसरा वर्ग का आठवा अध्याय संपूर्ण ॥ ३ ॥ ८ ॥ नववा अध्याय---यों निश्चय. हे जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारका नाम की नगरी थी, और सब अधिकार जैसा प्रथम गौतम कुमार का कहा तैसा सब यहां जानना, यावत् नेमीनाथ भगवान पधारे विचरने लगे ॥ १ ॥ उस द्वारका नगरी में बालदेव नाम के राजा थे, वर्णन् योग्य ॥ २ ॥ उन बलदेव राजा के धारणी नाम की राणी थी वर्णन् योग्य ॥ ३ ॥ तब धारिणी राणीने सिंह का स्वप्न देखा और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कण्णातो, पण्णसउदातो, चउद्दस्स पुव्वाइं आहिज्जति, वीसंवासाइं परियाइं पाउणित्ता, सेसं तंचेव जाव सेतुजय सिद्धा ॥ ४ ॥ निक्खेवओ-एवं दुमेहवी, कूवएवि, तिण्णावि बलदेवे धारिणीसूया ॥ ५ ॥ दारुएवी एवंचेव, णवरं वासुदेव धारिणीसूए ॥ ६ ॥ एवं अणाहिट्ठावि वासुदेव धारिणीसुते तहेव ॥ ७ ॥ एवं खलु जंबु ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड दसाणं तच्चस वगस्स तेरस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ इति तच्चवग्गस्स तेरे अज्झयणा सम्मत्तं॥९॥१३॥ तच्चवगो सम्मत्तो ॥३॥

अर्थ

सब कथन गौतम कुमार जैसा, जिस में इतना विशेष—सुमुख कुमार नामदिया, पांच सो कन्यापरनाइ, पांच सो दात दी, चौदह पूर्व का ज्ञान पढे, वीस वर्ष दीक्षा पाली, शेष तैसे ही यावत् शत्रुंजय पर सिद्ध हुवे॥४॥ निक्षेप—ऐसे ही दुमुख कुमार भी, कुवेर कुमार भी, तीनों बलदेव और धारणी के पुत्र ॥ ५ ॥ दारू कुमार भी ऐसे ही, विशेष में वासुदेव धरणी के पुत्र ॥ ६ ॥ ऐसे अनादृष्टी कुमार भी वासुदेव धारणी के पुत्र तैसे ही ॥ ७ ॥ यों निश्चय. हे जम्बू ! महावीर स्वामीने अंतगड के तीसरे वर्ग के तेरे अध्याय का यह अर्थ कहा ॥ ३ ॥ ९—१३ ॥ इति तीसरा वर्ग समाप्तम् ॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ चतुर्थ-वर्ग ॥

जतिणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पन्नत्ता, चउत्थस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कतिअज्झयणा पण्णत्ता ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा-जालि, मयालि, उवयालि, पुरिससेणेय, वारिसेणेय, पज्जुणसेणेय, संवे, अनिरुद्धे, सच्चनेमीय, दढनेमेय, ॥ जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स केअट्ठे पण्णत्ते ॥ एवं खलु जंबू !

अर्थ

यदि अहो भगवान ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् मुक्तिगये उनोने तीसरे वर्ग के तेरे अध्यायन कहे, अंत कृत दशांग के चौथे वर्ग के कितने अध्यायक हे हैं ॥ ७ ॥ यों निश्चय हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोने चौथे वर्ग के दश अध्याय कहे, उन के नाम-१ जाली कुमरका, २ मयाली कुमर का ३ उव्वाली कुमर का, ४ पुरिससेन कुमर का, ५ वारिषेन कुमार का, ६पद्युन कुमारका, ७सांव कुमारका, ८ अनिरुद्ध कुमार का, ९ सत्यनेमी कुमरका और १० दृढनेमी कुमरका ॥ यदि अहो भगवान् श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त हुवे उनोने चउथे वर्ग के दश अध्याय कहे, तो प्रथम अध्याय का क्या अर्थ कहा ? ॥ यों निश्चय हे जम्बू ! उसकाल उस समय में द्वारका नगरी, इसका कथन प्रथम गौतम कुमर के अध्ययन जैसा यावत् कृष्ण

सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवत्ती ; णयरीए. सेसे जहा पढमे, जाव कण्हवासुदेवे. आहेवच्चं जाव विहरति ॥ तत्थणं बारवत्तीए णयरीए वसुदेवेराया धारणीदेवी वणवो, जहा गोयमे नवरं जालिकुमारे, पणासातोदाओ, बारसंगी, सोलसवासा परियापालइ, सेसं जहा गोयमस्स, जाव सतुंजे सिद्धे ॥ एवं मयालिओ, उवयालिओ, एवं पुरिससेणय, एवं वारिसेणय, एवं पज्जुणे, नवरं कण्हसेपिता, रुप्पिणेसेमाता । एवं संबेवि, णवरं कण्हसेपिता, जंबूवातिमाया । एवं अनिरुद्धेवि, णवरं पज्जणेपिता, वेदरब्भीमाया । एवं सच्चनिमिवि णवरं समुद्दविजयपिता सिवामाया, एवं दढनेमिवि ॥ सव्व गमोएगचेव ॥ इति चउत्थस्स वग्गस्स दसज्झयणा ॥४॥१०॥ चउत्थो वग्गोसमत्तो॥४॥

अर्थ

वासुदेव राजाराज करते विचरते थे॥२॥तहां द्वारका नगरीमें वसुदेव राजा धारणीराणी रहते थे. जैसे गौतम कुमार हुवा तैसे ही जाली कुमार हुवा यावत् शत्रुंजयपर सिद्ध हुवा ॥ ३ ॥ ऐसे ही मयाली कुमार हुवा ऐसे ही.उवजाली कुमार का भी,ऐसे पुरिषसेन कुमरका भी, ऐसेही वारीसेन कुमारका भी.॥ ऐसे ही पद्युकुमार का जिस में इतना विशेष-कृष्णजी पिता, रुकमनी माता ॥ ऐसे सांब कुमर का भी जिस में इतना विशेष कृष्णपिता जाम्बुवती माता. ॥ ऐसे ही अनिरूद्ध कुमारका भी विशेष में प्रद्युम्न कुमार पिता,वेदर भी माता ॥ऐसेही सत्यनेमी कुमारका विशेष में—समुद्र विजय पिता, शिवादेवी माता और ऐसे ही दढनेमी कुमारका भी, सब का एक सरिखा अधिकार जानना ॥ इति चौथे वर्ग के तेरे अध्ययन और चौथा वर्ग समाप्त ॥ ४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पञ्चम-वर्ग ॥

सूत्र

जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्सणं भंते वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥ एवं खलु जंबु! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणं पण्णत्ता तंजहा पउमावइ, गोरी, गंधारी, लक्खमणा, सुसीमाए, जंबूवती, सच्चभामा, रुप्पणी, मूलसिरी, मूलदत्तावि ॥ २ ॥ जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ३ ॥

अर्थ

यदि अहो भगवान! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी मोक्ष पधारे उनोने चउथा वर्ग का उक्त अर्थ कहा, अहो भगवान! अंतग उदाशा के पंचवे वर्ग का क्या अर्थ कहा है! ॥१॥ यों निश्चय हे जम्बु! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोने पांचवे वर्ग के दश अध्यायन कहे हैं, उन के नाम १ पद्मावतिरानीका २ गोरीरानीका ३ गंधारीरानी का, ४ लक्ष्मनारानी का, ५ सुसमारानी का, ६ जम्बुवतिरानी का, ७ सत्यभामारानी का, ८ रुक्मिनी रानीका (यह ८ कृष्णजीकी अग्रमेहषी) ९ मूलश्रीरानीका, और १० मूलदत्तारानीका ॥२॥ यदि अहो भगवान! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोने पांचवे वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, तो अहो भगवान! प्रथम अध्याय का क्या अर्थ कहा है? ॥ ३ ॥ हे जम्बु! उस काल उस समय में द्वारका नगरी, इस का

सूत्र

एवं खलु जंबु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवतिए नयरीए जहा पढमेए जाव कण्हवासुदेवे अहे बच्चं जाव विहराति ॥ ४ ॥ तस्स कण्हवासुदेवस्स पउमवति नामं देवी होत्था वण्णओ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जाव समोसढे जाव विहरति ॥ ७ ॥ कण्ह निग्गते जाव पज्जुवासति ॥ ७ ॥ तत्तेणं सा पउमावति देवी इमीसेकहा लद्धट्ठसमाणा हट्ठे जहादेवइ जाव पज्जुवासंति ॥ ८ ॥ तएणं अरहा अरट्ठनेमी कण्ह वासुदेवस्स पउमावइए देवीए जाव धम्मकहाए परिसा पडिगया ॥ ९ ॥ तएणं से कण्हे अरहा अरिट्ठनेमी वंदइ नमंसइ, वंदित्ता

अर्थ

वर्णन प्रथम अध्याय के जैसा जानना यावत् कृष्ण वासुदेव अधिपति पना करते विचरते थे ॥ ४ ॥ उन कृष्ण वासुदेव के पद्मावती नामकी रानी थी वर्णन योग्य ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में अरिहंत अरिष्ठ नेमनाथी यावत् यावत् पधारे यावत् विचरने लगे ॥६॥ कृष्ण वासुदेव और परिषद् वंदने आई यावत् सेवा भक्ति करने लगी॥७॥तब पद्मावती रानी को यह कथा प्राप्त होने से हृष्ट तुष्ट हुई जिसप्रकार देवकी रानी वंदनेगई तैसे यह भी यावत् सेवा करने लगी॥८॥अर्हंत अरिष्टनेयी कृष्णवासुदेव पद्मावती को यावत् धर्म कथा सुनाई परिषदा पीछी गई ॥ ९ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान को वंदना नमस्कार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

नमंसित्ता एवं वयासी इमीसेणं भंते ! बारवतिए णयरीए णवजोयणं विच्छिन्ना जाव पच्चक्खदेवलोक भूताए किं मूलाए विणीसे भवस्सइ ॥ १० ॥ कण्हाइ अरहा अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवतिएनयरीए नव-जोयण विच्छिन्ना जाव देवलोकभूयाए सूयग्गी दीवायणमूला ते विणासे भविस्सइ ॥ ११ ॥ कण्हवासुदेवस्स अरहा अरिट्ठनेमीस्स अंतिए एयमट्ठंसोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने-धन्नेणंते जाली, मयाली, उवयाली, पुरिससेण, वारीसेण, पज्जुण, संब, अनिरुद्धे, सच्चनेमी, दढनेमी पभत्तीओ कुमारा जेणं चिच्चाहिरणं जाव

अर्थ

करके यों पूछने लगे—अहो भगवन् ! द्वारका नगरी नव योजन की चौडी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी इस का किस कारन से विनाश होवेगा ? ॥ १० ॥ कृष्णादि, आरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से यों बोले—यों निश्चय, हे कृष्ण ! यह द्वारका नगरी नव योजन की चौडी यावत् देवलोक जैसी अग्नि कुमार देवता दीपायरूषी मरकर होगा उस के योग्य से इस का विनाश होगा ॥ ११ ॥ कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवन्त के मुख से उक्त अर्थ श्रवण कर इस प्रकार विचार करने लगे—धन्य है जाली. मयाली, उज्वाली, पुरिषसेन, बारीसेन, प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरुद्ध, सत्यनेमी तथा दृढ नेमी प्रमुख कुमारों को कि जिनोंने हिरणादि (चांदी प्रमुख) का त्याग कर यावत् विभाग बांटकर अरिहंत अरिष्ट

सूत्र

परिभाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमीस्स अंतियंमुडे जाव पव्वइया॥ १ २॥अहणं अधणे अकयपुणे रज्जेय जाव अंतेउरिय माणुस्सएसुय कामभोगेसु मुच्छित्ते ४ नोसंचाएमी, अरहतो अरिट्ठनेमी जाव पव्वइत्तवे॥ १ ३॥ कण्हाति अरह अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी-सेणूणं कण्हे! तव अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पणे-धन्नेते जाव पव्वइए सेणूणं कण्हा ! अट्ठेसमट्ठे ?हंता अत्थि॥ १ ४॥ तंनो खलु कण्हा एवं भूयंवा भवंता भविस्सइवा जणंवासुदेवा चइत्ताहिरणं जाव पव्वइसाति ॥ १ ५ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ न एवं भूयं जाव पव्वइ-स्सई ? कण्हति अरहा अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा!

अर्थ

नेमीनाथ भगवान के पास दीक्षा धारन की ॥१२॥ मैं अधयन्य हूं अकृत अपुण्य हूं यावत् अन्तपुर में मनुष्य सम्बन्धी काम भोग में मूर्च्छित हो रहा हुं, यावत् गृद्ध बनाहु इस से अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पास यावत् दीक्षालेने समर्थ नहीं हूं॥ १३ ॥ कृष्ण ! अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ भगवान कृष्ण वासुदेव से ऐसा बोले—हे कृष्ण ! तेरे को इस प्रकार अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवे धन्य है जाली आदि कुमार को यावत् जिनोंने दीक्षा धारन की ? कृष्ण बोले—हां भगवान ! सत्य है, ऐसा विचार मुझ हुवा ॥ १४ ॥ हे कृष्ण ! निश्चय ऐसा हुवा नहीं होता, भी नहीं, और होवेगा भी नहीं कि कभी वासुदेव हिरन्यादि का त्यागकर दीक्षा ग्रहण करे ॥ १५ ॥ अहो भगवान ! वह किस लिये ऐसा कहा कि ऐसा न हुवा

सूत्र

सव्वेवियणं वासुदेवा पुव्वभवे नियाणकडा से तेणं अट्ठेणं कण्हा एवं वुच्चइ एवं नएवंभूयं जाव पव्वइस्सति ॥ १६ ॥ तत्तेणं कण्हवासुदेवं अरहं अरिट्ठनेमी एवं वयासी—अहणं भंते ! इओ कालमासे कालंकिच्चा कहिं उववज्जिस्सामि ? ॥ १७ ॥ ततेणं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हवासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्ह ! तुमं बारवतिए णयरिए सुरिग्गी दीवायणे कोविनिट्ठाए अम्मापियरो णियग्गावि पहुणे रामेणं बलदेवेणं सद्धिं दाहिणे वेयोलियमिमूहे जुंहिट्ठिल पामोक्खाण पंचण्हं पंडवाणं

अर्थ

नहोता है और नहोवेगा कि वासुदेव दीक्षाले ? ॥ कृष्णदि ! अरहन्त अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से ऐसा बोले—यों निश्चय हे कृष्ण ! सब ही वासुदेव पूर्व भव में नियाणा करते हैं, उस लिये हे कृष्ण ! ऐसा कहाकि—वासुदेव नतो दीक्षाली है नेलेत हैं और नलेसवेगे ॥ १६ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथसे ऐसा कहा अहो भगवान ! मैं यहांसे कालके अवसर काल करके कहां जावूंगा ? ॥ १७ ॥ तब अर्हन्त अरिष्टनेमीनाथ कृष्णवासुदेव से ऐसा बोले यों निश्चय है कृष्ण? तुम द्वारका नगरी अग्निकुमार देवता दीपायन के जीवसे प्रज्वलित होने से मातपिताको लेकरजाते उन का मृत्यु हुवे रामबलदेव के साथ दक्षिण दिशा समुद्र की वेल आवे उधर युधिष्टर प्रमुख पांच पंडवों पांडुराजा के पुत्रों के पास पांडुमथुरा को जाते रास्ते में कोसंबीवन में निग्रोध (बड) के वृक्ष के नीचे पृथ्वीसिला पटपर पितांबर से अच्छादित

सूत्र

पंडूराय पुत्ताणं पासं पंडूमहुरं सपात्थिते कोसंबकाणेणं नगोहवरपायस्सअहे पुढवि सिलापट्टए पियएवछाईयसरीरे जराकुमारे तिक्खणंकोडंडविप्पमुक्केणं उसूणा वामेपादे विद्धंसमाणे कालमासेकालंकिच्चा तच्चाए वालुप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए-त्ताए उववज्जिहिसि ॥ १८ ॥ तएणं से कण्हवासुदेवे अरहा अरिट्ठनेमी अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहयं जाव झियाइं ॥ १९ ॥ कण्ह ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हेवासुदेवेणं एवं वयासी माणं तुम्ह देवाणुप्पिया ! उहया जाव झियाहि । एवं खलु तुम्हं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढविओ उज्जलित्तए नरयाओ अणंतरं उवट्टित्ता

अर्थ

शरीर से जराकुमार के तीक्षण धनुष्य से बाण मुक्त किये वह बाण दांयें पांवको विन्धनेसे काल के अवसर काल करके तीसरी वालुप्रभा पृथ्वी में उज्वल वेदना में नरक में नेरीयेपने उत्पन्न होवोगे ॥ १८ ॥ तब कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के मुख से उक्त अर्थ श्रवण कर अवधारकर चिन्ता ग्रस्त बनें यावत् आर्तध्यान ध्याने लगे ॥ १९ ॥ कृष्ण ! अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ कृष्ण वासुदेव से यों कहने लगे—हे देवानुप्रिय ! तुम चिन्ता मत करो, यावत् आर्तध्यान मत ध्यावो. यों निश्चय तुम हे देवानुप्रिय ! तीसरी नरक की उज्वल वेदना भोगवकर तीसरी नरक से निकल कर अन्तर रहित

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे णयरे बारसमो अममोनामं अरहा भविस्सइ, तस्थणं तुम्हं बहुइं वासाइं केवल परियागं पाउणित्ता सिज्झिहिस्सि॥ २०॥ तत्तेणं कण्हवासुदेवे अरहतो अरिट्ठनेमी अंतिएतो एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हठतुट्ठे अप्फोडति २ बगाइ २ त्ता, तिवंछदंति २ त्तासीहणायं करेइ, अरहं अरिठ नेमी वंदित्तं नमंसित्ता तामेव अभिसेकं हत्थि रयणं दुरुहइ २ त्ता जेणेव बारवतिएणयरिए जेणेव जाव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तामेव अभिसेकं हत्थि राणयओ पच्चोरुहइ

अर्थ

इस ही जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आगमिक उत्सर्पिणी काल में पांडुदेस में शतद्वारा [सो द्वारवाली] नगर में बारवे आमम नाम के अरिहंत होवेगे, तहां तुम बहुत वर्ष केवल पर्याय का पालनकर यावत् सिद्ध होवेंगे ॥ २० ॥ तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ भगवंत के पास उक्त अर्थ श्रवनकर अवधारकर हृष्ट तुष्ट हुवे साथल से हाथ स्फोट किया, स्फोटकर हर्षमय शब्दोचारकिया, शब्दो चार कर, उस तिव्र दुःख का छेदन किया, छेदन कर सिंह नाद किया अरिहंत नेमीनाथ को वंदना नमस्कार कर उस ही अभिशेष हस्ति रत्न पर स्वार हुवे, स्वार होकर जहां द्वारका नगरी, जहां स्वयंका घर था, तहां आये, आकर अभिषेक हस्ति रत्न से नीचे उतरे, उतर कर जहां बाहिर की उपस्थानशाला, राज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

२ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सिंहासणे तेणेव उवागच्छइ २त्ता सीहासणंवरंसि पुरत्थाभिमूहे निसीयइ २ त्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुमे देवाणुप्पिया ! वारवतिए नयरिए सिंघाडग जाव घोसेमाणे एवंवदह—एवं खलु देवाणुप्पिय ! वारवत्तिणयरिए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए सुरग्गि दीवायण मूलाए विणासे भविस्सति, तं जेणं देवाणुप्पिया! इच्छंति वारवातिय णयरीए रायाव ईसरे माडंविए कोडंबिय इब्भसेट्ठींवा सेणावइवा देविवा कुमारोवा अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए, तत्तेणं कण्हे वासुदेवे विसज्जते ! पच्छा तुरस्स

अर्थ

सभा थी तहां आये, आकर सिंहासन पर पूर्वाभिमुख बैठे, बैठकर कौटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगे—जावो तुम हे देवानुप्रिया ! द्वारका नगरी में त्रीवट चौवट यावत् उद्घोषनाकरते हुवे ऐसा कहो—यों निश्चय हे देवानुप्रियाओं ! द्वारका नगरी नव योजन की चौडी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक जैसी अग्निकुमार देवता दीपायन का जीव उस के योग्य से विनाश होवेगा, इस लिये जिस की इच्छा होवे द्वारका नगरी के रहीस राजा ईश्वर माडंबिक कुटुम्बिक ईभपति शेठ सेनापति राणीयों कुमरों आदि वे अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पास मुण्डित हो दीक्षा ग्रहणकरो, उन को कृष्णवासुदेव आज्ञा देता है

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

त्रियस्से अहपज्जिति अणुजाइहत्ताए, महत्ताइड्डी सक्कार समुदएणं तीसेनिक्खमणं करेइ, दोच्चंपि तच्चंपि घोसेणं घोसेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥ २१ ॥ तत्तेणं कोडुंबिय जाव पच्चप्पिणंति ॥ २२ ॥ तत्तेणं पउमावइं अरहंतो अंतिए धम्मंसोच्चा निसम्महट्ठा जाव हियया, अरहं अरिट्ठ नेमीवंदति णमंसति एवं वयासी-सद्दाभिणं भंते! निग्गंथे पावयणे, से जहेय तुब्भेवदह, जं णवरं देवाणुप्पिया! कण्हवासुदेवस्स

अर्थ

उन का पीछे जो कुटुम्ब रहेगा उस की चिन्ता उस का निर्वाह कृष्ण करेगा और दीक्षा ग्रहण करनेवाले का दीक्षा उत्सव महा ऋद्धि सत्कार समुदाय करके करेगा, इस प्रकार दो वक्त तीन वक्त उदघोषना करो, उद्घोषना कर यह मेरी आज्ञा पीछी मेरे सुपरत करो ॥ २१ ॥ तब कुटुम्बिक पुरुषने उस ही प्रकार उद्घोषना की, करके कृष्ण वासुदेव को आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ २२ ॥ तब पद्मावती देवी अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान के पास धर्म श्रवण करके अवधाकर हर्षसन्तोषपाइ यावत् हृदय में विकसायमान हुई, अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ भगवंत को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी—अहो भगवान ! मेने श्रद्धे हैं निग्रन्थ के प्रवचन जिस प्रकार आपने कहे वे सब सत्य हैं, विशेष इतना ही है कि अहो देवानुप्रिया ! मैं कृष्णवासुदेवको पूछकर देवानुप्रिय के पास मुण्डित होवूंगी-दीक्षा धारन करूंगी॥ भगवंतने कहा हे देवानुप्रिया!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अपुच्छामि तत्तेणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे जाव पव्वयामी ॥ अहा सुहं॥ २३॥ तत्तेणं सा पउमावइदेवी धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ २ त्ता जेणेव बारवतिणयरिए जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मियातो जाणप्पवरातो पच्चरुहइ, जेणेव कण्हवासुदेव तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलकट्टु कण्हवासुदेवे एवं वयासी-इच्छामिणं देवाणुप्पिए ! तुब्भेहि अब्भणु णायासमाणा अरहतो अरिठनेमीस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वयाइं ॥ आहासुहं ॥ २४ ॥ तत्तेणं से कण्हवासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिए ! पउमावइए महत्थ ३

अर्थ

सुख होवे सो करो. ॥ २३ ॥ तब पद्मावती देवी धार्मिक रथ पर स्वार होकर जहां द्वारका नगरी थी जहां स्वयं का घर था तहां आई, तहां आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी, नीचे उतर कर, जहां कृष्ण वासुदेव थे. तहां आई, आकर हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव से ऐसा बोली—अहो देवानुप्रिय ! आपकी आज्ञा हो तो मैं अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ के पास मुण्डित हो दीक्षा धारन करूं ? तब कृष्ण वासुदेवने कहा—जैसे सुख हो वैसा करो ॥ २४ ॥ तब कृष्ण वासुदेव कौटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर कहने लगे—हे देवानुप्रिय ! शाघ्रतासे पद्मावती देवीका महा अर्थवाला बहुमूल्य बहुत खरचवाला दीक्षा अभिषेक उपस्थापो, यह मेरी आज्ञा पीछी मेरे सुपरत करो. कौटुम्बिक पुरुषने वैसा ही काम करके

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निखंममाणे भिसेयं उवट्ठवेहि ॥ एवमाणत्तीयं जाव पच्चप्पिणंति ॥ २५ ॥ तत्तेणं कण्हवासुदेवे पउमावइदेवी पट्टयंसि दुरुहइ २ त्ता अट्ठसयएणं सोवनकलसं जाव निक्खमणाभिसेएणं अभिसंचइ २ त्ता सव्वालंकार विभूसियं करेइ २ त्ता पुरिस्सं सहस्स वाहणी सिवियां दुरुहइ २ त्ता बारवतिणयरिए मज्झंमज्झेणं निगच्छइ २ त्ता जेणेव रेवएपव्वए जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिवियं ट्ठवेइत्ति पउमावइदेवी सिवातो पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरहं अरिट्ठनेमी तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एसिणं भंते ! मम अग्गमहिसिस पउमावइ नामं देवी मम इट्ठा कंता पिया-

आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ २५ ॥ तब कृष्ण वासुदेवने पद्मावती देवी को पाटपर बैठाई, बैठाकर एक सो आठ सोने के कलश यावत् निक्षमन अभिशेष से सींचन की, सर्व अलंकारों से विभूषित की, विभूषितकर हजार पुरुष उठावे ऐसी शिवका में बैठाइ, द्वारका नगरी के मध्य २ में होकर जहां रेवती पर्वत जहां सहस्त्रम्ब उद्यान था तहां आये, आकर शिविका स्थापन की, पद्मावती शिविका से नीचे उतरी। फिर कृष्ण वासुदेव उसे आगेकर जहां अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ थे तहां आये, आकर अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ को तीन वक्त वंदना नमस्कार किया वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—अहो भगवान! यह मेरी अग्रमहेषी पद्मावती नामकी देवी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मणुणा मणाभीरामा जाव किंमग्गपुण पासणयाए, तेणं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्स णिभिक्खं दलयति, पडिछणं देवाणुप्पिया ! सिस्सणिभिक्खं ॥ अहासुहं ॥ २६ ॥ तत्तेणं सा पउमावइ उत्तर पुरच्छिमे दिसिभागे अवकमंवि, सयमेव आभरणालंकारं उमूयइ २ त्ता सयमेव पंचमुठियं लोयं करेइ २ त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए, अरहं अरिट्ठनेमी वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासीआ-लित्तेणं भंते ! जाव धम्ममातिक्खयं ॥ २७ ॥ तत्तेणं अरहा अरिट्ठनेमी पउमावइदेविं

अर्थ

मुझे इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को अभीराम, यावत् क्या फिर कहां से देखसके ? इस में अहो देवानुप्रिया ! आप को शिष्यनी रूप भिक्षा देताहुं आप इस शिष्यनी रूपभिक्षा को ग्रहणकरो. भगवान के कहा—जैसे सुख उत्पन्न होवे वैसे करो ॥ २६ ॥ तब पद्मावतीदेवी उत्तर पूर्वदिशा के मध्य ईशान कौन में गइ, सर्व अलंकार अपने हाथ सेही उतारे, स्वयं अपने हाथ सेही पंचमुष्टिलोच किया, लोचकर अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ थे तहां आइ, तहां आकर अर्हन्त अरिष्टनेमीनाथ को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! इस संसार में अलीते पलीते लगे हैं, इस से मैं आप के शरण आतीहुं आप ही मुझे दीक्षा दो यावत् धर्म सुनाओ ॥ २७ ॥ तब अर्हन्त अरिष्ट नेमीनाथ

सूत्र

सयमेव पव्वएइ २ त्ता सयमेव मुडावेति २ त्ता सयमेव जक्खणीए अज्जाए सिस्सिणिताए दलयंति ॥ २८ ॥ तत्तेणं सा जक्खणिअज्जा पउमावइदेविं सयमेव पव्वावेइ २ जाव संयमियव्वं ॥ २९ ॥ तत्तेणं सा पउमावइ अज्जा जाया इरिआसमिए जाव बंभगुत्त-यारिणी ॥ ३० ॥ तत्तेणं सा पउमावईअज्जा, यक्खणीए अज्जाते अंतिए सामाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहुइं चउत्थ छट्ठट्ठम विविहं तवोकम्मं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ३१ ॥ तएणंसा पउभावइं अज्जा बहुंपडिपुण्णाइ वीसंवासाइ सामणं परियाइं पाउणित्ति, मासियाए सल्लेहणाइ अप्पाणं झुसेइ २ त्ता सट्ठिभत्ताइं अणस-

अर्थ

पद्मावती देवी को स्वमेव दीक्षादी, स्वयमेव (मन) मुण्डित की, अथवा रज्जोहरणादि उमकरण दिया, स्वयंमेव यक्षनी नाम की बडी आर्जिका की शिष्पनी पने दी ॥ २८ ॥ तब वह यक्षनी आर्जिका पद्मावती देवी को स्वयंमेव प्रवर्जित की—हित शिक्षादी यावत् संयमकर इन्द्रियों का निर्जय करना ऐसा कहा ॥ २९ ॥ तब वह पद्मावती आर्जिका इर्यासमिति युक्त यावत गुप्त ब्रह्मचर्यनी बनी ॥ ३० ॥ तब वह पद्मावती आर्जिका यक्षनी आर्जिकाके पास सामायिक आदि इग्यारे अंग पढी, पढकर बहुत उपवास बेले तेले आदि अनेक प्रकारके तप कर्म कर अपनी आत्मा को भावती हुइ विचरने लगी ॥ ३१ ॥ तब वह पद्मावती आर्जिका बहुत प्रतिपूर्ण बीस वर्ष पर्यन्त साधु की पर्याय का पालन किया, एक महीने की सलेषना की, पाप आत्मा को

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णाए छेदेति, जस्सट्ठाए करेति नग्गभावे मुंडेभावे जाव तंमट्ठं आराहेइ, चरिमुस्सा सेहे सिद्धा ॥ २८ ॥ पंचमवग्गस्स पढमंज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥ १ ॥ +

तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतिए णयरीए रिवयपव्वए णंदणवणे उज्जाणे,॥ १ ॥तत्थणं बारवतिए कण्हवासुदेवेराया ॥ तत्थणं कण्हवासुदेवस्स गोरीदेवी वण्णओ ॥ २ ॥ अरहा अरिट्ठणेमी समोसड्ढे, ॥३॥ कण्हे णिग्गए, गोरी जहा पउमावइ, तहा णिग्गया, धम्मकहा परिस्सा पडिगया ॥ कण्हवि ॥ ३ ॥ तत्तेणं सागोरी जहा पउमावई तहा णिक्खत्ता जाव सिद्धा ॥ ३ ॥ बित्तिय अज्झयणं सम्मत्तं ॥ २ ॥ २ ॥ +

एवं गंधारी, एवं लक्खणा, एवं सुसीमा, एवं जंबवति, सच्चभामा, रुप्पिणी, एवं

अर्थ

झोंसकर साठ भक्त अनशन का छेदकर, जिस लिये उठी थी तपानुष्ठान करती थी नग्नभाव ममत्व रहित पना, मुण्डभाव—कषाय रहितपना कर उस अर्थ का आराधन किया, अन्तिम श्वासोश्वास में सिद्ध हुई. इति पंचम वर्ग का प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥ उस काल उस समय में द्वारका नगरी, रेवतीपर्वत, नंदन वन उद्यान ॥ १ ॥ तहां द्वारका नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा राज करते थे, जिन के गोरी नाम की अग्रमेही राणी थी, उस का वर्णन जानना ॥ २ ॥ अरिहंत अरिष्ट नेमीनाथ भगवान पधारे ॥ ३ ॥ कृष्ण वंदने आये, गोरीराणी भी पद्मावतीराणी की तरह आई, धर्मकथासुनी, परिषदा पीछीगइ, कृष्णजी भी पीछे गये,॥३॥ गोरीराणी भी पद्मावती रानीकी तरे दीक्षाले सिद्ध हुई ॥ इति पंचम वर्ग का दूसरा अध्याय संपूर्ण

सूत्र

अट्ठेवि पउमावइए सरिस्साओ ॥ अट्ठ अज्झयणा सम्मत्ता ॥ ५ ॥ ८ ॥
तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतिए णयरीए रेवयपव्वओ, णंदणवणे, कण्हेवासुदेवे, ॥ १ ॥
तत्थणं बारवइए णयरीए कण्हवासुदेवस्स पुत्ता जंबवतीदेवीए अत्तए संवेणामं कुमारे
होत्था; अहीण ॥ २ ॥ तस्सणं संब कुमारस्स मूलसिरिणामं भारियाहोत्था वणओ
॥ ३ ॥ अरहा अरिट्ठनेमी समोसड्ढे, कण्हणिगाए, मूलसिरिणिगाय, जहा पउमावइ,
जं नवरं देवाणुप्पिया! कण्हवासुदेवं आपुच्छामि जाव सिद्धा ॥ ४ ॥ नवमं अज्झयणं
सम्मत्तं ॥ ५ ॥ ९ ॥ एवं मूल दत्तावि ॥ दशमं अज्झज्झयणं सम्मत्तं ॥५॥१०॥
पंचमोवग्गो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ * * *

अर्थ

॥ ५ ॥ २ ॥ ऐसे ही—गंधारी, लक्ष्मना, सुसुमा, जांबुवती, सत्यभामा, रुक्मनी, इन आठों का एकसा पद्मावती राणी जैसा ही अधिकार जानना ॥ इति पंचम वर्ग अष्टम का अध्याय संपूर्ण ॥ ५ ॥ ३-८ ॥ एसाही अधिकार मूलश्री का भी जानना, जिसमें इतना विशेष-कृष्णवासुदेवका पुत्र जम्बूवतीराणी का अंगजात साब कुमार, जिसकी स्त्री मुलश्री थी, उसने भी पद्मावती की तरह कृष्णकी आज्ञाले दीक्षाली यावत् सिद्धहुई॥ इति पंचम वर्ग का नवम अध्याय संपूर्ण ॥ ५ ॥ ९ ॥ मूलश्री के जैसाही सब अधिकार मूलदत्ता का भी जानना ॥ इति पंचम वर्ग का दशम अध्याय संपूर्ण ॥ ५ ॥ १० ॥ इति पंचम वर्ग समाप्त ॥ ५ ॥

सूत्र

* षष्टम्-वर्ग *

जइणं भंते! छट्ठस्स उक्खेवओ, णवरं सोलस्स अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-मकाइ, त्रिकम्मे, चेव; मोगरपाणिय, कासवे ॥ खेमते, धितिधरे चेव, कइलासे, हारिचंदणे ॥ १ ॥ वीरत्त, सुदंसणे, पुणभद्दे तह सुमणभद्दे ॥ सुपइट्ठि, मिहत्ति, अतिमुत्ते, अलखे अज्झयणाणंतु सोलसयं ॥ २ ॥ जति सोलस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? ॥*॥ एवं खलु जंबु! तेणं कालेणं तेणं समएणं राय-गिहे णगरे, गुणासिलए चेइए, सेणिएराया ॥ १ ॥ तत्थणं मकाई णामं गाहावई

अर्थ

यदि अहो भगवान! छठा उक्षेप, विशेषमें इस वर्ग के सोले अध्याय कहे हैं; उन के नाम— १ मकाइ गाथापतिका, २ वीकर्म गाथापतिका, ३ मोगर पानी यक्षका (अर्जुन मालीका) काश्य गाथापति का, ५ क्षेम गाथापति का, ६ घृतिधर गाथापति का, ७ कैलाश गाथापति का ८ हरीचंद गाथापति का, ९ वीरक्त गाथापति का, १० सुदर्शन गाथापति का, ११ पूर्णभद्र गाथापति का, १२ सुमनभद्र गाथापति का १३ सुप्रतिष्ठ गातापति का, १४ मिहती गातापति का, १५ अतिमुक्त कुमर का और १६ अलख राजा का यह १७ अध्ययन के नाम जानना ॥ २ ॥ यदि छठे वर्ग के सोले अध्ययन कहे तो अहो भगवान्! प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ॥१॥ यों निश्चय ह जम्बु! उसकाल उस समय में राजगृह

सूत्र

पाविसइ अड्ढे जाव अपरिभूए ॥२॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव गुणसिले जाव विहरंति ॥ परिस्साणिगया ॥ ३ ॥ तत्तेणं से मकाइ गाहावइ इमिस्से कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णतीएगंगदत्त तहेव इमोवि, जेठ पुत्ते कुडंबे ठावित्ता, पुरिस्स सहस्स वाहणीए सीयाए निक्खते जाव अणगारे जाए, इरिया समिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ४ ॥ तएणं से मकाइ अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहा रूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयाइं एकारअंगाइ आहिज्जइ, सेसं जहा खंधयस्स,

अर्थ

नगरी, गुनसिला चैत्य, श्रेणिक राजा ॥ २ ॥ तहां मकाइ नाम का गाथापति रहता था, वह ऋधिवंत यावत् अपरा भवितथा ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में भगवंत श्री महावीर स्वामी धर्म की आदि के करता यावत् गुनसिलावाग में विचरने लगे—परिषदा आइ ॥ ३ ॥ तब मकाइ गाथापति भगवंत का आगम श्रवनकर हर्षित हुवा यावत् भगवती सूत्र में गंगदत्त का अधिकार चला है तैसे ही बडे पुत्रको कुटम्ब में स्थापन कर हजार पुरुष उठावे ऐसी पालखी में बैठ भगवंत के पास आये, यावत् दीक्षा धारन की यावत् अनगार हुवे इर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बने ॥ ४ ॥ तब मकाइ अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास के तथा रूप स्थविरों के पास सामायिकादि इग्यारे अंगकपडे, और सब अधिकार जैसा खंधकजी का भगवती सूत्र में कहा है तैसा ही सब इनका भी जानना. गुनरत्न संवत्सर तप किया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गुणरयणं तवोकम्मं सोलसवासाइं परियाओ तहेव विउले सिद्धे ॥ ५ ॥ छट्ठवग्गस्स पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ १ ॥ दोच्चस्स उक्खेवओ, विकम्मएणं एवंचेव ॥ जाव विउले सिद्धे ॥ बितिय अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ २ ॥ तच्चस्स उक्खेवउ- तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलाए चेइए, सेणिएराया, चिलणादेवी, ॥ १ ॥ तत्थणं रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं मालागार परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ २ ॥ तस्सणं अज्जुणयस्स मालागारस्स बंधुमतिणामं भारिया होत्था, सुकुमाला जावसुरूवा ॥ ३ ॥ तस्सणं अज्जुणयस्स माला-

अर्थ

सोलह वर्ष दीक्षापाली तैसे ही विपुलगिरी पर्वतपर सिद्ध हुवे ॥ षष्टम वर्ग का प्रथम अध्ययन ६ ॥ १ ॥ दूसरा अध्ययन—विक्रम गाथापति का जिस का सब कथन महिले अध्याय में कहे मकाइ गाथापति जैसा जानना. यावत् विपुलगिरीपर सिद्ध हुवा ॥ छठा वर्गका दूसरा अध्याय समाप्त॥६॥२ तीसरा अध्याय का उत्क्षेप—उस काल उस समए में राजग्रही नामा नगरी गुणसिला नामा चैत्य, श्रेणिक नामे राजा, चिल्लणा नामे रानी ॥ १ ॥ तहां राजगृही नगरी में अर्जुननामे माली रहता था, वह ऋद्धिवन्त यावत् अपराभवित था ॥२॥ उस अर्जुन माली के बन्धुमति नाम की भारिया थी वह सुकुमाल यावत् सुरूप थी॥३॥उस अरजुन मालीका उस राजा गृहि नगरीके बाहिर यहां एक बडा पुष्पों का बगीचा था वह कृष्ण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गारस्स रायगिहस्स बहिया एत्थणं महं एगे पुफारामेहोत्था, किण्हहे जाव निकुरंबभूए, दसद्धेवन्नं कुसुम कुसुमेइ, पासादिए दरिसणीज्जे अभिरुवे पडिरुवे ॥ ४ ॥ तस्सणं पुप्फारामस्स अदूरसामंते एत्थणं अज्जुणयसे मालागारस्स अज्जय पज्जयागत अणेग-कुलपुरिसे परंपरागते मोग्गरेपाणी जक्खस्स जक्खायणहोस्था, पोराणेहिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे ॥ ५ ॥ तत्थणं मोग्गरपाणीस्स पडिमा एगं महं पलस्सहस्साणिप्पणं अउमयं मोयरं महायाचिट्ठंति॥६॥ तस्स अज्जुणमालागारे बालप्पभिति चेव मोग्गारपानीयक्ख

अर्थ

यावन्त यावत् निरंकुरम्ब (सघन) भूत था वह पांच वर्ण के फूलोंकर सदैव फुला हुवा था वह चित्तको प्रसन्न करनेवाला, देखने योग्य, अभिरूप प्रतिरूप था ॥ ४ ॥ उसपुष्पाराम-बगीचे में मोगर पानी नामक यक्षका यक्षायतन मंदिरा था, वह अर्जुनमाली के दादे परदादे अनेक पीडीयों से परम्परा से चलित पूराना था, उस में रहा देव सत्य वादी यावत् जैसा पूर्ण भद्र यक्षका उववाइ सूत्रमें कथन चला है ऐसा इसका भी यहां जानना ॥ ५ ॥ तहां उस मोगरपानी यक्ष की प्रतिमा एक बडा हजारपल जितने वजनवाला + लोहेका मुद्गल ग्रहण करके रही थी ॥ ६ ॥ उस मुद्गल पानी यक्षका अर्जुनमाली वचपनसे ही भक्त था,

+ पांच रति का एक मासा, सोले मासा का एक सोनैया, (अर्थात् तीन टांक का एक सोनैया) चार सोनैया का एक पल, ऐसे एक हजार पल का वह मुद्गल जानना.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भत्तेयाविहोत्था, कल्लाकाल्लिं वत्थिय पडिलए गिण्हइ २ त्ता, राएगिहाओणयरिओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुप्फचयं करेइ २ त्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणीस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मोग्गरपाणीस्स यक्खस्स महरियं पुप्फचणं करेइ २ त्ता जाणूपाए पडिए पणामं करेइ २ त्ता तओ पच्छारायमगंसि वित्तिकप्पेमाणे विहरइ ॥७॥ तत्थणं रायगिहे णगरे ललिया-एणामं गोट्ठीपरिवस्सइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, जंकय सुकययाविहे होत्था ॥ ८ ॥

अर्थ

सदैव वक्तोवक्त बांस की छाव ग्रहण करके राजगृही नगर से निकले, निकल कर जहां पुष्पाराम तहां आता, आकर पुष्पाचरन—फूलों को एकत्र करता, करके अगर बरास—कपूर फूल ग्रहण कर मोगर पानी यक्ष का यक्षायतन था, तहां आता, तहां आकर मोगर पानी यक्ष का महा अर्थवाला पुष्पार्चन करता, करके घुटने जमीन को लगाकर पांव में पडता प्रणाम करता, प्रणाम करके फिर राज्य मार्ग में उन पुष्पादि को बेंचकर अपनी बृति—आजीविका करता था ॥७॥ तहां राजगृही नगर में ललितादिनाम के छ गोठिले (मित्र) पुरुष रहते थें, वे ऋद्धिवन्त थे यावत् अन्य से अपराभावित थे, उन को किसी का भी डर नहीं था. शुभाशुभ कार्य स्वेच्छा प्रमाने करते सदैव क्रीडा में रक्त हुवे विचरते थे ॥८॥ उस राज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ते रायगिहे णयरे अण्णयाकयाइ पमोदे घट्ठेआविहोत्था ॥ ९ ॥ तत्तेणं से अज्जु-णएमालागारे कल्लं पभूयतरएहिं पुप्फेहिं कज्जहिं त्तिकट्टु, पच्चुकाल समयंसी बंधु-मतिए भारियाए सद्धिं वत्थिय पडियाए गिण्हइ २ त्ता, सयातो गिहातो पडिनि-क्खमइ २ त्ता रायगिहे णयरं मज्झंमज्झेणं निगच्छइ २ त्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, बंधुमइए भारियाए सद्धिं पुप्फचयं करइ २ त्ता ॥१०॥ तएणं तीसेललियाए गोट्ठीए छगोट्ठीए पुरिसा, जेणेव मोग्गरपाणीस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागता, अभिरम्ममाणे चिट्ठंति ॥ ११ ॥ तत्तेणं से अज्जुणए मालागारे बंधुमति भारियाए सद्धिं पुप्फचयं करेइ २ त्ता पछिवभरेइ २ त्ता अग्गाहि

अर्थ

ग्रही नगर में किसी वक्त प्रमोद महोत्सव आयाथा ॥ ९ ॥ तब अर्जुनमाली प्रातःकाल में बहुत उत्तम फूलों को ग्रहण करने बन्धुमति भारिया के साथ बांस की छाब ग्रहण की, ग्रहण करके अपने घर से निकला, निकलकर जहां पुष्पाराम था, तहां आया, आकर बन्धुमति भारिया के साथ फूलों एकत्र [संग्रह] करने लगा॥१०॥उस वक्त वे ललितादि छ गोठिले पुरुष जहां मोगर पानी यक्ष का यक्षायतन था तहां आये, आकर वहां क्रीडा करते हुवे रहे थे॥११॥ तब वह अर्जुन माली बंधुमति भारिया के साथ फूलों भेले किये, भेले करके छावडी में भरे, भरकर अग्र कपूर कुष्पादि सुगंधी द्रव्य ग्रहण करके जहां मोगर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

वराहि पुप्फाइं गहाय, जेणेव मोग्गरपानीस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता॥ १२॥ तएणं ते छगोट्ठिला पुरिसा अज्जुणय मालागारे बंधुमति भारियाए सार्द्धि एज्जमाणे पासइ २ त्ता अण्णमण्णं एवं वदंति—एमणं देवाणुप्पिया! अज्जुणय मालागारे बंधुमति भारियाए सार्द्धिं हव्वमागच्छति तंसेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवाउडय बंधणय करेत्ता, बंधुमतिए भारियाए सद्धिं विउलं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए त्तिकट्टु, एयमट्ठं अणमणस्स पडिसुणेइ २ त्ता, कवाडंतरेसु निलुकति, निच्चला निप्फंदा तुसिणया पच्छीणा चिट्ठंति ॥ १३ ॥ तत्तेणं से अज्जुणमालागारे

अर्थ

पानी यक्ष का यक्षायतन था, तहां आने लगा ॥ १२ ॥ तब उन गोठीले पुरुषोंने बंधुमति भारिया के साथ अर्जुन माली को आता हुवा देखा, देखकर परस्पर यों बोलने लगे—हे देवानुप्रिय ! यह अर्जुनमाली बन्धुमति भारिया के साथ शीघ्र आता है, इसलिये हे देवानुप्रिय ! अपने को श्रेय है कि अपन अर्जुनमालीको मुस्के (उलटा) बन्धकर बन्धुमति भारिया के साथ विस्तीर्ण भोगोपभोग भोगवते विचरें॥ऐसा सुन उक्त कथन परस्पर मान्य किया, मान्य कर उस यक्षालय के द्वार के किमाड के पीछे छिपकर निश्चल चुपचाप प्रच्छन्नपने खडे रहे ॥ १३ ॥ तब वह अर्जुनमाली बन्धुमति भारिया के साथ जहां मोगर पानी यक्ष का

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

बंधूवती भारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गरपानी जक्खस्स जक्खायणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आलोए पणामं करेइ २ त्ता, महरिहं पुप्फंचणं करेइ २ त्ता जाणूयाए पडिए पणामं करेति ॥ १४ ॥ तत्तेणं ते छगोट्ठिलापुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो निगच्छइ २ अज्जुणयं मालागारं गिण्हति २ त्ता अवउडग बंधणकरेइ २ त्ता बंधुमतिए मालागारणिए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ॥ १५ ॥ तएणं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं बालप्पभित्तिं चेव मोग्गरपाणीस्स भगवतो कल्लाकलिं जाव कप्पेमाणे विहरामि

अर्थ

यक्षालय था तहां आया, आकर प्रतिमा को देखते ही नमन किया, नमस्कार कर महामूल्य पुष्पों से अर्चन किया, घुटने जमीन को लगाकर पांव पडा ॥ १४ ॥ उस वक्त वे छे ही गोठीले पुरुष दबादब कवाड के पीछे से एक ही साथ निकले निकलकर अर्जुनमाली को पकडा, पकडकर उलटी मुस्को बन्धकर (गोडे लकडी देकर) गुडा दिया और छे ही बन्धुमति भारिया के साथ विस्तीर्ण भोगोपभोगवते विचरने लगे ॥१५॥ तब उस अर्जुनमाली को इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा—यों निश्चय में बचपने से इन मोगर पानी भगवंत का भक्त हूं, सदैव वक्तोवक्त महुमूल्य पदार्थों से पूजा करता हूं इसलिये यदि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तं जइणं मोगरपानी जक्खो इहसणिहि तेहोति सेणं किं मम एएरूत्रे आवइया पात्रिज्जयामाण पासेति, तेणं णात्थिणं मोगरपानीजक्खे, इहं सणिहिते मुच्चत्तणं एस कट्ठे ! ॥१६॥ तत्तेणं से मोग्गरपाणिजक्खे अज्जुणमालाग्गस्स अयमेत्र अज्झत्थियं जाव त्रियाणं अज्जुणयस्स मालागारस्स सरिरगं अणुपत्रिस्सइ २ त्ता तडतड तस्स बंधणाइं छिदंति, तंपलसहस्स णिप्पणं अयोमयं मोग्गरं गिण्डइ २ त्ता, तेइत्थिसत्तमे छपुरिसे घाएइं ॥ १७ ॥ तत्तेणं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणी यक्खेणं अणाइट्ठे समाणे रायागिहस्स णयरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं छइत्थि सत्तमे पुरिसे

अर्थ

जो मोगार पानी यक्ष यहां सानिध-नजदीक होते तो वे किस प्रकार मेरी यह अवस्था होती हुई देख सकते, इस लिये नहीं है यह मोगार पानी यक्ष यहां सानिध जो मुझे छोडावे, यह तो प्रतिमा तो काष्ट है—लकडा है ॥२६॥ तब वह मोगार पानी यक्ष अर्जुन माली के उक्त अध्यवसाय को जानगया, उसही वक्त अर्जुम माली के शरीर में प्रवेश किया, प्रवेश कर उन बन्धन को शीघ्र तोडडाले और वह हजार पलके वजन वाला मुद्गल, उठाकर उस अपनी स्त्री को और उन छेही पुरुषों को यों सातों को मारडाले ॥ १७ ॥ तब अर्जुन माली मोगर पानी यक्षके आधिष्टता करके राजगृह नगर के बाहिर आस पास फिरता हुवा. वक्तो

सूत्र

घायमाणे २ विहरइ ॥ १८ ॥ तत्तेणं रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापएसु बहुजणो अणमणस्स एवं माइक्खति ४ एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुण मालागारे मोग्गर पाणीणा अणाइट्ठे समाणे रायगिहे णगरे बाहिया छइत्थिसत्तमे पुरिसे घायमाणे विहरइं ॥ १९ ॥ तएणं से सेणिएराया इमिसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणे मालागारे जाव घाए-माणे विहरति, तेमाणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! केइ कट्ठस्सवा, तणस्सवा, पाणियस्सवा, पुप्फ-फलाणिवा, अट्ठाए सत्तिरंतिगच्छं तुम्हाणं तस्स सरीरस्स बावत्ति भविस्सति,

अर्थ

यक्ष एकस्त्री और छ पुरिस यों सात मनुष्य सदैव मारताहुवा विचरने लगा॥१८॥तबराजगृही नगरीमें श्रृंगाटक पंथमें यावत् महापंथमें बहुत लोगों परस्पर इस प्रकार बातों कहनेलगे-यों निश्चय हे देवानुप्रिया!अर्जुनमाली यक्ष अधिष्ठित होने से राजगृही नगरी के बाहिर एक स्त्री छ पुरुषों की घात करता हुवा विचरता है ॥ १९ ॥ तब श्रेणिक राजा उक्त सामाचार श्रवण करके कोटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगा—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! अर्जुन माली यावत् सात मनुष्यों को मारता हुवा विचरता है, इसलिये तुम इस प्रकार उदघोषना करो कि-अहो लोगों ! तुम कोई भी काष्ट केलिये, तृण—घांस केलिये पानी केलिये,फूलके फलकेलिये, नगरके बाहिर जाना नहीं क्यों कि तुमारेको अर्जुन माली के शरीर से बाधा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

त्तिकट्टु, दोच्चंपि तच्चंपि घोसणायं घोसह २ खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥ २० ॥ तत्तेणं कोडुंबिय जाव पच्चप्पिणंति ॥ २१ ॥ तत्थणं रायागिहे णयरे सुदंसणे नामं सेट्ठि परिवसइ अड्ढे ॥२१॥ तएणं से सुदंसणे समाणे वासयावि होत्था अभिगया जीवा-जीव जाव विहरति ॥ २२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव विहरइ ॥ २३ ॥ तएणं से रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खंति २ जाव किंमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणत्ताए

अर्थ

होगी, यों दो वक्त तीन वक्त उद्घोषना करो, ढंढेरा पीटो, यह मेरी आज्ञा पीछी मेरे सुपुर्त करो॥ २० ॥ तब कोटुम्बिक पुरस ने तैसा ही किया यावत् आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ २१ ॥ तहां राजगृही नगरी में सुदर्शन नामका गाथापति रहता था, वहा ऋद्धिवंत यावत् अपराभवितथा ॥ २२ ॥ वह सुदर्शन श्रमणो पासक श्रावक था, उसने जीवादी नव पदार्थों का जान पना किया था, यावत् चौदह प्रकार का दान देता हुवा विचरता था ॥ २२ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् गुनसिला चैत्य में तपसंयम से आत्मा भावते हुवे विचरने लगे ॥२३॥ तब राज्यगृही नगरी के श्रृंगाटक पंथ में यावत् बहुत लोगों परस्पर यों कहने लगे यावत् प्ररूपने लगे—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी यावत् गुनसिला चैत्य में विचरते हैं, उनका नाम श्रवण करने काही महाफल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

॥ २४ ॥ तएणं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेत्र अज्झत्थिए जाव समुप्पाजित्था—एवं खलु समणे जाव विहरंति, तंगच्छामिणं समणेणं भगवया महावीरेणं वंदमि नमंसामी एवं संपेहेइ २ त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव तिकट्टु, एवं वयासी—एवं खलु अम्मायाओ समणे जाव विहरति, तंगच्छामिणं समणेणं भगवया महावीरेणं वंदामि जाव पज्जुवासामि ॥ २५ ॥ तएणं तं सुदंसणसेट्ठिं अम्मा पियरो एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अज्जुण मालागारे जाव घाएमाणे विहरति, तमिणं तुब्भे पुत्ता ! समणं भगवं

अर्थ

है तो फिर धर्म कथा श्रवण करने का और प्रश्नोत्तर कर लाभ प्राप्त करने का फलकातो कहना ही क्या? ॥ २४ ॥ तब सुदर्शन श्रावकने बहुत लोगों पास से उक्त कथन श्रवण किया अवधारा इस प्रकार विचार उत्पन्न हुवा—यों निश्चय श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् विचर रहे, हैं इसलिये जावुं में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करूं, यों विचार किया, विचार करके जहां मातापिता थे तहां आया, तहां आकर हाथ जोडकर यों कहने लगा—यों निश्चय अहो माता पिताओं ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे हैं इसलिये जावुं में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके यावत् भक्तिकरूं ॥ २५ ॥ तब सुदर्शन शेठ से मातापिता यों कहने लगे—यों निश्चय हे पुत्र ! अर्जुन

सूत्र

महावीर वंदति निग्गछिहि माणं तव सरीरयस्स वावात्ती भविस्सइ, तुमेणं इहंचेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि ॥ २६ ॥ तएणं से सुदंसणे सेट्ठअम्मपियरे एवं वयासी-किणं अहं अम्मयातो समणं भगवं महावीरं इहमागया, तंइह संपत्तं, इहसमोसढ्ढं इहगतेचेव वंदिसामि,तंगच्छामिणं अहं अम्मयाओ तुब्भेहि अब्भणु णायसमाणे समणं भगवं महावीरं वंदामी ॥ २७ ॥ तएणं तं सुदसणसेट्ठि अम्मापियरो जाव नो संचएति बहुइं आघवणहिय जाव परूवणहिप, ततो तेही एवं वयासी-अहासुहं ॥ २८ ॥ ततेणं से सुदंसणे अम्मापियरेहिं अब्भणुणाए समाणं ण्हाए सुद्धपावेसाइ

अर्थ

माली यावत् घात करता विचरता है, हे पुत्र! तू जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना करने जावेगातो तुझे अर्जन माली से शरीर को बाधा होगा इसलिये तू यहां रहा हुवा श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार करो ॥ २६ ॥ तब सुदर्शन शेठ मातापिता से यों कहने लगा—किस प्रकार मैं अहो मातापिता! श्री महावीर स्वामी यहां आये, यहां प्राप्त हुवे यहां समोसरे, यहां रह, उनको यहां घर में रहा वंदना करूं? इसलिये अहो मातापिताओं! जो तुमारी आज्ञा हो तो मैं श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी का वंदन करने जावूंगा॥२७॥ तब सुदर्शन शेठको उनके मातापिता बहुत प्रकारसे अग्रहकर प्ररूपनाकर, रोकने समर्थ न हुवे तब वे इसप्रकार बोले-तेरेको सुखहो सो करो॥२८॥तब वह सुदर्शन मातापिताकी आज्ञा प्राप्तहोते, स्नानकिया,

सूत्र

जाव सरीरे सयातो गिहातो पडिनिक्खमइ २ त्ता पायविहार चारेणं रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ २ त्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खायणस्स अदूर सामंतेणं जेणेव गुणसिल चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ २९ ॥ तत्तेणं से मोग्गरपाणीजक्खे सुदंसण समणोवासएणं अदूरेसामंत्तेणं वितिवएमाणे पासइ २ त्ता आसुरत्ते तंपलसहस्स निप्पनं अयओमय मोगारं उलालेमाणे २ जेणेव सुंदसण समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ३० ॥ तत्तेणं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गपाणी जक्खं एज्जमाणे पासइ २ त्ता अभिए अतत्थे अणुविग्ग अक्खू-

अर्थ

शुद्ध वस्त्र पहने यावत् शरीर को विभूषित कर अपने घर से निकला, पांवों से चलता हुवा राजगृही नगरी के मध्य मध्य में होकर मोगर पानी यक्षके यक्षालय के पास हो जहां गुनसिला चैत्य है, तहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी हैं उस रास्ते में गमन करने लगा ॥ २९ ॥ तब मोगार पानी यक्षने सुदर्शन सेठ को अपने नजीक हो जाता हुवा देखा, देखकर असुरक्त हुवा, उस हजार पल प्रमान वजनवाले लोहे के मुद्गल को उछालता हुवा २ जहां सुदर्शन श्रावक रहा था उस के सन्मुख आने लगा ॥ ३० ॥ तब सुदर्शन श्रावकने मोगारपानी यक्षको आताहुआदेखा, देखकर डरपाया नहीं, त्रासपाया नहीं उद्वेगपाया नहीं, क्षोभित हुवा नहीं, चलित हुवा नहीं, भगा नहीं, घबराया नहीं, परन्तु वस्त्रकर वहां की भूमी का पूंजी (झारी) पूंछ

सूत्र

भिंत्ते अचलिए असंभमेणे वत्थेणं भूमि पमज्जति २ त्ता करयल जाव एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं समणस्स भगवओ जाव संपाविओकामस्स, पुव्विपिणं भंते ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ थूलए पाणाइवाए पच्चक्खए जाव जीवाए, थूलए मोसाइवाए, थूलए अदिन्नादाणे, सदारा संतोसेकए जाव जीवाए, इच्छा परिमाणकत्ते जावजीवाए, सेतं इदाणिंपि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावजीवाए - मुसाइवायं - अदत्तादाणं - मेहुणं- परिग्गहं पच्चक्खामि-जावजीवाए सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्ल पच्चक्खामि

अर्थ

कर बैठा डाबेढीचन खडारख उसपर हाथ जोडे हुवे रखकर यों बोला-नमस्कार होवो अर्हन्त भगवन्तको यावत् मुक्ति पधारे उन को ॥ नमस्कार होवो श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी मोक्षके अभिलाषी हैं को, अहो भगवन् ! पहिले भी मैंने श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी के पास, स्थूल-बडे प्राणातिपात का जावज्जीव प्रत्याख्यात किया था, ऐसे ही स्थूल मृषावाद का, स्थूल अदत्तादान का, स्वस्त्री संतोष कर उपारान्त मैथुन का और धन की इच्छा का इन का जावजीव का प्रमान किया था, वही इस वक्त भी उन के ही पास सर्वथा प्राणातीपात का प्रत्याख्यान करता हुं जावज्जीव पर्यन्त, सर्वथा मृषावाद का- अदत्तादान का मैथुन- परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं यावज्जीव पर्यन्त, सर्वथा प्रकारे क्रोध का यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव जीवाए, जइणं एतो उवसगाओ मुच्चिस्सामि, तोमेव कप्पइ पारितत्ते, अहणं एत्तो उवसग्गओ नमुच्चिस्सामि तोते तहा पच्चक्खाइ, तिकट्टु सागारिय पडिमं पडिवज्जइ ॥ ३१ ॥ तत्तेणं से मोग्गपाणी जक्खे तं पलसहस्स निप्पणं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, नो चेवणं संचाएति, सुदंसणे समणोवासए तेअसासमाडि पडित्तए ॥ ३२ ॥ तएणं से मोग्गरपाणीजक्खे सुदंसण समणोवासयं सव्वओ समंता परिघोलेमाणे २ जाहि नो संचाएति सुदंसणे समणो वासयं तेयसांसमभिपडितत्ते,

अर्थ

मिथ्यात्व दर्शन शल्यका प्रत्याख्यान करता हुं जावजीव पर्यन्त यदि इस उपसर्ग से मुक्त होवूंतो मुझे कल्पे इन प्रत्याख्यानो को पारना और जो इस उपसर्ग से मुक्त नहीं होवुंतो यह किये तैसेही प्रत्याख्यान मेरेरहो. ऐसा कर सागारी अनशन अङ्गीकार किया ॥ ३१ ॥ तब वह मोगार पानी यक्ष वह हजारपल जितने भारवाला लोहेका मुद्गल उल्लालताहुवा २ जहां सुदर्शन श्रमणोपासक था तहां आया, आकर सुदर्शन श्रमणो पासक को उपसर्ग करने शरीर को दुःख उत्पन्न करने समर्थ नहीं हुवा ॥ ३२ ॥ तब वह मोगार पानी यक्ष सुदर्शन श्रावक के चारों तरफ फिरने लगा, फिरता हुवा भी जब सुदर्शन श्रावकका तेज सहन करने, समर्थ नहीं हुवा तब सुदर्शन शेठ के सन्मुख से पीछे आकर खडा हुवा, सुदर्शन श्रमणो पासक को

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरतो सपक्खि सपडिदिसं ट्ठिच्चा, समणोवासयं अणिमिस्साए दिट्ठीए सुचिरं निरक्खेत्ते २ अज्जुणमालागारस्स सरीरं विप्पजहइ २ त्ता तंपलसहस्स निप्पन्नं आउमयं मोग्गरं निगाहिय, जामेवादिसिं पाउब्भूए तामेव-दिसिं पडिगए ॥ ३३ ॥ तएणं से अज्जुणमालागारे मोग्गर पाणीणा जक्खेणं विप्पमुक्कसमाणो धसति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं संनिवडए ॥ ३४ ॥ तएणं से सुदंसणे समणोवासए निरुवसग्गामिति त्तिकट्टु पडिमा पारेति ॥ ३५ ॥ तएणं से अज्जुणमालागारे तत्तो मुहुत्तंतरेणं आसत्थेसमाणे उट्ठिति २ सुदंसणस्स समणोवासए एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिए के ? किहिंवा संपत्थिई? ॥३६॥ तत्तेणं

अर्थ

मेषोन्मेष देखता हुवा, बहुत काल तक देखता रहा देखता रहता हुवा अर्जुन माली के शरीर को छोडकर उस हजार पलभार के निष्पन्न लोहके मुद्गल को लेकर जिस दिशा से आया था उसदिशा (देवालय में) पीछा चलेगया ॥ ३३ ॥ तब अर्जुन माली मोगर पानी यक्षसे विमुक्त हुवे धसकाकर जमीनपर सर्वांग से पडा ॥ ३४ ॥ तब सुदर्शन श्रावकने उपसर्ग निवारन हुवा जाना, उस सागरीक प्रतिज्ञा के प्रत्याख्यानपारे ॥ ३५ ॥ तब अर्जुन माली मुहुर्त के बाद विश्राम पाय हुवा उठा, उठकर जहां सुदर्शन श्रावक था तहां आकर यों कहने लगा—हे देवानुप्रिया ? तुम कौन हो ? कहां जाते हो ? ॥ ३६ ॥ त. सुदर्शन शेठ

सूत्र

से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी-खलु देवाणुप्पिया! अहं सुदंसणे णामे समणोवासए अभिगया जीवाजीवे, गुणसिलाचेतीते समणं भगवं महावीरं वंदित्ते संपत्थितो ॥ ३७ ॥ तएणं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी–इच्छामिणं देवाणुप्पिया ? अहंमावि तुमएसद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! ॥ ३८ ॥ तएणं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणए मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणं भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अज्जुणएमालागारेणंसद्धिं समणं भगवं

अर्थ

श्रमणोपासक अर्जुन माली से यों कहने लगा—यों निश्चय. हे देवानुप्रिय ! मै सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक हूं जीवाजीव का जान हूं, गुणसिला चैत्य में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे हैं उन को वंदना करने को जा रहा हूं ॥ ३७ ॥ तब अर्जुन माली सुदर्शन शेठ से ऐसा बोला-हे देवानुप्रिय ! मैं भी तुमारे साथ श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदन करने यावत् सेवा करने आवूं ? तब सुदर्शन बोला-तेरी आत्मा को सुख होवे सो कर ॥ ३८ ॥ तब सुदर्शन श्रावक अर्जुन माली के साथ जहां गुणसिला चैत्य जहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी थे, वहां आये, आकर अर्जुन माली के साथ श्रमण भगवंत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासेति ॥ ३९ ॥ तत्तेणं समणे भगवं महावीरं सुदंसणं समणोवासयं अज्जुणयस्स धम्मकहा कण्णइ ॥ ४० ॥ सुदंसण पडिगत्ते ॥४१॥ तत्तेणं से अज्जुणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतीए धम्मंसोच्चा निसम्महट्ठा एवं वयासी—सद्दामिणं भंते ! णिग्गंथे पावयणं जाव अब्भुट्ठेति ? अहासुहं ॥४२॥ तत्तेणं से अज्जुणओ उत्तर पुरत्थिम दिसिविभागं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता जाव अणगारे जाए विहरंति ॥ ४३ ॥ तएणं से अज्जुण अणगारे जंचेव दिवसं

श्री महावीर स्वामी को तीन वक्त नमस्कार किया वंदना नमस्कार कर यावत् सेवा करने लगे ॥ ३९ ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीने सुदर्शन श्रावक को और अर्जुन माली को धर्मकथा सुनाइ ॥४०॥ सुदर्शन धर्मकथा श्रवण कर पीछा गया ॥ ४१ ॥ तब अर्जुन माली श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास धर्म कथा श्रवण कर हृष्ट तुष्ट हुवा—यों कहने लगा. अहो भगवन् ! श्रद्धे हैं मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन यावत् मेरी आपके समीप दीक्षा लेने की अभिलाषा है भगवन्तने कहा—हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो वैसे करो ॥ ४२ ॥ तब अर्जुन ईशानकौन में आकर अपने हाथ से पंचमुष्टिलोच किया, लोच करके यावत् अनगार साधु हो विचरने लगा ॥ ४३ ॥ तब अर्जुन माली अनगार जिस दिन दीक्षा धारन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मुंडे जाव पव्वाइए, तंचेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसिता एयारूवं उग्गहं उगिण्हिता कप्पइमे जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, तिकट्टु अयमेयरूवं अभिग्गहं गिण्हइ जाव जीवाए जाव विहरंति ॥ ४४ ॥ तएणं से अज्जुण अणगारे छट्ठक्खमण पारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोतमसामी जाव अडति ॥ ४५ ॥ तत्तेणं अज्जुणय अणगारं रायगिहेनयरे उच्च जाव अडमाणे बहवे इत्थियाओ पुरिसाय डहरिय

अर्थ

की उस ही दिन श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार अभिग्रह धारन किया-मुझे जावजीव पर्यन्त छठ २ [बेले २] तप अन्तर रहित कर अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरना, कल्पता है इस प्रकार अभिग्रह धारन किया यावत् आत्मा भावते विचरने लगा ॥४४॥ तब अर्जुन अनगारने बेले के पारने के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय की, दूसरी प्रहर में ध्यान किया, तीसरे पहर में जिस प्रकार गौतम स्वामी भगवंत की आज्ञा ले गौचरी जाते हैं उस ही प्रकार अर्जुन साधु भी राजगृही नगरी में भिक्षार्थ गया फिरने लगा ॥ ४५ ॥ तब अर्जुन अनगार को राजगृही नगरी में ऊंचनीच कुल में फिरते हुवे, बहुत स्त्रीयों, बहुत पुरुषों, छोटे बच्चे, बडे कुमारों युवावस्थावन्त यों कहने लगे--इसने मेरापिता मारा, इसने मेरी माता को मारी, इसने हमारे भ्रात को, बहिन को, सगे को, पुत्र को, पुत्री को, पुत्र वधु को

सूत्र

महलिया जुवाणिए एवं वयासी-इमं मे पितामारिया, इमेणं मे मातामारीया, भाया-भगि-णी-सया-पुत्त-धूया-सुन्नाइ, इमेणंमे अणयरे सयणं संबंधि परिजणे मारित्तिकट्टु, अप्पे-गइया अक्कोसंति, अप्पेगइया हिलंति-निदंति-खिसंति-गरहंति-सेतज्जनि-तालेति ॥ ४ ६॥ तत्तणं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहुहिय इत्थिहिय पुरिसहिय डहरेहिय महलेहिय जुवाणेहिय, आउसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसि मणसावि अप्पउसमाणे सम्मंस-हाति, सम्मंखमाति, तितिक्खइ अहियासेइ, रायगिहेनयरे उच्चनीय जाव मज्झिमाइं कुलाइं अट्टमाणे, जइभत्तं लभति तोपाणं नलभाति, अह पाणं लभाति तो भत्तं नल-

अर्थ

और भी अन्य स्वजन को सम्बन्धीयों को परिजनको मारे, ऐसा कहकर कितने जने तो अक्रोश करते थे, कितनेक हीलना करते थे—हलकी जबान बोलते थे, कितनेक निन्दा करते थे, कितनेक खिझाने होते थे, कितनेक ग्रहण करते थे. बहुतों के सन्मुख दुर्गुण प्रगट करते थे, कितनेक तर्जनी अंगुली से तर्जना करते थे. कितनेक ताडना करते थे—मारते थे ॥ ४६ ॥ तब अर्जुन अनगार उन बहुत स्त्रीयों को पुरुष को बच्चों को बडे कुमरों को युव को कों अक्रोश करते हुवे पर यावत् मारते हुवे पर मानकर भी द्वेष नहीं करता हुवा सब प्रकार के उपसर्गोंको समभाव कर सहता हुवा, समभाव-क्षमाभाव से क्षमता हुवा, तितिक्षण परिसह अहियासता हुवा, राज्यगृही नगरी के ऊंचनीच यावत् मध्यम कुलों में फिरते हुवे यदि आहार मिले

सूत्र

भति ॥४७॥ तत्तेणं से अज्जुणए अणगारे अदीणे, अविमणे, अकलुसे, अणाइले, अविसादिय, अपरितंतेजोगी अडंति २ रायगिहे नगराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव गुणासिलते चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे जहेव गोतमसामी जाव पडिदंसेइ २ सयणं भगवं महावीरं अब्भणुणायसमाणे अमुच्छिते ४ विलमिव पन्नग भूएणं अप्पाणेणं तंमहारं आहारइ २ त्ता ॥ ४८ ॥ तत्तेणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं रायगिहातो पडिनिक्खमइ २ बहिया जणमय विहारं विहरति ॥४९॥

अर्थ

तो पानी नहीं मिले और पानी मिले तो आहार नहीं मिले ॥ ४७ ॥ तब वह अर्जुन अनगार इस प्रकार अपूर्ण प्राप्ती से प्रमामों को हीन-दीन नहीं करता हुवा, कलुषता नहीं धरता हुवा, ममत्व नहीं करते हुवो, विषवाद नहीं करता हुवा, पापका नियोग नहीं करता हुवा. परिभ्रमण कर, फिर करके राजगृही नगरी से निकलकर जहां गुणसिला चैत्य जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी तहां आया, आकर गौतम स्वामी की तरह आहार बताया, बताकर श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी की आज्ञा से प्राप्त हुवे आहार में अमूच्छित अगृद्धता से जैसे बिल में सर्प प्रवेश करता है इस प्रकार व आहार किया ॥ ४८ ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी अन्यदा किसी वक्त राज्यगृही नगरी से निकले निकलकर बाहिर जन पद

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तत्तेणं से अज्जुणय अणगारे, तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं परिगाहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहु पडिपुण्णे छमासेसामन्न परियगं पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छिंदेत्ति २ जस्सट्ठाए किरंति तंमट्ठं अराहेति जाव सिद्धे ॥ ५० ॥ छट्ठस्स वग्गस्स ततिय अज्झयणा सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ३ ॥ + +

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेणगरे गुणासिले चेइए ॥ तत्थणं सेणियराया, कासवनाम गाहावइ, परिवसई, जहा मकाति, सोलस्सवास परियाओ विउले सिद्धे ॥

अर्थ

देश में विचरने लगे ॥ ४९ ॥ तब अर्जुन अनगार उस उदार विपुल-विस्तीर्ण प्रयत्न से ग्रहण किया हुवा तप करके, महानुभाग्य तप करके अपनी आत्मा को भावते प्रतिपूर्ण छे महीने दीक्षा पाली, आधा महीना [पन्नरह दिन का] संथारा किया, सलेषना से आत्मा की झोंसना कर तीस भक्त अनशन का छेदन किया. छेदन कर जिस लिये उठ थे—सावधान हुवे थे वह अर्थ सिद्ध हुवा यावत् सिद्ध बुद्ध हो सर्व दुःख का क्षय किया ॥ ५० ॥ इति छठा वर्ग का तीसरा अध्याय संपूर्ण ॥ ६ ॥ ३ ॥ ×

उस काल उस समय में राजगृही नगरी, गुनासिला चैत्य, तहां श्रेणिक राजा ॥ कासव नामक गाथापति रहता था, जैसा मकाइ गाथापति का कथन कहा तैसा सब इनका भी जानना. सोले वर्ष संयम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

छट्ठस्स चउत्थ अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ४ ॥ एवं खेमेवि गाहावइ, णवरं काकंदीए, सोलस्सवासाए परियाओ, विउले पव्वए सिद्धे ॥ छट्ठस्स वग्गस्स पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ५ ॥ एवं धिंत्तिधार गाहावई काकंदीए णयरे, सोलस्स वासाइं परियाओ, जाव विउले सिद्धे ॥ छट्ठस्स वग्गस्स छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ६ ॥ एवं केलासेवि गाहावइ, नवरं साएय नगरे, बारस्स वासाइं परियाओ विउले सिद्धे ॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥ ७ ॥ एवं हरिचंदणे ते गाहावई साएतो बारस्सवासाइं परियाए ॥ अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं जावसिद्धे ॥६॥ ८ ॥ एवं वीरस्स गाहवई, णवरं रायगिहे णगरे, बारस्सा वासा परियाओ विउलंसिद्धे ॥ नवयं अज्झपणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ९ ॥ एवं सुदंसणेवि गाहावइ, णवरं वाणियगामं

अर्थ

पालकर विपुलगिरिपर सिद्ध हुवा ॥ छठा वर्ग का चौथा अध्ययन समाप्तम् ॥६॥४॥ ऐसे ही क्षेम गाथापति का अधिकार, जिस में इतना विशेष—कंकदी नगरी में हुवा सोलवर्ष संयम पाला सिद्ध हुवे ॥६॥५॥ ऐसे ही धृतिधर गाथापति, कंकादी नगरी सोलेवर्ष संयम पाला, सिद्ध हुवे ॥६॥७॥ एसेही कैलास गाथापति विशेष साकेत पुर नगरमें हुवा बारेवर्ष संयम पाला, सिद्ध हुवे ॥६॥८॥ ऐसेही हरिश्चंद्र गाथापति सकेत पुर नगर, बारे वर्ष संयम पाला सिद्ध हुवे ॥६॥९॥ ऐसेही सुदर्शन गाथापति विशेष में-वाणिज्यग्राम नगर धुंतिपलास

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णयरे दूइपलासे, पंचवासाए परियाओ, विउलेसिद्धे॥ दसमं ज्झयणं सम्मत्तं॥६॥१०॥ एवं पुण्णभद्देवि गाहावई, वाणिगाम नयरे, पंचवासाइं परियागं विउले सिद्धे ॥ एक्कारसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ ११ ॥ एवं समणभद्देवि गाहावइ, सावत्थिए णयरिए, बहुवास परियाओ, सिद्धे ॥ बारसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ १२ ॥ एवं सुपइंट्ठेवि गाहावइ, सावत्थिए णयरिए, सत्तावीस वासाइं परियाओ, विउले सिद्धे तेरस मंज्झणं समत्तं ॥६॥१३॥ एवं मेहाग्गहावई रायगिहेणगरे, बहुइं वासाइं परियातो विउले सिद्धे ॥ चउद्दसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ १४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुर णयरे, सिरिवणे उज्जाणे, तत्थणं पोलासपुरे

अर्थ

चैत्य, पांचवर्ष संथम पाला सिद्ध हुवे॥६॥१०॥ ऐसेही पूरणभद्र गाथापति वाणिज्यग्राम नगर पांचवर्ष संयम पाला सिद्धहुवा॥६॥११॥ऐसेहि श्रमणभद्र गाथापति श्रावस्ति नगरी, बहुतवर्ष संयमपाला सिद्धहुवे॥६॥१२॥ ऐसेही सुप्रतिष्ठ गाथापति श्रावस्ति नगरी, सत्तावीस वर्षे संयमपाला विपुल पर्वतपर सिद्ध हुवे ॥६॥१३॥ऐसेही मेघ गाथापतिभी राजग्रही, बहुतवर्ष पर्यायपाली यावत् विपुलगीरपर सिद्धहुवे॥इतिछठवर्गका चउदवा अध्ययन समाप्त ॥६॥१४॥उसकाल उससमय में पोलास पुरनामका नगरथा, ईशान कोंन में श्री वन नामका बगीचाथा॥ तहां

सूत्र

नगरे विजएनामं राया होत्था ॥ १ ॥ तस्सणं विजयस्स रन्नो सिरिनामं देवीहोत्था वण्णओ ॥ २ ॥ तस्सणं विजयस्स रण्णो पुत्ते, सिरिए देवीए अत्ताए, अइमुत्ते नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं, समणं भगवं महावीरं जाव सिरिवणे विहरंति॥४॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूइए जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे णयरे उच्चनीय जाव अडत्ति ॥ ५ ॥ इमंचणं अतिमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए, बहुहिं दारएहिय, दारिहिय

अर्थ

पोलास पुरनगर में विजय नाम का राजाराज करता था ॥ १ ॥ उन विजय राजा के श्री देवी नाम की रानीथी वर्णन योग्य ॥ २ ॥ उन विजय राजा का पुत्र, श्री देवी रानी का आत्मज अतिमुक्त नाम का कुमार था, वह सुकोमल शरीर का धारक था ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् श्री वन उध्यान में तप संयम से अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के बडेशिष्य इन्द्रभूती (गौतम) नामक अनगार इन के शरीरादि का सब वर्णन भगवती सूत्र प्रमाने जानना यावत् बेला के पारने में भिक्षार्थ पोलास पुर नगर में ऊंच नीच मध्यम कुल में अटन कर रहे थे ॥ ५ ॥ इधर अतिमुक्त कुमार यावत् विभूषित होकर बहुत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमारेहिय, कुमारियाहिय, सद्धिंसंपरिवुडे; साता गिहातो निक्खमइ २ त्ता जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तेहिं बहुहिं दारएहिय जाव परिवुडे अभिरम्स माणे२ विहरत्ति ॥५॥ तत्तेणं भगवं गोयमे पोलासपुरे णयरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वितिवयंतिमाणे पासइ २ त्ता॥ ६ ॥ तत्तेणं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वितिवयमाण पासइ, जेणेव भगवं गोयमें तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—केणं भंते ! तुब्भे, किंवा अडह ? ॥ ७ ॥ तएणं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हणं देवाणुप्पिया ! समणे

अर्थ

लडके लडकी कुमार कुमारीका के साथ परिवरा हुवा अपने घर से निकला. निकला कर जहां इन्द्रक खेलने का स्थान था तहां आया, आकर उन ही लडके लडकी कुमार कुमारिका के साथ परिवरा हुवा क्रीडा करते हुवे विचरता था ॥ ६ ॥ भगवंत गौतम स्वामी पोलास पुर नगर में भिक्षार्थ फिरते हुवे उस इन्द्रस्थ स्थान के पास हो जाते हुवे अतिमुक्त कुमारने देखे, उसीवक्त जहां भगवंत गौतम स्वामीजी थे तहां आया आकर भगवंत गौतम स्वामी से इस प्रकार बोला- कहो भगवन् ! आप कौन हो ? और किस कारण फिरते हो ? ॥ ७ ॥ तब भगवंत गौतम अतिमुक्त कुमारा से यों बोले-हे देवानुप्रिय ! हम निग्रन्थ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णिग्गंथे इरियासमिया जाव बंभयारी, उच्चनीय जाव अडामो ॥ ८ ॥ तत्तेणं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी-एएणं भंते ! तुब्भे जेणेव अहं तुब्भं भिक्खं दावावेमि, त्तिकट्टु, भगवं गोयमं अंगुलियाते गिण्हइ २ त्ता जेणेव सएगिहे तेणेव उवागते ॥ ९ ॥ तत्तेणं से सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ, असणातो अब्भुठइ २ त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागता, भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहीणं वंदइ नमंसइ २ त्ता, विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेइ २ त्ता पडिविसज्जइ ॥ १० ॥ तत्तेणं से अइमत्ते कुमारे भगवं

अर्थ

साधु इर्या समिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य के पालकहू. और गोचरी (भिक्षा) के निमित्त ऊंच नीच कुल में फिररहा हुं ॥८॥ तब अतिमुक्त कुमार भगवंत गौतम स्वामी से इस प्रकार बोला-अहो भगवन् ! तुम हमारे घर चलो मैं तुमारे को भिक्षादिलावुंगा, ऐसा कहकर भगवंत गौतम स्वामीकी करांगुली अतिमुक्त कुमारने ग्रहण की (पकडी) ग्रहण कर जहां अपना घर है उधर लेचला ॥ ९ ॥ उस वक्त अतियुक्त कुमार की माता श्री देवी रानी भगवंत गौतम स्वामी को आते हुवे देखे, देख कर तत्काल आसन छोड खडी हुई जहा भगवंत गौतम थे तहां आइ. भगवंत गौतम को तीन वक्त हाथ जोड प्रादक्षणावंत फिराकर वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर विस्तीर्ण अन्न पानी क्वान मुखवासादि प्रतिलाभा [वेहराया)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गोयमं एवं वयासी-कहणं भंते ! तुब्भे परिवसह ? ॥ ११ ॥ तत्तेणं भगवं गोयमं अइमंत्ति कुमारं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममधम्मायरिए धम्मोवदेसए धम्मनेवारं भगवं महावीरे आदिकरे जाव संपाविउकामे इहेव पोलासपुरेणयरे बहियासे सिरिवणे उज्जाणे अहा पडिरूवे उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरंति, तत्थणं अम्हे परिवसामो ॥ १२ ॥ तत्तेणं से अइमुत्तेकुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामिणं भंते ! अहं तुब्भे सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदणयत्ते ? अहासुहं देवाणुप्पिया ॥ १३ ॥ तत्तेणं अइमंतकुमारे

अर्थ

प्रतिलाभ कर पहोंचाये ॥ १० ॥ तब वह अतिमुक्त कुमार भगवंत गौतमस्वामी से ऐसा बोला-अहो भगवान ! आप किस स्थान रहते हैं ? ॥ ११ ॥ तब भगवंत गौतमस्वामी अतिमुक्त कुमार से यों बोले—हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मपंथप्रवर्तक भगवंत महावीर स्वामी धर्मकीआदि के करता यावत् मोक्ष के अभिलाषी इस पोलासपुर नगर के बाहिर श्रीवन बागमें साधुके कल्पने योग अभिग्रह ग्रहणकर संयम तपसे अपनी आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं मैं उनके पास रहता हूं ॥ १२ ॥ तब भगवंत गौतमस्वामी से अतिमुक्त कुमार यों बोला-अहो भगवान ! मैं श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना करने आप के साथ आऊं ? भगवंत गौतमने कहा-हे देवानुप्रिया ! तेरेको

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भगवं गोयमेण सार्द्धं जेणव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं
भगवं महावीरए तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं वंदांति जाव पज्जुवासंति ॥ १४ ॥
तत्तेणं भगवं गोयमे जणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागते जाव पडिदंसेति २,
संयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति ॥ १५ ॥ तत्तेणं समणे भगवं
महावीरं अतिमुत्ते कुमारस्स तीसेय धम्मकहा ॥ १६ ॥ तएणं से अतिमुत्ते कुमारे
समणस्स भगवओ अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्महट्ठ जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मा
पियरो अपुच्छाति तत्तेणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि ॥ १७ ॥

अर्थ

सुख होवेसो करो॥१३॥तब अतिमुक्त कुमार भगवंत गौतम स्वामीके साथ जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी
थे तहां आया, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिण वर्त फिराकर वंदना नमस्कार
कीयावत् सेवा भक्ति करने लगा॥१४॥तब भगवंत गौतम जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामीथे तहां आये आहार
आदि लाये थे वह बताया यावत् तप संयम से स्वात्मा भावते हुवे विचरने लगे ॥ १५ ॥ उस वक्त उस
अतिमुक्त कुमार को भगवंत, महावीर स्वामी ने धर्मोपदेश सुनाया ॥ १६ ॥ तब अतिमुक्त
कुमार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के मुखारविन्द से धर्मोपदेश श्रवण कर हर्ष तुष्ट हुवा और
कहने लगा अहो देवानुप्रिय ! इतना विशेष है कि-मैं मेरे माता पिता से पूछकर देवानुप्रिया के पास यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं करेति ॥ १८ ॥ तत्तेणं से अतिमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वइत्तत्ते ॥ १९ ॥ अतिमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-बालेसिणं तुम्हं पुत्ता ! असंबुद्धेत्ति, किणं तुम्हं जाणसिधम्मं ॥ २० ॥ तत्तेणं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापियरो, एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! जंचेव जाणामि तंचेव णयाणामि, जं चेवणं न जाणामि तंचेव जाणामि ॥ २१ ॥ तत्तेणं अतिमुत्ते कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-कहिणं तुम्हं पुत्ते ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि जं चेव न जाणामि तंचेव जाणामि ? ॥ २२ ॥ तएणं से अतिमुत्ते

अर्थ

दीक्षा धारन करूंगा ॥ १७ ॥ भगवन्तने कहे—हो देवानुप्रिय ! सुख होवे वैसे करो. परंतु धर्म काम में विलम्ब मत करो ! ॥ १८ ॥ उस वक्त अतिमुक्त कुमार मातापिता के पास आये. और कहने लगे कि यावत् मुझे आज्ञा दो मैं दीक्षा लेवूंगा ॥ १९ ॥ तब अतिमुक्त कुमार के मातापिता अतिमुक्त कुमार से इस प्रकार कहने लगे—हे पुत्र ! तू बालक है. अबोध, अज्ञ है. तू क्या समझे धर्म में-साधुपने में ? ॥ २० ॥ तब मातापिता से अतिमुक्त कुमार इस प्रकार बोला—अहो मातापिताओं ! मैं जिसे जानता हूं उसे नहीं जानता हूं और जिसे नहीं जानता हूं उसे जानता हूं ॥ २१ ॥ तब मातापिता अतिमुक्तकुमार से ऐसा बोले-हे पुत्र ! क्या तू जानता है सो नहीं जानता है, और नहीं जानता है सो जानता है ? ॥ २२ ॥ तब अतिमुक्तकुमार

सूत्र

कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-जाणामिणं अहं अम्मताते जहा जातेणा अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मायातो कहंवा कहिंवा कहंवा केवच्चिरेणंवा । न जाणामिणं अम्मताते कहिणं कम्मं बंधणेहिं जीवा नेरइयतिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेसु उववज्जइ । जाणामिणं अम्मताते जहा सत्तेहिं कम्मं बंधणेहिं जीवा नेरइया जाव उववज्जाहिति॥एवं खलु अहं अम्मताते जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि,जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि, तं इच्छामिणं अम्मयातोतुब्भेहिं अब्भणुणाते जाव पव्वइत्तए ॥ २३ ॥ तत्तेणं अतिमुत्तेकुमारं अम्मापियरो जाव नो संचाएंति बहुहिं

अर्थ

माता पिता से ऐसा बोला—अहो मातापिताओ ! मैं जानता हूं कि जो जन्मा है वो अवश्यही मरेगा, परंतु मैं ऐसा नहीं जानता हूं कि किस स्थान किस प्रकार किस प्रयोग कर मरूंगा. और भी अहो माता-पिताओं ! ऐसा नहीं जानता हूं कि किस कर्म करके जीव नरक तिर्यचादिगति में उत्पन्न होते हैं. किन्तु ऐसा जानता हूं कि जो जीव कर्मासक्त हैं वे नरकादिगतिमें अवश्य उत्पन्न होते हैं, अहो मातपिताओं! मैं इस प्रकार जिसे जानता हूं उसे नहीं जानता हूं और जिसे नहीं जानता हूं उसे जानता हूं. इसलिये अहो माता-पिताओं ! मैं चाहता हूं कि, जो आपकी आज्ञा होवे तो दीक्षा लेवूं ॥ २३ ॥ अब अतिमुक्त कुमार के

सूत्र

आघवेहिं पण्णवणेहिं ॥ तं इच्छामेते जाया ! एग दिवसममवि रायसिरि पासि॥ २४ ॥

तत्तेणं से अतिमुत्तकुमारे अम्मापिउ वयण मणूवत्तमाणे तुसाणिए संचिट्ठइ ॥ २५ ॥

अभिसेस जहा महाबलस्स, मिक्खमण जाव अणगारे जाए जाव सामाइय माइयाइ,

अर्थ

मातापिता अतिमुक्त कुमारको बहुत अग्रहकर प्ररूपना-समझाकर संसार के सुख संयम के दुःख कह बताकर संसार के भीगोंमें लुब्धाने समर्थ नहीं हुवे—रोक नहीं सके. तब कहने लगे कि—हे पुत्र! हम देखना चहाते हैं कि तू एक दिन तो भी राजलक्ष्मीको भोक्त बन ॥ २४ ॥ तब वह अतिमुक्त कुमार मातपिताका मन रखने उस वचन को उत्थापन नहीं करता मौन रहा ॥ २५ ॥ जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल कुमार का राज्याभिषेक का, दीक्षा उत्सव का अधिकार चला है उस ही प्रकार सब यहां जानना यावत् दीक्षा धारन कर अनगार साधु हुवे. [भगवती सूत्र के पांचवे शतक के चौथे उद्देशे में कहा है कि—उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के भद्रिक विनीत प्रकृतिवाले अतिमुक्त अनगार—कुमार श्रमण एकदा महा वृष्टी हुए बाद बाहिर भूमि को गये. वहां उन अतिमुक्त कुमार श्रमनने पानी के बहते हुवे प्रवाह को मृत्तिकाकी पाल बंध कर रोका, उस पानी में पात्री रख कर कहने लगे. यह—मेरी नाव तीरती है, यों कहते उस पात्री रूप नावको नाविक की तरह पानीमें तिराहानें लगे. यह ख्याल अन्य साथवाले स्थविर साधुओंने देखा और श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास आकर कहने लगे कि—आपका शिष्य अति-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ २ बहुई वासाई सामन्नपरियागं पाउणित्ता, गुणरयण संवच्छर तवोकम्मं जाव विउल सिद्धे ॥ १० ॥ पन्नरसम अज्झयण सम्मत्तं ॥ ६ ॥ १५ ॥

अर्थ

मुक्त कुमार साधु कितने भवकर मुक्ति जायगा ? भगवंतने कहा अहो आर्यों ! मेरा शिष्य अतिमुक्त कुमार साधु चरिम शरीरी है वह इस ही भव से मुक्ति जायगा. इसलिये अहो आर्यों ! तुम अतिमुक्त कुमार साधु की हीलना निन्दा मत करो परंतु अग्लानपने उन की भक्ति करो भक्तपानादि वैयावृत्य करो. स्थविर भगवंतने वैसा ही किया] अतिमुक्त कुमार श्रमनने इग्यारे अंगपद. पढकर गुणरत्न नामक संवत्सर तप किया, [जिसतप का यंत्र और विधी १०३ पृष्ट में देखो] बहुत वर्ष संयमपाला यावत् विपुलगिरी पर संथारा करके मुक्ति गये ॥ इति षष्ठम वर्ग का पंचदश अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ ॥ १५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

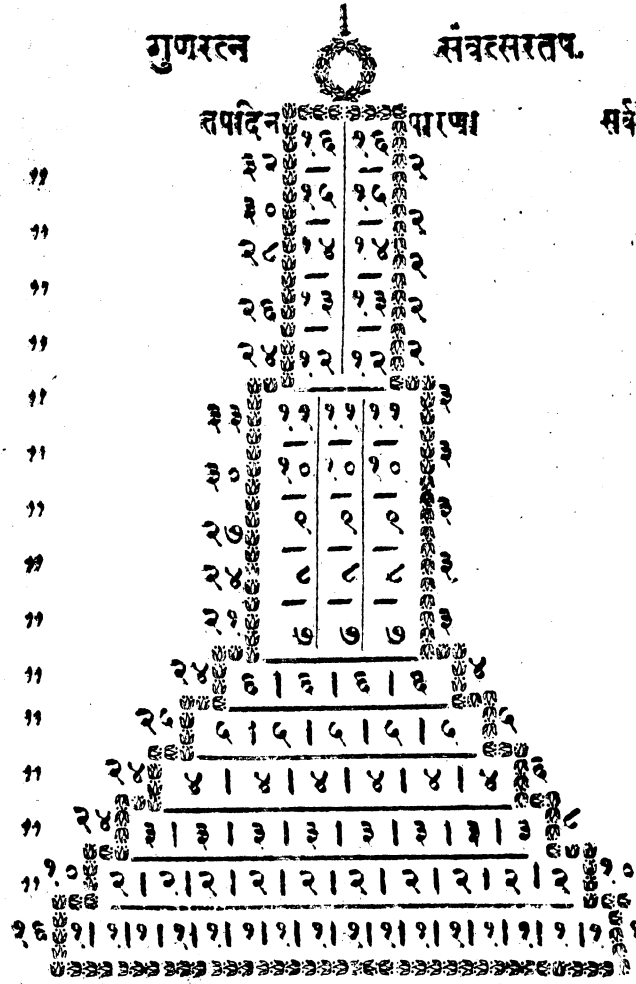

गुणरत्न संवत्सरतप.

तपदिन																	पारणा	सर्वदिन
३२	१६	१६															२	३४
३०	१५	१५															२	३२
२८	१४	१४															२	३०
२६	१३	१३															२	२८
२४	१२	१२															२	२६
३३	११	११	११														३	३६
३०	१०	१०	१०														३	३३
२७	९	९	९														३	३०
२४	८	८	८														३	२७
२१	७	७	७														३	२४
																		२८
२४	६	६	६	६													४	३०
२५	५	५	५	५	५												५	३०
२४	४	४	४	४	४	४											६	२८
२४	३	३	३	३	३	३	३	३									८	३२
१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२							१०	३०
१६	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१६	३२

इस की विधी-पहिले महिने एकान्तर उपवास, दूसरे महिने बेले २ पारना तीसरे महिने तेले२पारना, यावत् सोलवे महिने में सोले २ उपवास के पारना करे दिनको उत्कटासन से सूर्यकी आतापना लेवे और रात्रिको वस्त्र रहित वीरासन से ध्यानकरे. इस तपके सब तपदिन ४०७ पारणे के दिन ७३ यों सबदिन४८०होते हैं जिसके १४महिने होते हैं इतने में यह तप पूर्ण होता है.

सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीए नयरीए काम महावणे चेइए॥तत्थणं वाणारसीए अलक्खनामं रायाहोत्था॥ १ ॥तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए विहरति ॥ परिसाणिगाया ॥ २ ॥ तत्तेणं अलक्खराया इमिसे कहा लद्धट्ठ हट्ठ जहा कुणिए जाव पज्जुवासति॥ ३ ॥ धम्म कहा ॥४॥ तत्तेणं से अलक्खराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जहा उदाइतो तहा निक्खते, नवरं जेठ पुत्तं रयं अभिसंचाति ॥ ५ ॥ एक्कारस्स अंगाइ अहिज्जइ, बहुवासापरियाओ पाउणित्ता, विउलेसिद्धे ॥ सोलस्समं अज्झयणं सम्मत्तं॥६॥१६॥ इति छट्ठो वग्गो सम्मत्तं॥६॥

अर्थ

सोलहवा अध्ययन—उस काल उस समय में बनारसी नामक नगरी थी. कामवन नामक बाग था, वहां बनारसी नगरी में अलख नाम का राजा राज्य करता था ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आइ ॥ २ ॥ तब उस अलख राजा को यह खबर लगने से उववाइ सूत्र में कहे कोणिक राजा की तरह सजाइ सज्जकर दर्शनार्थ आया यावत् भक्ति करने लगा ॥ ३ ॥ भगवंतने धर्मकथा सुनाइ ॥ ४ ॥ तब अलख राजा भगवती सूत्र में कहे. उदायन राजा की तरह श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास दीक्षा धारन की, जिस में इतना विशेष उदायनने अपने भानजे (बहिन के पुत्र) को राज्य दिया था, और इनने अपने बडे पुत्र को राज्य दिया ॥ ५ ॥ दीक्षा धारन कर इग्यारे अंग पढे, बहुत वर्ष साधुपना पाला यावत् विपुलगिरी पर्वतपर संथारा कर मुक्ति गये ॥ ६ ॥ इति सोडश अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ १६ ॥ इति षष्टम वर्ग समाप्त ॥ ६ ॥

* सप्तम-वर्ग *

सूत्र

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, जइणं भंते! सत्तमस्स उक्खेवो जाव तेरस्स अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा-नंदा, नंदावती, चेव, नंदुत्तरा, नंदसेणिया, चेव ॥ मरूत्ता, सुमरुत्ता, महामरुत्ता, मरुदेवीय, अट्ठमा ॥१॥ भद्दा तहा सुभद्दा, सुजाया, सुमणीइया ॥ भूयदीणाय, बोधव्वा, सेणिय भज्जा णानामाइं ॥ २॥ जइणं भंते ! तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ॥ ० ॥ एवं खलु जंबु ! तेणं कालेणं तेणं समयणं

अर्थ

यों निश्चय, हे जम्बू ! श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी यावत् यावत् मुक्ति पधारे उनोंने षष्टम वर्ग का तो उक्त कथन कहा और सातवे वर्ग के तेरे अध्ययन कहे हैं. उन के नाम—१ नंदा राणी का, २ नंदवती राणी का, ३ नन्दुत्तरा राणी का, ४ नंदसेना राणीका, ५ मरूत्ता राणी का, ६ सुमरूत्ता राणी का, ७ महामरूत्ता राणी का, ८ मरुदेवी राणीका ॥१॥ ९ भद्दा राणीका, १० सुभद्दा राणीका, ११ सुजात राणी का, १२ सुमतीराणी का, और १३ भूतदीना राणी का. इस प्रकार यह तेरे ही श्रेणिक राजा की राणीयों जानना ॥ २ ॥ यदि अहो भगवन् ! सातवे वर्ग के तेरे अध्ययन कहे हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? ॥ २ ॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृही नगरी, गुण-

सूत्र

रायगिहे णयरे, गुणसिल चेइए, सेणिए राया, वण्णओ ॥ ३ ॥ तस्सणं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवीहोत्था वण्णओ ॥ ४ ॥ सामीसमोसढ्ढे परिसाणिग्गया ॥ ५ ॥ तत्तेणं सानंदादेवी इमिसे कहाल्डद्दट्ठेसमाणे हट्ठे, कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता जाव णवरं जहा पउमावइ जाव एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जित्ता वीसंवासाई परियाओ पाउणित्ता, जावसिद्धे ॥ सत्तमस्स वग्गस्सपढमज्झायणं ॥७॥१॥ एवं तेरस्सवि देवीओ नंदागमेणं नेयवा, निखवतं तेरस्सम्मं अज्झयणं सम्मत्त ॥७॥१३॥सत्तमो वग्गस्स॥७॥

अर्थ

शिला चैत्य, श्रेणिकराजा, इनका वर्णन् जानना ॥ उस श्रेणिकराजा के नंदानामे रानी सुखमाल यावत् सुरूपाथी ॥ श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी पधारे, परिषद्आइ, ॥ तब वह नन्दादेवी भगवंत का आगम सुनकर हर्षपाई, कोटुम्बिक पुरुष को बोला कर धर्मिकरथ सज्जकराया. पद्मावती रानीकी तरह आइ धर्मकथा सुनी, श्रेणिक राजा से पूछ कर दीक्षा ग्रहण की, इग्यारे अंग पढी, बीस वर्ष दीक्षा पाली, यावत् सिद्धगति को प्राप्त हुई ॥ इति सप्तम वर्ग का प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ ७ ॥ १ ॥ जिस प्रकार नंदा राणी का कथन कहा, इस ही प्रकार उक्त नाम प्रमाणे तेरेही राणीयों के तेरे अध्ययन अलग २ जानना. ॥ इति तेरे अध्ययन संपूर्ण ॥ इति सप्तम वर्ग समाप्त ॥ ७ ॥ + +

॥ अष्टम-वर्ग ॥

सूत्र

जइणं भंते! अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव णवरं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा काली, सुकाली, महाकाली, कण्हा, सुकण्हा, महाकण्हा, वीरकण्हाय बोधव्वा; रामकण्हा तहेव पियसेणकण्हा, नवमा, दसमी महासेनकण्हा ॥ १ ॥ जइणं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ २ ॥ एवं खलु जंबू ? तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाएनामं नगरी होत्था, पुणभद्दे चेइए, कोणिएराया ॥ ३ ॥ तत्थणं चंपाए णयरीए सेणियरण्णो

अर्थ

यदि अहो भगवन् ! आठमा वर्ग का उक्षेप—यावत् इतना विशेष—दश अध्ययन कहे. उन के नाम—१ काली राणी का, २ सुकाली राणी का, ३ महाकाली राणी का, ४ कृष्णा राणी का, ५ सुकृष्ण राणी का, ६ महाकृष्ण राणी का, ७ वीरकृष्ण राणी का, ८ रामकृष्ण राणी का, ९ प्रियसेन कृष्ण राणी का, और १० महासेन कृष्ण राणी का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन् ! आठवे वर्ग के दश अध्ययन कहे, तो अहो भगवन् ! प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? ॥ २ ॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नामकी नगरी थी, ईशान कौन में पूर्णभद्र नामका चैत्य था, कोणिक नामे राजा राज्य करता था ॥ ३ ॥ वहां चम्पा नगरी में श्रेणिक राजा की भारिया, कोणिक राजा की छोटी माता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मज्जा कोणियस्सरण्णो चुल्लमाउ कालीनाम देवी होत्था वण्णओ, अहा नंदा जाव सामाई माईयाइं एक्कारस्स अंगाइ अहिज्जति, बहुइं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे विरहति ॥ ४ ॥ तत्तेणं सा काली अज्जा, अण्णया कयाइं जेणेव अज्ज चंदणा अज्जा तेणेव उवागता, एवं वयासी-इच्छामिणं अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुणाय समाणी रयणावलिं तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए? अहा सुहं॥५॥ तत्तेणं से कालीअज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुणाया समाणी रयणावलिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति तंजहा-चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता सव्व काम गुणियं पारेइ पारेइत्ता छट्ठं

अर्थ

काली नाम की देवी रहती थी, वर्णन योग्य, जिस प्रकार नन्दा रानी का अधिकार कहा वैसा सब इसका भी जानना, यावत् दीक्षा धारणकर सामायिकादि इग्यारे अंगपढी, बहुत उपवास बेला तेला आदि तप करती हुई तप संयमसे आत्मा भावती हुइ विचरने लगी ॥ ४ ॥ तब काली आर्या अन्यदा किसी वक्त जहां आर्य चन्दबालाजी आर्जिका थी तहां आकर यों कहने लगी—अहो आर्याजी तुमारी आज्ञा होतो मैं रत्नावली तप अङ्गीकार कर के विचरूं ! चंदनबालाका आर्जिकाने कहा- जैसे सुख होवे वैसे करो॥५॥तब काली आर्जिका आर्य चन्दनबालाजी की आज्ञा पाकर रत्नावली तप अङ्गीकार किया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

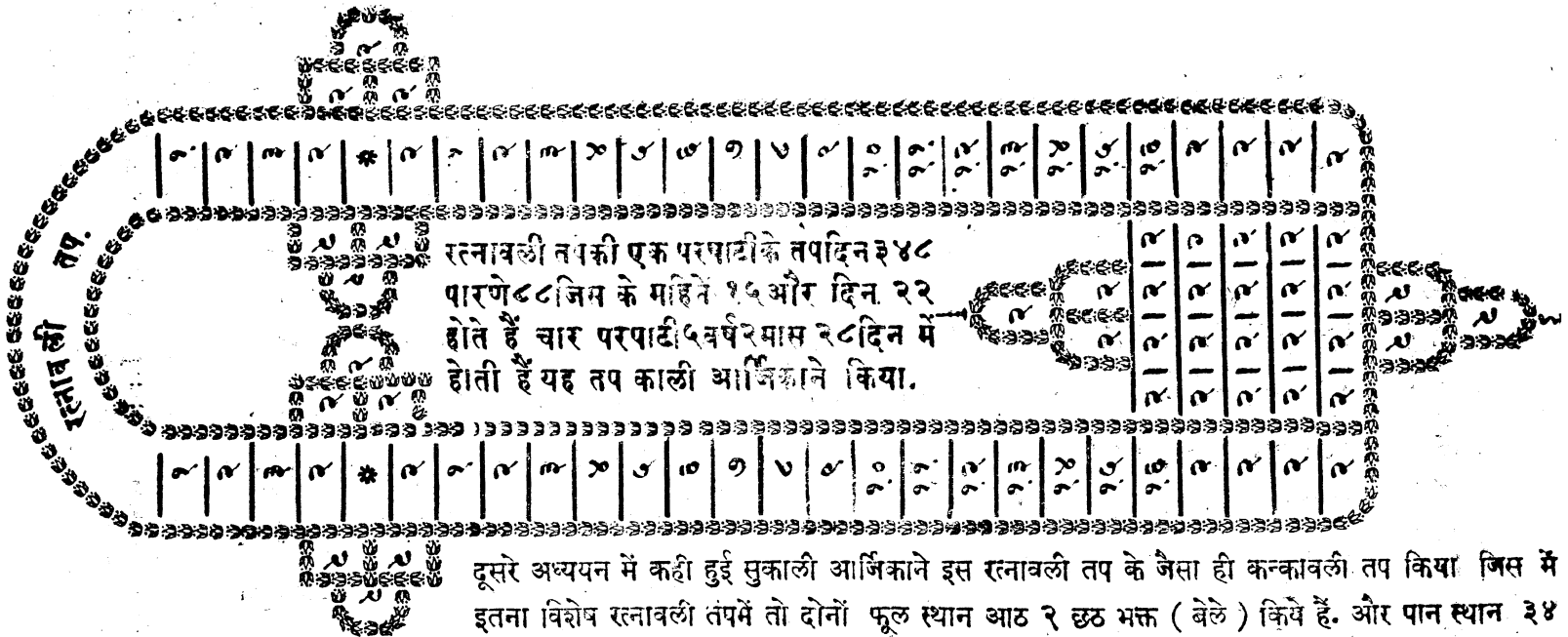

दूसरे अध्ययन में कही हुई सुकाली आर्जिकाने इस रत्नावली तप के जैसा ही कन्कावली तप किया जिस में इतना विशेष रत्नावली तपमें तो दोनों फूल स्थान आठ २ छठ भक्त (बेले) किये हैं. और पान स्थान ३४ छठ भक्त [बेले] किये हैं. और कन्कावली तप में दोनों फुल स्थान आठ २ अष्ठम भक्त [तेले] किये और पान स्थान ३४ अष्टम भक्त किये कन्कावली तप की एक लडके तपदिन ४३४ होते हैं और पारना ८८ होते हैं. जिस के महीने १७ और दिन १२ होते हैं. चारों लडो ४ वर्ष ९ महिने १८ दिन में होतीं है. पारने की विधी सूत्र में कहे प्रमाणे जानना.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता, अट्ठमं करेइ २ त्ता सव्वगुण पारेइ २ त्ता, अट्ठ छट्ठाइं करेति २ त्ता, सव्व काम गुण पारेइ २ त्ता, चउत्थ करेति २ त्ता सव्व काम गुणियं पारेति २ त्ता, छट्ठं करेति २ त्ता सव्व कामगुणियं पारेति २ त्ता अट्ठमं करेति २, त्ता सवकामगुण पारिति, दसमं करेति २ त्ता, सव्व काम गुन परिति, दुवालसमं करेति, सव्व काम०, चौदसमं करेति, सव्व० सोलसमं करेति, सव्वकाम०, अट्ठारसमं करेत्ति सव्व काम०, वीसइमं करेति. सव्व काम०, बावीसइमं करेति, सव्व काम० चउवीसइमं करेति २, सव्व काम० छव्वीसइमं

अर्थ

तद्यथा—चौथ भक्त (एक उपास) किया, चउत्थ भक्त कर, सर्व प्रकार के रसोपभोगकर पारना किया, पारनाकर छठ भक्त [बेला] किया बेलाकर सर्व प्रकार के रसोपभोगकर पारना किया, पारना कर अठम (तेला) किया, तेलाकर सर्व प्रकार के रसोपभोग का पारना किया, फिर आठ छठ भक्त [बेले] किये, फिर पारना किया चउत्थ भक्त किया, पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया, अट्ठम भक्त (तेला) कर पारना किया, दशम भक्त (चोला) कर पारना किया द्वादशम भक्त (पचोला) कर पारना किया, चौदह भक्त (छ उपावास) कर पारना किया, सोलह भक्त [सात उपवास] कर पारना किया, अठारा भक्त (आठ उपवास) कर पारना किया, बीस भक्त [नव

सूत्र

करेति, सव्व काम०, अट्ठावीसइमं करेति, सव्व काम गुण०, तीसइमं करेति, सव्व काम०, बत्तीसइमं करेति २ त्ता, सव्व काम गुण परेति २ त्ता, चौतीसइमं करेति २ त्ता, सव्व काम गुण पारेत्ति २ त्ता, चउत्तीस छट्ठाइं करेति, २ त्ता सव्व काम गुण पारेति ॥ चउतीसइमं करेइ, २ त्ता, सव्वकाम गुण परेइ २ त्ता, बत्तीसइमं करेइ, सव्व काम गुण०, तीसइमं करेइ सव्व काम गु०, अट्ठाइसमं करेइ सव्व काम०, छव्वीसइमं करेइ, सब काम०, चोवीसइमं करेइ,-सव्व काम० बावीसइमं करेइ, सव्व काम गुग० बीसइमं करेइ, सव्व काम०, अट्ठारसमं

अर्थ

उपवास] कर पारना किया, बावीस भक्त (दश उपवास) कर पारना किया, चौवीस भक्त (इग्यारे उपवास) कर पारना किया, छव्वीस भक्त (बारे उपवास) कर पारना किया, अठावीस भक्त (तेरे उपवास) कर पारना किया, तीस भक्त (चौदे उपवास) कर पारना किया, बत्तीस भक्त [पन्नरे उपवास] कर पारना किया, चौतीस भक्त (सोले उपवास) कर पारना किया, फिर चौंतीस छठ भक्त (बेले) किये, फिर पलटे चौंतीस भक्त (सोले उपवास) कर पारना किका, बत्तीस भक्त कर पारना किया, तीस भक्त पारना किया, अठाइस भक्त कर पारना, छब्बीस भक्त कर पारना किया, चौवीस कर पारना किया, बावीस भक्त कर पारना किया, बीस भक्त कर पारना किया अठारा, भक्त कर पारना किया, सोलह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

करेइ २त्ता सव्व काम गुण० सोलस्सम करेति, सव्वकाम० चउद्दसमं करेइ, बारसमं करेइ सव्व काम०सव्व काम०, दसमं करेइ, सव्व काम० अट्ठमं करेइ सव्व काम० छट्ठ करेइ २ त्ता, सव्व काम गुण पारेइ, चौथ पारेइ २ त्ता, कामसव्व० अट्ठ छट्ठाइं करेइ २त्ता, सव्व काय गुण पारेइ, २ त्ता, अठमं करेइ २त्ता, सव्व काय गुग पारेइ २त्ता, छट्ठं करेइ २ त्ता, सव्व कमा० चउत्थं करेइ २ त्ता सव्व काम गुणं पारेइ २ त्ता ॥६॥ एवं खलु एसा रयणावलीए तवो कम्मस्स पढमापारिवाडी; एगेणं संवच्छरेणं तिहिंमासेहिं बावीसाए अहोरत्तेहिं, अहासुत्तं जाव आराहिया भवति ॥ ७ ॥ तयाणं तरंचणं दोच्चा

भक्त कर पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, बारेह भक्तकर पारना किया, दशभक्त कर पारना किया, अष्टम भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, फिर आठ छठ भक्त किये, अष्टम भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, और चौथ भक्त [एक उपवास] कर सर्व प्रकार का रसोपभोगकर पारना किया ॥ ६ ॥ यों निश्चय यह रत्नावली तपकर्म की प्रथम परिपाटी हुई, इस के करने में एक वर्ष तीन महीने, बाइस अहो रात्रि लगी है, इस प्रकार सूत्र में कहे मुजब यावत् तपका आराधन किया॥७॥ तब फिर उस कालीराणीने दूसरी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

परिवाडीए—चउत्थं करेति २त्ता विगइवज्जं पारेइ २त्ता, छट्ठं करेइ, विगइवज्जं पारेइ, एवं जहा पढमाए परिवाडीए तहा बीआएवी णवरं सव्वत्थ पारणए विगइवज्जं पारेति जाव आराहिया भवइ ॥ ८ ॥ तयाणं तरंचणं तच्चा परिवडीए चउत्थं करेइ अलेवाडं पारेति जाव आराहिआ भवइ ॥ ९ ॥ एवं चउत्थावि परिवाडी नवरं सव्व पारणाइ आयंबिलं पारेइ २ त्ता सेसं तंचेव ॥ (गाथा) पढमंमि सव्व काम

अर्थ

वरवाडी अंगीकार की—चउथ भक्त किया करके, विगय (दूध, दही, घी तेल मिठाइ) छोडकर बाकी आहार से पारना किया. ऐसे ही—छठ भक्त कर पारना किया, ऐसे ही अष्टम भक्तकर पारना किया, फिर आठ बेले किये, उन का पारना भी विगय छोडकर किया, फिर चौथ भक्त से लगाकर चौतीस भक्त तक चडता तप किया, फिर चौंतीस छठ भक्तकर पारना किया, फिर चौतीस भक्त से लगाकर चौथ भक्त तक उतरता तप किया, फिर आठ छठ भक्त किये, अष्टम भक्त छठम भक्त और चौथ भक्त कर पारना किया, यों इस दूसरी परीपाटी तपका पारना सब विगय रहित किया॥८॥फिर तीसरी परिपाटी भी इस ही प्रकार की विशेष इतना कि—इस में तप के पारने सब निर्लेप (जिस का लेप न लगे जो मवाही—पतला पदार्थ न हो) उस से पारना किया ॥ ९ ॥ चौथी परीपाटी भी इस ही प्रकार तप किया, जिस तप के पारने में आयंबिल (एक प्रकार का भूंजा हुवा धान्य पानी में भींजोकर खाकर)

सूत्र

गुण पारे, वितियंते विगय वज्जं; तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलमी चउत्थंमि ॥ १ ॥ तत्तेणं सा काली अज्जा तं रयणावली तवो कम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहिंअमासेहिंय अठावीसाए दिवसेहि अहासुत्तं जाव आराहेत्ता, जेणेव अज्ज चंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छाति अज्ज चंदणंच, वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता बहुहिं चउत्थं जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ ११ ॥ तत्तेणं सा कालीअज्जाए तेणं उरालेणं जाव धम्मणिसंतए जातेयावि होत्था से जहा नामए इंगाल सगडेइवा जाव हुयासणेइव भासा॰

अर्थ

पारना किया ॥ १० ॥ गाथार्थ—प्रथम परिपाटी में सर्व प्रकार के रसोपभोग कर पारना किया, दूसरी परिपाटी में पांचो विगय को छोडकर पारना किया, तीसरी परिपाटी में जिस वस्तु का लेप लगे ऐसी वस्तु को छोडकर पारना किया, और चौथी लड में आयंबिल कर पारना किया ॥ १० ॥ तब वह काली आर्जिका को उस रत्नावली तप करने में पांच वर्ष दो महिने, अठावीस दिन रात्रि लगे. रत्नावली तप को काली आर्जिकाने सूत्रोक्त विधी प्रमाण आराध कर जहां चंदनबाला आर्जिका थी तहां आई, चंदनबाला आर्जिका को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर बहुत चौथ भक्त छठ भक्तकर यावत् अपनी आत्मा को भावती विचरने लगी ॥ ११ ॥ तब काली आर्जिका उस औदार प्रधान तप करके यावत् उस के शरीर की नाशाजाल देखाने लगी, ऐसी दुर्बल बनगई किन्तु उस तप के तेज कर जिस प्रकार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

रासि पलिछिणाति तवेणं तेएणं तवतेअसिरीए अतीव उवासोभेमाणी २ चिट्ठती॥ १२॥ तएणं साकाली अज्जा तेअण्णयाकायाति पुव्वरत्ता वरत्तकाल समयंसि अयं अज्झत्थिए जहा खंधएस्सवि, जहा जाव अत्थिमे उट्ठाणे जाव पुरिसकार परकमे जावमे सेयकलं जाव जलंते अज्जचंदणा अज्जं आपुच्छित्ता, अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुणाए समाणाए संलेहणा झूसणा भत्तपाणं पडियायक्खे कालंअणव कंखमाणं विहारित्तए तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ कत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अज्जचंदणस्स वंदति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामिणं अज्जाओ तुब्भेहिं अब्भणु

अर्थ

राख से ढकी हुइ अग्नि प्रदिप्त रहती है. उस प्रकार शोभा देने लगी ॥ १२ ॥ तब वह काली आर्जिका अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे भगवती में कहे स्कन्धकजी के जैसा विचार किया यावत् जहां तक मेरे शरीर में शक्ति है उत्थान कर्मबल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम है, तहां तक मैं प्रातःकाल होते ही आर्य चन्दनजी आर्जिका को पूछ कर, आर्य चन्दनजी की आज्ञा प्राप्त होते संलेषणा झोंसना कर, आहार पानी का प्रत्यख्यान कर काल की वांच्छा नहीं करती हुइ विचरूं. ऐसा विचार किया, ऐसा विचार कर प्रातःकाल होते ही जहां आर्य आर्जिका चंदना थी तहां आइ, आकर चन्दना आर्जिका को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी-अहो आर्जिकाजी ! जो आपकी आज्ञा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णाएसमाणा संलेहणा जाव विहरति ? अहा सुहं ॥ १३ ॥ तत्तेणं सा काली अज्जा चंदणाए अब्भणूणायासमाणी संल्लेहणा ज्झूसिया जाव विहरित्तए ॥ १४ ॥ तत्तेणं सा कालीअज्जा चंदणाए अंतिए समाइमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइ अहिज्जित्ता, बहु पडिपुणाइं अट्ठ संवच्छराइं समणे परियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए करेति जाव चारिमुसासेहिं सिद्धा ॥ ॥ १५ ॥ अट्ठमस्स वग्गस्स पढमज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥ १ ॥ * तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाएणामं णयरी होत्था, पुण्ण भद्देचेइए, कोणिएराया,

अर्थ

हो तो मैं चहाती हूं कि सलेषना कर यावत् विचरूं ? चंदनबाला आर्जिका बोली-जिस प्रकार सुख हो उस प्रकार करो ॥ १३ ॥ तब कालि आर्जिका चन्दबाला आर्जिका की आज्ञा से सलेषना झोंसना कर यावत् विचरने लगी ॥ १४ ॥ तब काली आर्जिका चंदनबाला आर्जिका के पास सामायिकादि इग्यारे अंग पढी थी, उसे याद करती, बहुत प्रतिपूर्ण आठ वर्ष श्रमण—साध्वी की पर्याय का पालन कर, एक महीने की सलेषना से आत्मा को झोंसकर, साठ भक्त अनशन का छेदन कर, जिस के लिये मुण्डित हुई थी वह कार्य सिद्ध किया यावत् चरम उश्वास निश्वास में सिद्ध हुई यावत् सर्व दुःख का अन्त किया ॥१५॥ इति अष्टम वर्ग का प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥ १ ॥ उस काल उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तत्थणं सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्सरण्णो चुल्लमाउया, सुकालीणामं देवीहोत्था, जहा काली तहा सुकाली निक्खन्ता जाव बहुहि चउत्थं जाव भावमाणे विहरइ ॥ १ ॥ तत्तेणं सुकाली अज्जा अन्नयाकयाइ तेणेव अज्जचंदणाए अज्जा जाव इच्छा-मिणं अज्जा तुब्भेहि अब्भणुणाए समाणी कणगावली तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विह-रित्ताए! एवं जहा रयणावली तहा कणगावाली, नवरं तीसुट्ठाणेसु अट्ठमाइ करेति, जहिय रयणावली, छट्ठाइ ॥ २ ॥ एक्काएक्काएपरिवाडिए संवच्छरे पंचमासा

अर्थ

पूर्णभद्र यक्ष का चैत्य था, कोणिक नाम का राजा था, तहां श्रेणिक राजा की भारिया, कोणिक राजा की छोटी माता, सुकाली नाम की राणी थी, जिस प्रकार काली राणीने दीक्षा ली उस ही प्रकार सुकाली राणीने भी दीक्षा ली यावत् बहुत प्रकार चउत्थ भक्त छठ भक्त अष्टम भक्त आदि तप करती हुई विचरने लगी॥१॥ तब सुकाली आर्जिका अन्यदा किसी वक्त जहां चंदनबाला आर्जिका थी तहां आई, वंदना नमस्कार कर कहने लगी—मैं चहाती हूं आपकी आज्ञा हो तो कनकावली तप कर्म अंगीकार कर विचरूं? यों जिस प्रकार रत्नावली तप का कथन कहा तैसा ही सब कनकावली तप का भी कहना, जिस में विशेष इतना उस तप के तीन स्थान में बेले किये थे, प्रथम स्थान में आठ दूसरे स्थान में [तप के मध्य में] चौंतीस, तीसरे स्थान में आठ, और इस तप में तीनों स्थान में इतने ही तेले किये, और सब तैसे ही जानना. इस तप की एक परीपाटी में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

वारस्सय अहोरत्ता ॥ ३ ॥ चउण्हं पंचवरिसा, नवमासा अट्ठारस्स दिवसा सेसं तहेव ॥ नववासा परियातो जाव सिद्धा ॥ बीय अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ २ ॥

एवं महाकालीवी, णवरं-खुडाग सीहानि कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तंजहा-चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुण पारेइ २ त्ता, छट्ठंकरेइ करेइ २ त्ता, सव्व-कामगुण पारेइ २ त्ता, चउत्थं करेति २ त्ता, सव्वकामगुण०, अट्ठम करेइ २, सव्वकामगुण०, छट्ठंकरेइ २, सव्वकाम०, दसमंकरेइ २, सव्वकाम०,अट्ठमंकरेइ २ सव्वकाम०, दुवालसमं करेइ, सव्वकामगु०, दसमंकरेइ २, सव्वकाम०, चउद्दसमं करेइ २, सव्वकामगु०, दुवालसमं करेइ २, सव्वकाम०, सोलस्समं करेइ,

अर्थ

एक वर्ष पांच महीना बारे अहोरात्रि लगी और चारों परीपाटी में पांच वर्ष नव महीने अठारे दिन लगे. शेष अधिकार तैसा ही जानना. नव महीने दीक्षा पाल यावत् सिद्ध हुई ॥ इति अष्टम वर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥ ८ ॥ २ ॥ ऐसे ही महाकाली रानी का भी सब अधिकार जानना जिस में इतना विशेष—लघु सिंहकी क्रीडा का तप अंगीकार कर विचरने लगी—तद्यथा—चौथ भक्त किया, करके, सर्व प्रकार के रसोपभोगकर पारना किया, ऐसे ही छठ भक्त कर पारना किया, चौथ भक्तका पारना किया, अष्टम भक्तका पारना किया, छठभक्तका पारना किया, दशांगकर पारना किया

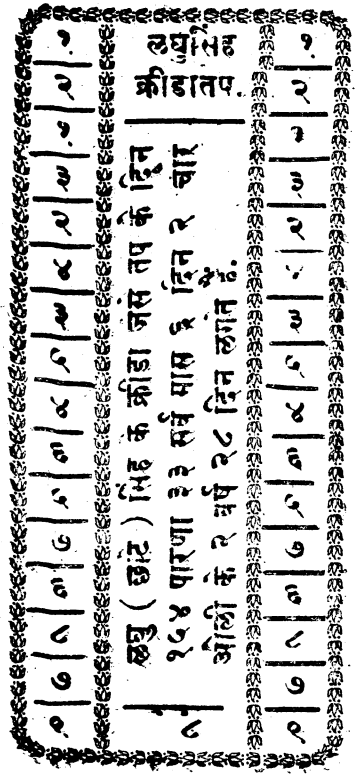

१	लघुसिंह क्रीडातप.	१
२		२
१	लघु (छोटा) सिंह के क्रीडा जस तप के दिन	१
३	१५४ पारणा ३३ सर्व मास ६ दिन ७ चार	३
२	ओली के ४ सर्व २८ दिन लागे	२
४		४
३		३
५		५
४		४
६		६
५		५
७		७
६		६
८		८
७		७
९	८	९

सव्वकाम०, चउदसमं करेइ, सव्वकाम०, अट्ठारसमं करेइ, सव्वकाम०, सोलस्समं करेइ २, सव्वकामगु०,वीसइमं करेइ २,सव्वकामगु०, अट्ठारसमं करेइ, सव्वकामगु०,वीसइमंकरेइ २,सव्वकाम०,सोलस्सम करेइ २,सव्वकागुण०, अट्ठारसमं करेइ, सव्वकावि०, चादसमे करेइ २, सव्वकागुण०, सोलस्समं करेइ २, सव्वकाम०,

अष्टम भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, चउदह भक्तकर पारनाकिया, द्वादश भक्तकर पारनाकिया सोलह भक्तकर पारनाकिया, चौदह भक्तकर पारनाकिया, अठारा भक्त पारनाकिया, सोलह भक्तकर पारना किया,वीसभक्तकर पारनाकिया, अठारा भक्तकर पारनाकिया बीसभक्त कर पारना किया, सोला भक्त कर पारना किया, अठार भक्त कर पारना किया, चोदह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

बारसमं करेइ २, सव्वकामगुण, चोद्दसमं करेइ २,सव्वकामगुण०, दसमंकरेइ,सव्वकाम० दुवालस्समं करेइ, सव्व काम गुण० अट्ठमं करेइ, सव्व काम० दसमं करेइ, सव्व काम गुण०, छट्ठं करेइ २ सव्व काम गुण पारेइ २ त्ता, चउथं करेइ सव्व काम गुण पारेइ ॥ १ ॥ तहेव चत्तारी परिवाडी ॥ एक्काए परिवाडिए छमासा सत्ताय दिवसा, चउण्हं दोवरिसा, अट्ठावीस दिवसा ॥ जाव सिद्धा ॥ २ ॥ तच्चिय अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ ३ ॥ एवं कण्हावि णवरं महालियं सीहनि कीलियं तवो

अर्थ

भक्तकर पारना किया, सोलह भक्तकर पारना किया, बारेभक्तकर पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, अष्टम भक्त भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, अष्टम भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया और चौथ भक्तकर सर्व प्रकार का रसोपभोगकर पारना किया ॥ १ ॥ यह एक परपाटी हुई, इस ही प्रकार चारों परिपाटी जानना दूसरी के पारने में विगय छोडी तीसरा के पारने में लेप आहार छोंडा और चौथी परपाटीके तपके पारनेमें आबिलकिये॥२॥ इसकी एक परपाटी में छे महीने और सात दिनलगे और चारों हा परीपाटी में दो वर्ष अठावीस दिन लगे ॥ यावत् सिद्ध हुई ॥ इति अष्टम वर्ग का तृतीय अध्ययन समाप्त ॥ ८ ॥ ३ ॥ ऐसे ही कृष्ण रानी का भी जानना यावत् दीक्षा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कम्मं, जहित्र खुड्डागं, णवरं चोतीसइमं जाव नेयत्रं, तहेव उसारेयत्रं ॥ १ ॥ एकाए परिवाडिए वरिसं छमासाय, अट्ठारस्सय दिवसा, चउण्हं छवरिसा, दोमासा धारसय अहोरत्ता, सेसं जहा कालीए तहा, जाव सिद्धा ५ ॥ चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ४ ॥ एवं सुकण्हावि णवरं सत्तमं सत्तमियं भिक्खू पडिमं उवसं पज्जित्ताणं विहरति, तंजहा-पढमए सत्तए एकक्के भोयणस्स दत्तिओ पडिग्गाहेति

अर्थ

धारन कर इसने बडे सिंहकी क्रीडा का तपकिया ॥१॥ जिस प्रकार छोटे सींहकी क्रीडाके तपका कथन कहा उसही प्रकार बडेसिंहकी क्रीडाके तपका भी अधिकार जानना जिसमें इतना विशेष लघुसिंहकीक्रिडा केतप में तो बीस भक्त (९ उपवास तक) तप करके पीछे फिरते और इस में चौंतीस भक्त (१६ उपवास) तप कर उसही प्रकार पीछे फिर व उपरोक्त रीति प्रमाणेही घटाना चाहिये ॥२॥ इसकी एक पाटी में एक वर्ष छ महीने और अठारे दिन लगे, और चारों परीपाटी में छ वर्ष दो महीने बारे अहो रात्रि लगी ॥ ४ ॥ शेष अधिकार काली रानी जैसा जानना यावत् सिद्ध हुई ॥ इति अष्टम वर्ग का चतुर्थ अध्ययन समाप्तम् ॥ ८ ॥ ४ ॥ + ॥ ऐसे ही सुकृष्णा रानी का भी अधिकार जानना, जिस में इतना विशेष सातवी सातअहो रात्री की भिक्षुक की प्रतिमा अंगीकार कर विचरने लगी—तद्यथा—प्रथम सातदिन तक सदैव एक दाति आहार की और एक दाती पानी की ग्रहण की, दूसरे सप्त में सात

सूत्र

एक्केकं पाणयस्स, दोच्चा सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणगस्स पडिग्गाहेति, तच्चा-सत्ताए तिणि भोयण पाण, चउत्थचउ, पंचमेपंच, छट्ठं छ, सत्तमसत्ताए सत्त २ दत्ताओ भोयणस्स पडिग्गाहेति, सत्त पाणस्स ॥ १ ॥ एवं सत्तामियंत्ति भिक्खू पडिमं एकुणपणाए राई दिएहिं, एगेणय छणउएणं भिक्खासएणं ॥ अहासुत्तं जाव आराहितित्ता ॥ २ ॥ जेणेव अज्ज चंदणा अज्जा तेणेव उवागया, अज्ज चंदणाय अज्जायं वंदइ नमंसेइ एवं वयासी—इच्छामिणं अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुणाया समाणी, अट्ठट्ठमियं भिक्खु पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ? अहासुहं ॥ ३ ॥ तत्तेणं सा सुकण्हा अज्जा

अर्थ

दिन सदैव दो दाती आहारकी और दो दाती पानी की ग्रहण की, तीसरे सप्त में सात दिन तक सदैव तीन दाति आहार और तीन दाति पानी की ग्रहण की, इस प्रकारही चौथे सप्त में चार २ दाती, पांचवे में पांच२ दाती छठे में छेछे दाती, और सातवे सप्तमें सात दाती आहार की और सात दाति पानीकी ग्रहण की ॥ १ ॥ यों निश्चय सातकी सात सप्त की भिक्षुकी प्रतिमा में गुन पचास अहो रात्रि लगी और सब दाति एक सो छिन्नू हुई. जिस का सम्यक् प्रकार से सुत्रोक्त विधी प्रमान यावत् आराधन किया, ॥ २ ॥ जहां चंदन बालेका आर्जिका थी तहां आई, आर्य चंदन बाला आर्जिका को वंदना नमस्कार कह यों कहन लगी—चहातीहूं अहो आर्जिकाजी जो आपकी आज्ञाहो तो आठमी आठ २ दिन की भिक्षुकी प्रतिमा अंगीकार कर विचरू ? ॥ चंदन बाला आर्जिकाने कहा जैसे सुख होवे वैसे करो ॥ ३ ॥ तब वह सुकृष्णा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

चंदणाए अब्भणुण्णाय समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खू पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥ पढमं अट्ठते एक्कं भोयणस्स दत्ति, एक्कं पाणगस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठ भोयणस्स पडि-गाहेति अट्ठ पाणस्स एवं खलु एवं अट्ठट्ठमियं भिक्खु पडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं, दोहिय अट्ठसाएहिं भिक्खासतेहिं॥४॥अहा जाव नवनवमियं भिक्खू पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, पढमेनव के एक्केक्कं भोयणदात्ति, एक्कक्क पाणस्स जाव णवमे णवके णव दत्ति भोयण पडि० नव पाणस्स एवं खलु नवमियं भिक्खु पडिमं एक्कासीए राइंदिएहिं, चउहिं पचुत्तरेहिं, भिक्खासत एहिं, अहासुत्तं ॥५॥ दस दसमियं भिक्खू पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरई, पढमे दसके

अर्थ

आर्जिका आर्य चंदना आर्जिकाजी की आज्ञा प्राप्त होते आठमी आठ२ दिन की भिक्षूकी प्रतिमा अंगीकार कर विचरने लगी—जिस मे प्रथम आठ दिनतक एक दात आहार की एक दाति पानी की, दूसर आठ दिन तक दो दाति आहार की दो दाति पानी की यावत् आठवे आठदिन तक आठ दाति आहार कि और आठ दाति पानी की ग्रहण की ॥ इस के सब दिन ६४ लगे और सब दाति दोसो अठ्यासी हुई ॥ ४ ॥ फिर नववी नव २ दिन की भिक्षुकी प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी—प्रथम के नव दिन तक नव दाती आहार की नव दाती पानी की यावत् नवव नवदिन तक नवदाति आहार की और नव दाती पानी की ग्रहण की ॥ यों निश्चय नववी भिक्षुक की प्रतिमा इक्यासी दिन में हुइ जिस की दाती चारसो पचहतर हुइ ॥ ५ ॥ फिर दशमी दशदिन की भिक्षुकी प्रतिमा अंगीकार करके

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

एक्केक्कं भोयणदत्ति पडिमं एक्केक्कं पाण, जाव दस दस भोयणदत्ती, पडिग्गहेति दसपाण ॥ एवं खलु एयं दसमियं भिक्खू पडिमं एक्के पडिमं एक्केणराइंदिय सएणं अद्धछट्ठछट्ठेहिव भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहेति २ त्ता ॥ ६ ॥ बहुहिं चउत्थ जाव मासद्धमास विविहं तवोकम्मेणं आयाणं भावेमाणे विहरति ॥७॥ तएणं सा सुकण्हा अज्जा तेहिं, उरालेणं जाव सिद्धा ॥ निक्खेवओ ॥ पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ ५ ॥ एवं मता कण्हावि, णवरं खुडुयं सव्वतो भद्दपडिमं

अर्थ

विचरनेलगी—जिसमे प्रथम के दशदिनतक में एकदाति आहारकी और एकदाति पानीकी, दूसरे दशदिनतक दो दाति आहार की दो दाति पानी की यावत् दशवे दशदिनतक दश दाति आहारकी और दश दाति पानीग्रहण की ॥ यों निश्चय दशवी प्रतिमा में सब सो (१००) दिन लगे, और इसकी सबदाति पचास कम छसो [५५०] हुइ ॥ यथा सूत्रोक्त विधी प्रमान आराधी ॥ ६ ॥ फिर बहुत से चउथभक्त छठ भक्त मासखमन आधामहीना आदि अनेक प्रकार के तपकर अपनी आत्मा को भावती हुई विचरने लगी ॥ ७ ॥ तब सुकृष्णा आर्जिका उग्र उदार तप कर दुर्बल हुई यावत् सलेषना कर सिद्ध हुई ॥ ८ ॥ अष्टम वर्ग का पंचम अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥ ५ ॥ ऐसे ही महाकृष्णा राणी भी दीक्षा धारन कर विचरने लगी, जिस में इतना विशेष इसनें छोटी सर्वतो भद्र प्रतिमा की—

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भद्र प्रतिमा.

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

भद्रप्रातिमा तपके तपा
दिन७५पारणे२५

उवसं पाजित्ताणं विहरंति, तंजहा—चउत्थं करेति२ त्ता, सव्वकामगुणियं पारेता २, छट्ठं करेति २ त्ता सव्व कामं गु०, अट्ठमं करेति २ त्ता, सव्वकाम गुण०, दसमं करेति २ त्ता, सव्व काम गुणं, दुवाल समं करेति २, त्ता सव्वकामं गुण० अट्ठमं करेति २ त्ता, सव्वकाम गुण०, दसमं करेति २ त्ता, सव्व काम गु०, दुवालसमं करेति २ त्ता, सव्व कामं०, चउत्थं करेति २, सव्वकाम, छट्ठं करेइ २, सव्व

अर्थ तद्यथा—चौथ भक्त किया, करके सर्व प्रकार के रसोपभोग भोगकर पारना किया, ऐसे ही छठ भक्त का पारना किया, अष्टम भक्त का पारना किया, दशम भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, अष्टम भक्त कर पारना किया, दशम भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, चउत्थ भक्त कर पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, चौथम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

काम; दुवालसमं करेति, सव्व काम० चउत्थं करेति, सव्व काम०, छट्ठं करेति २, सव्व कामगुण० अठम करेइ २, सव्वकाम०, दसमं करेति २, सव्व काम० छट्ठं करेति २; सव्वकाम० अट्ठमं करेइ २, सव्वकाम०, दसमं करेइ २, सव्वकाम०, दुवालसमं करेति २, सव्वकाम०, चउत्थं करेति, २ सव्वकाम गु०, दसमं करेति २, सव्व काम गु० दुवालसमं करेति २, सव्वकाम २, चउत्थं करेउि २, सव्वकाम०, छट्ठं करेइ २ सव्वकाम गु०, अट्ठमं करेइ, सव्वकाम गुण, ॥ १ ॥ एवं खलु खुडाग सव्वतो भद्दस्स तवो कम्मस्स पढम पडिवाडी,

अर्थ

भक्त कर पारना किया, छठ भक्त पारना किया, अष्टम भक्त कर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, अष्टम भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, और अष्टम भक्तकर सर्व रस का उपभोग कर पारना किया ॥ १ ॥ यों निश्चय सर्वतोभद्र तप कर्म प्रतिमा प्रथम परवाडी तीन महीने दश दिन में सूत्रोंक्त विधी प्रमाणे आराधी ॥ २ ॥ फिर दूसरी पारवाडी अंगीकार की, जिस में चोथ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तिहिं मासेहिंय, दसहिय दिवसेहि, आहासुत्तं जाव आराहेत्ता ॥ २ ॥ दोच्चाते पडिवाडाए, चउत्थ करेति २, विगइ वज्जं पारेति ॥ जहा रयणावली तहा एत्थवि चत्तारी परिवाडितो, पारणा तहेव ॥ ३ ॥ चउण्हं काला संवच्छरमासो दसहिय दिवसा, सेसं तहेव जब सिद्धा ॥ ४ ॥ निक्खव ३ छट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥८॥६॥ एवं वीरकण्हावि, णवरं महालयं सव्वतो भद्दं तवो कम्मं उवसंपाज्जित्ताणं विहरति ॥ तंजहा चउत्थं करेति २त्ता सव्व कामं० छट्ठं करेइ, सव्व काम०, अट्ठमं करेइ २, सव्वकाम०, दसमं करेति २ त्ता सव्वकामगु०, दुवालसमं करेइ, सव्वकामगु०, चोदसमं करेइ,

अर्थ

भक्तादि सर्व तप उक्त विधी प्रमाणे किया. इस में इतना विशेष पारने में पांचों विगय का त्याग किया तीसरे में लेप लगे ऐसे आहार का त्याग किया और चौथी लडके सब पारने में आयंबिल किया इस प्रकार चारों परिवाडी जानना. जिस की पारना की विधी रत्नावली तप जैसी जानना ॥ चारों परवाडी का काल—एक वर्ष एक महीना दश दिन, शेष कथन तैसा ही जानना यावत् सिद्ध हुई ॥ इति अष्टम वर्ग का षष्टम अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥ ६ ॥ ऐसे ही वीर कृष्णा राणी का भी जानना. यावत् दीक्षा धारन कर विविध प्रकार के तप करने लगी, इस में इतना विशष बडो सर्वतोभद्र प्रतिमा रूप तप कर्म अंगीकार कर विचरने लगी—तद्यथा—चौथ भक्त कर सर्व प्रकार के रस का उपभोग कर पारना किया, ऐसे ही—छठ भक्त कर पारना किया, अठम भक्त कर पारना किया, दशम भक्त कर पारना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सर्वतोभद्र प्रतिमा.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	४
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	८	१	३	३	४

महाभद्र प्रतिमा तप का तपो दिन १९६ पारणे ४९.

सव्वकाम०, सोलसमं करेइ, सव्वकामगुण०, एकालया ॥ १ ॥ दशमं करेति, सव्वकामगुण०, दुवालसमं करेती सव्वगुण० चौदशमं करेती सव्व० सोलसमं करेती सव्व० चउत्थं करेति स० छट्ठं करेति सव्व० अट्ठमं करेति सव्व बीयालया ॥ २ ॥ सोलसमं करेति सव्वकामगुण० चउत्थं करेति, सव्वकाम० छट्ठंकरेति, सव्वकामगुण, अट्ठंकरेति, सव्वकाम०, दसमं करेति, सव्वकाम०, दुवालसमं करेति २, सव्वकाम०, चोदसमं

अर्थ

किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, चौदह भक्त कर पारना किया, सोले भक्त कर पारना किया, यह प्रथमलता ॥ १ ॥ दशम भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, सोला भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया, अष्टम भक्त कर पारना किया, यह दूसरीलता ॥ २ ॥ सोलह भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया, अष्टम भक्त कर पारना किया दशम भक्त कर पारना किया

सूत्र

करेति २, सव्वकामगु० तइयालया ॥ ३ ॥ अट्ठमं करेइ २, सव्वकाम०, दशकर २ सव्वकागु० दुवालससमं करेइ २, सव्वकाम०, चोदसमं करेइ २, सव्वकामं०, सोल-समं करेइ २, सव्वकाम०, चउत्थं करेइ २, सवकामगु० छट्ठ करेइ २ त्ता, सव्वकाम गुणं पारेइ २ त्ता, चउत्थीलया ॥ ४ ॥ चउदसमं करेइ २, सव्वकाय०, सोलसमं करेइ २, सव्वकाम०, चउत्थं करेति २, सव्वकाम०, छट्ठंकरेति, सव्वकाम० अट्ठमं करेइ २, सव्वकामगुणं०, दसमंकरेति, सव्वकाम०, दुवालससमं २, सव्वकाम०, पंचमलया ॥५॥ छट्ठं करेइं२, सव्वकाम०, अट्ठमं करेइ २, सव्वकाम, दसमं करेइ,

अर्थ

द्वादश भक्त कर पारना किया, चौदह भक्त कर पारना किया, तीसरीलता ॥ ३ ॥ अष्टम भक्त कर पारना किया, दशम भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, चौदह भक्त कर पारना किया, सोला भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, छठ भक्त कर पारना किया, चौथीलता ॥ ४ ॥ चउदा भक्त कर पारना किया, सोला भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, छठ भक्तकरपारना किया, अष्टम भक्तकर पारना किया, दशम भक्त कर पारना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया पांचवीलता ॥५॥ छठ भक्त कर पारना किया, अष्टम भक्तकर पारना किया, दशम भक्तकर पारना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सव्वकाम०, दुवालसमं क० सव्वकाम०, चोदसमं क० सव्यकाम०, सोलमं करेइ २ सव्वकाम०, चउत्थं सव्वकाम० करेइ, छट्ठीलया॥ ६॥ दुवालसमं करेइ, सव्वकाम० चोदसमं करेइ २, सव्वकाम०, सोलमं करेइ, सव्वकामगुण०, चउत्थं करेइ, सव्वकाम० छट्ठं करेइ २, सव्वकामगु०, अट्ठमं करेइ, सव्वकाम० दसमं करेइ० सव्वकाम०, सत्तमलया ॥ ७ ॥ एक्कालो अट्ठ २ मासा, पंचदिवसा, चउण्हं दोवासा अट्ठमासा, विसदिवसा, सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ ७ ॥ × एवं रामकण्हावी, णवरं—भदुत्तर पडिमं उवसंपाजित्ताणं विहरति, तंजहा—दुवालसमं

अर्थ

किया, द्वादशम भक्त कर पारना किया, सोलेह भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, यह छटीलता ॥ ६ ॥ द्वादश भक्तकर पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, सोलह भक्त कर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, अठ्ठम भक्त कर पारना किया, दशम भक्तकर पारना किया, सातवी लता ॥७॥ इस में एकेक परिपाडी में आठ २ महीने पांच२ दिन लगते हैं, चारों में दो वर्ष आठ महीने बीस दिन, लगते हैं शेष सब अधिकार तैसे ही जानना यावत् सिद्ध हुई ॥ ८ ॥ सातवा अध्ययन समाप्त ॥ ८ ॥ ७ ॥ ऐसे ही रामकृष्णा रानी का अधिकार जानना. दीक्षा ले विचित्र प्रकार के तप करने लगी, विशेष—भद्रोत्तर प्रतिमा अंगीकार कर विचरने लगी, तद्यथा—द्वादश

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

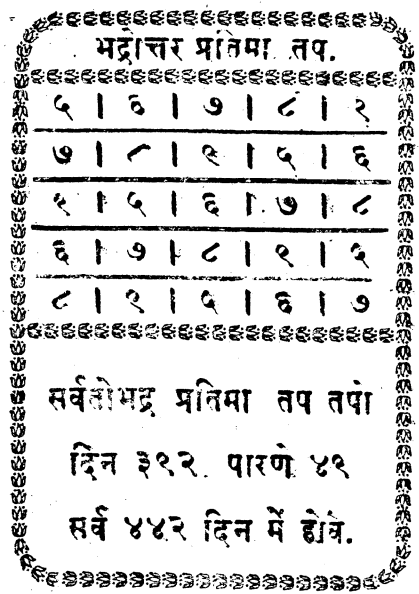

मूल

भद्रोत्तर प्रतिमा तप.

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

सर्वतोभद्र प्रतिमा तप तपा दिन ३९२ पारणे ४९ सर्व ४४२ दिन में होवे.

करेइ २ त्ता, सव्व काम गुणं पारेति, चउद्दसमं करेति सव्व काम गुण० सोलोस्समं करेइ, सव्व काम० अट्ठारसमं करेइ, सव्व काम०, वीसइमं करेइ सव्व काम० पढमालया ॥ १ ॥ सोलस्समं करेइ, सव्व काम०, अट्ठारसमं करेइ, सव्व काम०, वीसइमं करेइ, सव्व काम० दुवालसमं करेइ, सव्व काम०, चौदसमं करेइ, सव्व काम० वीयालया ॥ २ ॥ वीसमं करेइ, सव्व काम० दुवालसमं करेइ, सव्व०, चौदसमं करेइ सव्व कागुमण, सोलसमं करेइ, सव्व काम० अट्ठारसमं०

अर्थ

भक्तकर सर्व सो पभोमक पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, अठारा भक्त कर पारना किया, वीसभक्तकर पारना किया, यह प्रथम लता ॥ १ ॥ सोलह भक्तकर पारना किया, अठारा भक्तकर पारना किया, वीस भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, दूसरा लता ॥ २ ॥ वीसभक्तकर पारनाकिया द्वादश भक्तकर पारनाकिथा, चौदह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कामं० तीयालया ॥ ३ ॥ चौदसमं करेइ, सव्व का०, सोलसमं करेइ, सव्व कामं०, अट्ठारसमं करेइ, सव्वका० वीसमं करेइ, सव्व कामं० दुवालसमं करेइ० सव्व कामं० चउत्थी लया ॥ ४ ॥ अट्ठारसमं करेइ, सव्व कामगु०, वीसमं करेइ, सव्व कामं० दुवालसमं करेइ, सव्व कामं० चोदसमं करेइ, सव्व काम गु० सोलसमं करेइ, सव्व कामं०, पंचमलया ॥ ५ ॥ एक्कालो छमासा वीसय दिवसा ॥ चउण्हं कालो दो वरिसा दोमासा वीसय दिवसा ॥ सेसं तहेव जाव जहा काली, जाव सिद्धा ॥ ६ ॥ अट्ठमं अज्झयणं ॥ ८ ॥ ८ ॥ एवं पियसेणाकण्हावि, णवरं मुत्तावली

अर्थ

पारना किया, सोलह भक्त कर पारना किया, अठारह भक्त कर पारना किया, तीसरीलता ॥ ३ ॥ चौदा भक्त कर पारना किया, सोला भक्त कर पारना किया, अठारा भक्त कर पारना किया, बीस भक्त करना किया, द्वादश भक्त कर पारना किया, चौथीलता ॥ ४ ॥ अठारा भक्त कर पारना किया, बीस भक्त कर पारना किया, बारा भक्त कर पारना किया, चौदह भक्त कर पारना किया, सोलह भक्त कर पारना किया, पांचवीलता ॥५॥ इसमें की एक परिवाडी को छ महीने वीसदिन लगते हैं, चारों परिवाडीका काल दोवर्ष दोमहीने बीस दिन होताहै॥शेष तैसेही जानना.जैसा काली रानीका कहा यावत् सिद्ध हुइ ॥ आठवा अध्ययन ॥८॥८॥ ऐसे ही प्रियसेन कृष्णारानीका भी, विशेष में—मुक्तावली तपकर्म किया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

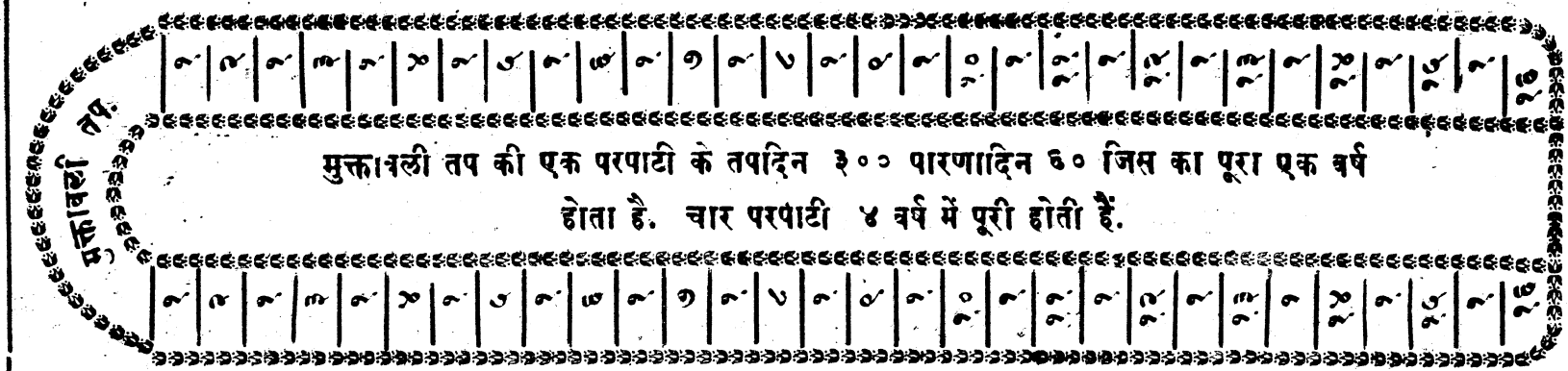

मुक्तावली तप.

१	२	१	३	१	४	१	५	१	६	१	७	१	८	१	९	१	१०	१	११	१	१२	१	१३	१	१४	१	१५	१	१६

मुक्तावली तप की एक परपाटी के तपदिन ३०० पारणादिन ६० जिस का पूरा एक वर्ष होता है. चार परपाटी ४ वर्ष में पूरी होती हैं.

१	२	१	३	१	४	१	५	१	६	१	७	१	८	१	९	१	१०	१	११	१	१२	१	१३	१	१४	१	१५	१	१६

तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा—चउत्थं करेइ २ त्ता, सव्वकामगुणं परित्ता, छट्ठं करेत्ता, सव्व काम०, चउत्थं करेता०, सव्वकाम० अट्ठमं क० सव्वकाम गु०चउत्थं करेत्ता, सव्व काम० दसमं करेत्ता, सव्व काम० चउत्थं० सव्व० दुवालसमं करेइ, सव्वकाम०, चउत्थं करेइ सव्वकाम० चोदसमं करेइ, सव्व

अंगीकार करने विचरने लगी, तद्यथा-चौथ भक्त कर सर्व रसो भोग कर पारना किया, छठ भक्तकर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, अठम भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकरना किया, दशम भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, द्वादश भक्तकर पारना किया, चौथ भक्त पारना किया, चौदह भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर पारना किया, सोळा भक्तकर पारना किया, चौथ भक्तकर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

काम गु॰ चउत्थं करेइ, सव्वका॰ सोलसमं करेइ, सव्वकाम गुण॰ चउत्थं करेइ, सव्वकाम॰, अट्ठारसम, सव्वकाम॰, वीसइमं करेइ, सव्वकाम, चउत्थं॰, सव्वकाम॰, बावीसमंकरे॰, सव्वकाम॰ चउत्थंकरे॰, सव्व॰ चउवीसमंकरे॰, सव्व॰, चउत्थंकरे, सव्व॰, छवीसमंकरे॰, सव्व काम, चउत्थंकरे॰, सव्वका॰, तीसमंक॰, चउत्थंकरे॰, सव्व॰, बत्तीसमंकरे॰, सव्वका; चउत्थकरे॰ सव्वका॰ चोतीसमंकरे, सव्व॰ चउत्थंकरे॰ सव्व॰ चोतीसमंकरे॰, सव्व॰ चउत्थकरे॰ सव्वं॰ बतीसमंकरे॰, सव्वका॰ चउत्थंकरे॰, सव्व का॰ एवं तहेव उसारती २ जाव चउत्थ, करेति २ त्ता, सव्व कामगुण पारेति॥ १॥ एकस परिवाडिए कालो

अर्थ

पारना किया, अठारा भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, बीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, बावीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, चौवीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, अट्ठावीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, तीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, बत्तीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, चौंतीस भक्त कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया॥ इस प्रकार सोलह उपवास कर बीच २ में एकेक उपवास कर चढे, फिर बत्तीस भक्त (सोला) उपवास कर पारना किया, चौथ भक्त कर पारना किया, तीस भक्त कर पारना किया यों पीछे उतरे यावत् चौथ भक्तकर सर्व प्रकारके रसोपभोग कर पारना किया॥ १॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

एक्कारसमासा पनरस्स दिवसा; चउण्हं कालो तिण्हय वासा दसमासा सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ २ ॥ नवमं अज्झयण सम्मत्तं, ॥ ८ ॥ ९ ॥ एवं महा सेण कण्हावि णवरं—आयंविलं वद्धमाण तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहराति, तंजहा-आयं विलयं कंरति २ त्ता, चउत्थंकरोति, बेआयंविलयं करेत्ता, चउत्थ करेत्ता, तिणि आयं बिलियंकरेत्ता, चउत्थं करेत्ता, चत्तारि आयंबिलयं करेत्ता, चउत्थं करेत्ता, पंच आयंबिलियं करेत्ता, चउत्थं करेत्ता, छ आयंबिलियं करेत्ता, चउत्थं करेत्ता, सत्त आयंबिलियं करेत्ता, चउत्थं करेत्ता, एए उत्तरियाएवठाए आयंविलायं वद्धति, चउत्थं तिवारइं,

अर्थ

ऐसे ही चारों परवाडी जानना. प्रथम में सर्व प्रकार आहार, दूसरी के पारने में विगय त्याग, तीसरी के पारने में लेप मात्र का त्याग और चौथी के पारने में आयंबिल तप किया ॥ २ ॥ इस की एक परिवाडी में इग्यारे महीने पन्नरह दिन लगते हैं, और चारों परिवाडी में तीन वर्ष और दश महीने लगते हैं, शेष अधिकार पूर्वोक्त प्रकार जानना यावत् सिद्ध हुई ॥ इति अष्टम वर्ग का नवमं अध्ययत संपूर्ण ॥ ८ ॥ ९ ॥ ऐसे ही महासेनकृष्णा राणी का भी जानना. यावत् दीक्षा धारनकर आयंबिल वृद्धमान तप करती विचरने लगी—तद्यथा—एक आयंबिल कर एक उपवास किया, दो आयंबिल कर एक उपवास किया, तीन आयंबिल कर एक उपवास किया, चार आयंबिल कर एक उपवास किया, पांच आयंबिल कर एक

सूत्र

जाव आयंबिलंसयं करेति २ त्ता, चउत्थं करेति २ त्ता ॥ १ ॥ तएणं सा महाकण्हा अज्जा, आयंलिबं वद्धमाणं तवोकम्मं चउदस्स वासेहिं, तिहिय मासहिय वीसइं अहोरतेहिं अहासुत्तं जाव समंकाएणं फासेति जाव आराहेति २ त्ता, जेणेव अज्जा चंदणा अज्जा तेणेव उवागया २, वंदए नमंसइ त्ता बहुहिं चउत्थेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरंति ॥ २ ॥ तत्तेणं सा महासेणकण्हा अज्जा, तेणं उरालिणं जाव उवसोभेमाणे विहरंति ॥ ३ ॥ तत्तेणं सा महासेण कण्हाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्ता वरत्त काल समयंसि चिंता, जयणं जहा खंदयस्स जाव चंदणा

अर्थ

उपवास किया, छ आयंबिल कर एक उपवास किया, यों एकेक आयंबिल की वृद्धी करती मध्य २ में एकेक उपवास करती यावत् सो अयाबिल कर एक उपवास किया ॥ १ ॥ तब महाकृष्ण आर्जिकाने आयंबिल वृद्धमान तप चौदह वर्ष तीन महीने और बीस अहोरात्रि में पूर्ण किया, उसे यथोक्त सूत्र विधि प्रमाणे. आराधा, आराधकर जहां चन्दबाला आर्जिका थी तहां आई, आकर वंदना नमस्कारकी नमस्कार कर बहुत छठ अठमादितप कर अपनी आत्माको भावती हुइ विचरने लगी ॥२॥ तब महाकृष्ण आर्जिका उस औदार प्रधान तप कर अतिही२शोभती हुइ विचरने लगी ॥३॥ तब वह महाकृष्ण आर्जिका अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे जिस प्रकार खंधजीने विचार किया वैसा यावत चंदनबालाजी को पूछकर यावत् संलेषना कर काल की वांच्छा नहीं करती हुइ विचरने लगी ॥३॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुत्र

अज्जं आपुच्छइ २ त्ता जाव संलेहणा जाव कालं अणवकंक्खमाणा विहरति २ ॥ तत्तेणं सा महासेण कण्हा अज्जा चंदणाते अज्जा अंतीते सामाइमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिजित्ता बहुपडिपुण्णाति सत्तरस्स वासाइं परिया पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं ज्झूसिया सट्ठिभत्ताइं अणसणा छेदित्ता जस्स मुंड किरति जाव तमट्ठं आराहेति, चरमेहि उस्ससणिसासेहि सिद्धाहिं बुद्धाहिं ॥ इति दसमं अज्झणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ १० ॥ गाथा ॥ अट्ठय वासा आदिए उत्तारियाए जाव सत्तरस्स ॥ एसो खलु परियातो, सेणय भज्जाण णायव्वो ॥ १ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं

अर्थ

तब महा कृष्ण आर्जिका चंदनबालाजी के पास सामायिकादि इग्यारे अंग पढी थी उसे याद करती हुई बहुत प्रतिपूर्ण सत्तर वर्ष संयम पालकर, एक महीने की सलेषना कर आत्मा को झोंस साठ भक्त अनशन छेद कर जिस के लिये उठी थी वह कार्य किया यावत् अन्तिम श्वासोश्वास बाद सिद्ध हुई बुद्ध हुई यावत् सब दुःख का अन्तक्रिया ॥ इति अष्टम वर्ग का दशम अध्ययन ॥ संपूर्ण ॥ ८ ॥ १० ॥ गाथार्थ—प्रथम काली आर्जिकाने आठ वर्ष संयमपाला, दूसरी सुकालीने९वर्ष, तीसरीने१०वर्ष यों एकेक वर्ष बडाते दसवीने सत्तर वर्ष संयम पाला. इस प्रकार निश्चय श्रेणिक राजा की राणीयों का संयम का काल जानना ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भगवया महावीरेणं आदि करेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ अंतगड दसाणं अंगस्स एगो सुय खंधो अट्ठवगा, अट्ठमेचेव, दिवसेसु उद्देसंति ॥ अट्ठमं अंगसमत्तं ॥ इति अंतगड दसांग सूत्रं सम्मत्तं ॥ ८ ॥

अर्थ

यों निश्चय श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी धर्म की आदि के करता यावत् मुक्ति प्राप्त की उनोंने अष्टमांग अंतकृत दशांग सूत्र का यह अर्थ कहा ॥ ॥ इस अंतकृत दशांग का एक श्रुतस्कन्ध, आठ वर्ग निश्चय आठ दिन में उद्देशना ॥ इति अष्टमांग अंतकृत दशांग सूत्र समाप्त ॥ + +

॥ इति अष्टमांग ॥

अंतकृत दशांग सूत्र समाप्तम्

विराब्द २४५४ वैशाक शुक्ल ५ बुद्धवार.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org